मूल्य : 25 रुपये
जनवरी - मार्च, 2023

वर्ष : 11, अंक : 47

नर्मदा समग्र

नदी के घर से नदी की बात ...

NEER Foundation announces the RAJAT KI BOONDEN National Water Awards 2023

Water Journalism

Shri Hridayesh Joshi
Independent writer and journalist

The RAJAT KI BOONDEN National Water Award - 2023 will be given to Shri Hridayesh Joshi, author and independent journalist for water journalism and to Shri Kartik Sapre, CEO of NARMADA SAMAGRA for water conservation. Many Many congratulations to both the winners from NEER Foundation.

NEER FOUNDATION

Water Conservation

Shri Kartik Sapre
CEO - NARMADA SAMAGRA

Declared in March 2023 Award Ceremoney will be held on 15 April 2023

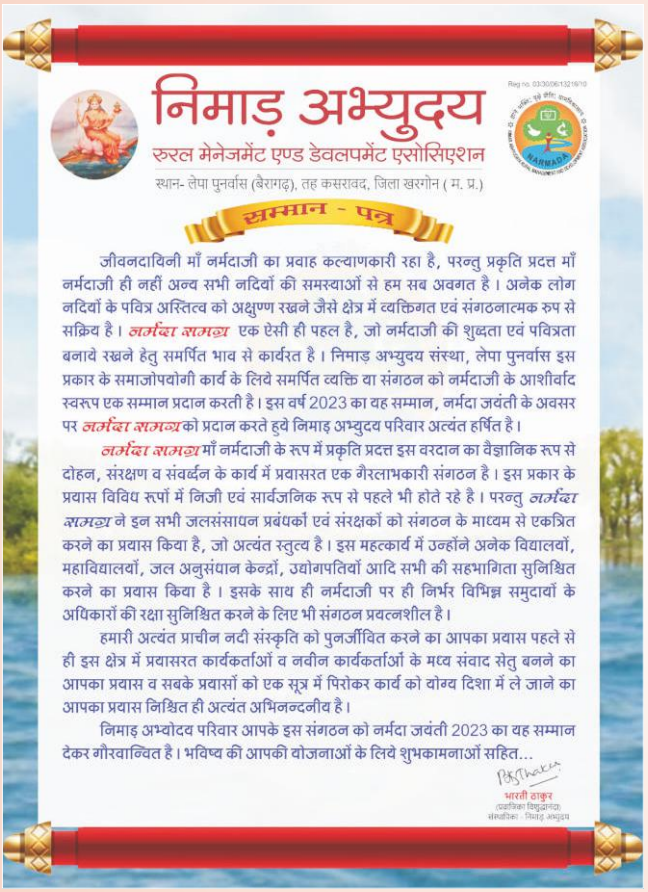

Reg no. 03/30/06/13216/10

निमाड़ अभ्युदय

रुरल मेनेजमेंट एण्ड डेवलपमेंट एसोसिएशन

स्थान- लेपा पुनर्वास (बैरागढ़), तह कसरावद, जिला खरगोन (म. प्र.)

सम्मान - पत्र

जीवनदायिनी माँ नर्मदाजी का प्रवाह कल्याणकारी रहा है, परन्तु प्रकृति प्रदत्त माँ नर्मदाजी ही नहीं अन्य सभी नदियों की समस्याओं से हम सब अवगत है। अनेक लोग नदियों के पवित्र अस्तित्व को अक्षुण्ण रखने जैसे क्षेत्र में व्यक्तिगत एवं संगठनात्मक रुप से सक्रिय है। *नर्मदा समग्र* एक ऐसी ही पहल है, जो नर्मदाजी की शुद्धता एवं पवित्रता बनाये रखने हेतु समर्पित भाव से कार्यरत है। निमाड़ अभ्युदय संस्था, लेपा पुनर्वास इस प्रकार के समाजोपयोगी कार्य के लिये समर्पित व्यक्ति या संगठन को नर्मदाजी के आशीर्वाद स्वरूप एक सम्मान प्रदान करती है। इस वर्ष 2023 का यह सम्मान, नर्मदा जयंती के अवसर पर *नर्मदा समग्र* को प्रदान करते हुये निमाड़ अभ्युदय परिवार अत्यंत हर्षित है।

नर्मदा समग्र माँ नर्मदाजी के रूप में प्रकृति प्रदत्त इस वरदान का वैज्ञानिक रूप से दोहन, संरक्षण व संवर्द्धन के कार्य में प्रयासरत एक गैरलाभकारी संगठन है। इस प्रकार के प्रयास विविध रूपों में निजी एवं सार्वजनिक रूप से पहले भी होते रहे है। परन्तु *नर्मदा समग्र* ने इन सभी जलसंसाधन प्रबंधकों एवं संरक्षकों को संगठन के माध्यम से एकत्रित करने का प्रयास किया है, जो अत्यंत स्तुत्य है। इस महत्कार्य में उन्होंने अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों, जल अनुसंधान केन्द्रों, उद्योगपतियों आदि सभी की सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही नर्मदाजी पर ही निर्भर विभिन्न समुदायों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने के लिए भी संगठन प्रयत्नशील है।

हमारी अत्यंत प्राचीन नदी संस्कृति को पुनर्जीवित करने का आपका प्रयास पहले से ही इस क्षेत्र में प्रयासरत कार्यकर्ताओं व नवीन कार्यकर्ताओं के मध्य संवाद सेतु बनने का आपका प्रयास व सबके प्रयासों को एक सूत्र में पिरोकर कार्य को योग्य दिशा में ले जाने का आपका प्रयास निश्चित ही अत्यंत अभिनन्दनीय है।

निमाड़ अभ्योदय परिवार आपके इस संगठन को नर्मदा जयंती 2023 का यह सम्मान देकर गौरवान्वित है। भविष्य की आपकी योजनाओं के लिये शुभकामनाओं सहित...

भारती ठाकुर
(प्रव्राजिका विशुद्धानंदा)
संस्थापिका - निमाड़ अभ्युदय

निमाड़ अभ्युदय संस्थान द्वारा माँ नर्मदा जयंती उत्सव 27 जनवरी 2023 के अवसर पर नर्मदा समग्र न्यास को

‘नर्मदा सम्मान’

प्रदान कर सम्मानित किया गया।

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 11

अंक : 47

माह : जनवरी - मार्च 2023

संस्थापक संपादक

स्व. अनिल माधव दवे

संपादक

कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल

डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन

संदीप बागड़े/दीपक सिंह बैस

आवरण

गौतम चक्रवर्ती

मुद्रण

नियो प्रिंटर्स

17-बी-सेक्टर,

औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क

'नदी का घर'

सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

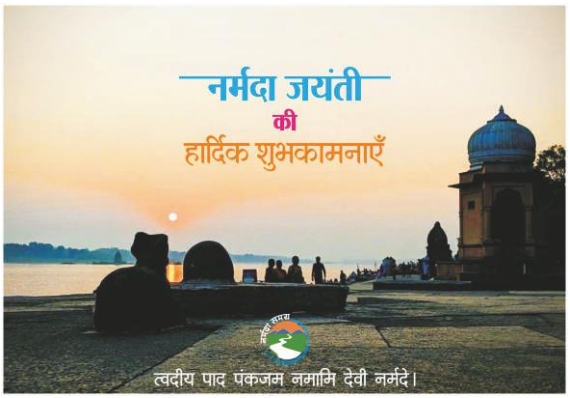

1.	संपादकीय	05
2.	विचार/संदेश	07-10
3.	भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु का संबोधन	11
4.	विरासत	14-15
5.	भारत में जल संरक्षण में महिलाओं की भूमिका	16
6.	चूनर ओढ़े जल-आंदोलन	17
7.	नीर, नारी और नदी का संवर्द्धन हो	19
8.	नदी और नारी दोनों पूजनीय	20
9.	बूँद-बूँद विचार	22-25
10..	नदी एक कविता	26
11.	नदी का संरक्षण और नारी का सम्मान-समाज...	27
12.	नारी शक्ति	28-29
13.	नवांकुर	30
14.	उल्लेखनीय कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्मान से...	32-33
15.	विश्व रेडियो दिवस पर श्री नरेन्द्र सिंह तोमर का संदेश	34
16.	प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए मोदी सरकार...	36
17.	मोटा अनाज यानि मिलेट्स-पर्यावरण और मानव...	40
18.	जल संरक्षण के लिए जनभागीदारी जरूरी	41
19.	यमुना बाढ़ के मैदानों से संबंधित गढ़ी मांडू प्लैन्टैशन...	43
20.	राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता	46
21.	कार्यशालाओं की झलकियाँ	47-48
22.	नई नदी एम्बुलेंस के उद्घाटन की झलकियाँ	49
23.	भारत की नदी संरचनाएं	52
24.	उभयान्वयी नर्मदा	54

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

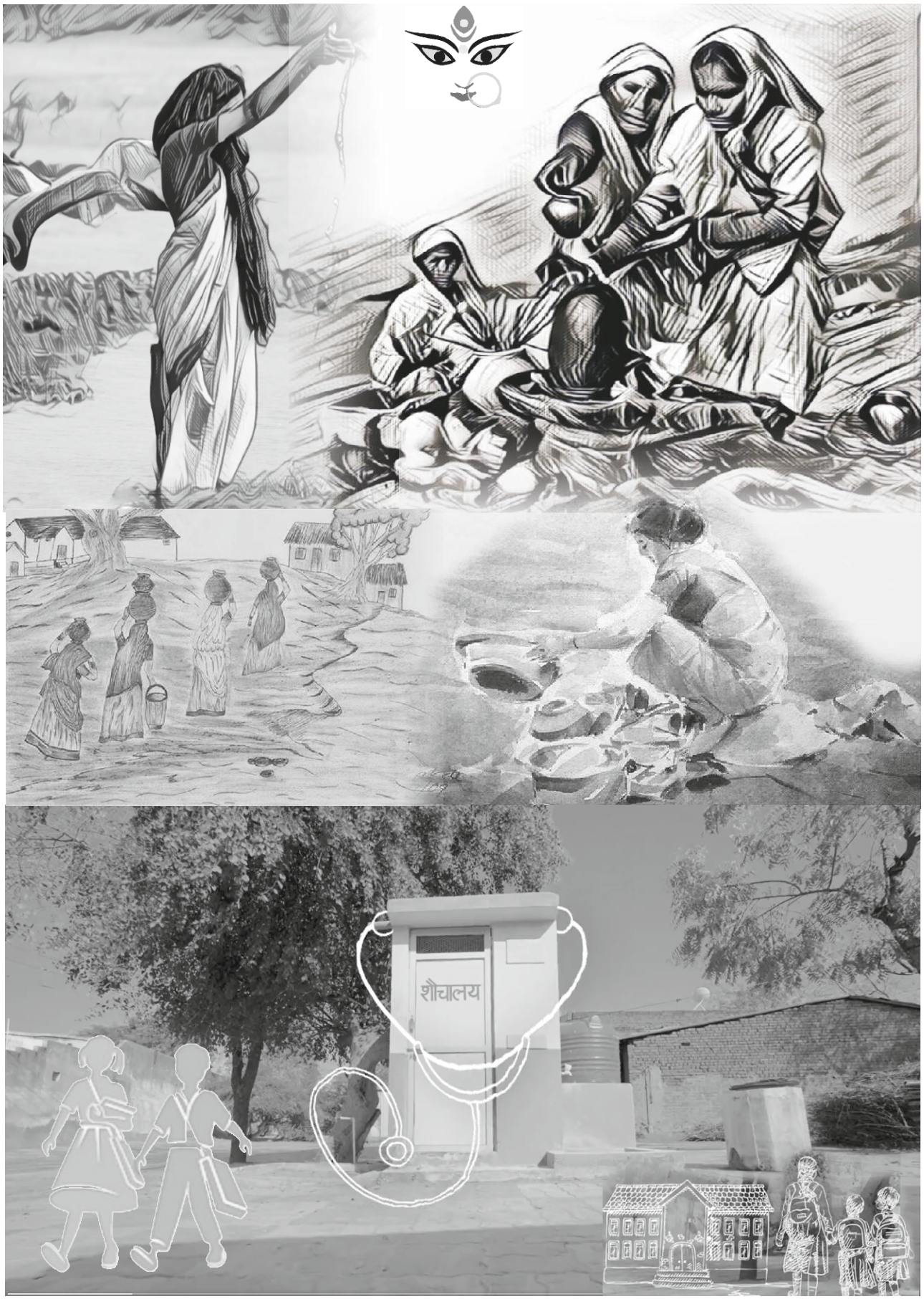
शौचालय

नीर, नदी और नारी

नदी और नारी दोनों ही सृजनकर्ता हैं। हमने नदी और नारी को देवी का रूप माना है। जिस प्रकार नदियां जीवनदायिनी है उसी प्रकार नारी भी जीवनदाता है। नीर का संरक्षण, उसका प्रबंधन एवं संवर्धन कोई नया विषय नहीं, यह सदियों से हमारी संस्कृति और परम्परा का हिस्सा रहा है। जल का भारतीय सभ्यता व भारतीय जीवन दर्शन में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। पंच तत्वों में से एक इस जल की महती भूमिका है, जीवन को और जैव विविधता को बनाए रखने में जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ऐसा कहा जाता है और कुछ वैज्ञानिक अध्ययन भी यह दावा करते है कि जल से संवाद करने पर उसके आण्विक संरचना में परिवर्तन देखा जा सकता है। नीर के स्त्रोतों में नदियाँ भी है, जिनके किनारे सभ्यता का विकास हुआ, जिनसे हम पीने के लिए, खेती के लिए, उद्योगों के लिए एवं अन्य उपयोग हेतु पानी लेते हैं, उन्हें हमारी परम्परा ने एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में देखा है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक व भोगौलिक परिवेश को अपने में समेटे हुए प्रवाहित होती है।

जल इष्ट है, जल से स्वास्थ्य है, जल से नगर व ग्राम व्यवस्था है, जल से उद्योग है, जल से ऊर्जा है, जल से खाद्य है, जल से- मैं हूँ, आप हैं, हम सब हैं। जल सृजन से विसर्जन तक कई रूपों में कई प्रकार से, हमारे प्रयोग-उपयोग में आता है। नदियों में बहने वाला जल हो या भूमिगत जल या ग्लेशर से पिघल कर आने वाला जल या वर्षा जल, किसी भी रूप में देखें जल तो जल है, इसके स्त्रोत अलग हो सकते हैं पर पावनता अक्षुन्न है। प्राकृतिक संसाधनों के, विशेष कर जल के प्रति हमारा भाव क्षीण होता जा रहा है। साथ ही महिलाओं के प्रति बीच के कुछ कालखण्ड में दुर्व्यवहार, असमानता इत्यादि समस्याएं उत्पन्न हुई जो हमारे पारंपरिक/सांस्कृतिक स्वरूप से विपरित रही।

आज आवश्यकता है कि हम अपनी मूल अवधारणाओं को और उसके पीछे के विज्ञान को समझें। विश्व आद्रभूमि दिवस हो या विश्व जल दिवस या विश्व वानिकी दिवस हो, नर्मदा जयंती हो या अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस हो या अन्य कोई दिवस जिसमें हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं, उनके सुरक्षा, संरक्षण संवर्धन की बातें करते हैं, गतिविधियाँ करते हैं। यह दिवस विशेष संकेत के रूप में हैं, परंतु यह कार्य निरंतर एवं प्रतिदिन करने का है।

इतिहास में झांक कर देखेंगे तो हमें मिलेगा की हमारे पूर्वजों ने नीर संरक्षण, संवर्धन और प्रबंधन के लिए बेजोड़ प्रयास किए हैं जो आज भी हमें सीख दे रहे है, अनुसरणीय है। उनकी तकनीकों, तरीकों और योजना को समझना और वर्तमान परिस्थितियों के साथ समावेश करने से अनूठे परिणाम मिल सकते हैं और ऐसी योजनाओं उनके क्रियान्वयन और प्रबंधन में कई महिलाओं के प्रेरक उदाहरण/प्रसंग भी मिलेंगे। केवल जल ही नहीं परन्तु कृषि एवं सम्बद्ध सेवाओं और प्रबंधन में बहुत ध्यान से देखेंगे तो महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका नजर आएगी।

विश्वभर में यह हमारे ध्यान में आता है कि जल संग्रह की प्राथमिक जिम्मेदारी महिलाओं की रही है। संयुक्त राष्ट्र - जल के 2021 की एक रिपोर्ट अनुसार 50 से कम देशों में ऐसे कानून या नीतियां हैं जो विशेष रूप से ग्रामीण स्वच्छता या जल संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी का उल्लेख करती हैं। वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ की 2017 के एक प्रतिवेदन अनुसार बाहर से पानी लाने के लिए 10 में से 8 घरों में महिलाएं और लड़कियां जिम्मेदार हैं। इन्हीं संगठनों की 2019 की एक और रिपोर्ट अनुसार 20.7 करोड़ लोग एक अच्छे स्रोत से जल इकट्ठा करने के लिए प्रति चक्कर 30 मिनट से अधिक समय खर्च करते हैं।

वाटर नामक गैर-सरकारी संगठन के सनुसार आज, दुनिया भर की महिलाएं सामूहिक रूप से 20 करोड़ घंटे पानी इकट्ठा करने में खर्च करेंगी। पानी एकत्र करने में लगने वाले समय के अलावा, लाखों लोग शौच जाने के लिए जगह खोजने में भी महत्वपूर्ण समय व्यतीत कर देते हैं। इससे हर दिन अतिरिक्त 26.6 करोड़ घंटे बर्बाद हो जाते हैं क्योंकि उनके पास शौचालय नहीं है। इसी संस्था के अनुसार भारत की 130 करोड़ लोगों की आबादी में से, 9.1 करोड़ लोगों (जनसंख्या का 6%) के पास साफ पानी की सुविधा नहीं है, और 74.6 करोड़ लोगों (54%) के पास सुरक्षित रूप से प्रबंधित घरेलू स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच नहीं है। वर्तमान चुनौतियों में अत्यधिक जल तनाव, दूषित सतही जल और पाइप जलापूर्ति तक पहुंच की कमी शामिल है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जैसे सूखा और समुद्र का बढ़ता स्तर भी भारत में परिवारों के लिए सुरक्षित पानी और स्वच्छता तक पहुंच को प्रभावित करता है। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए, सुरक्षित पानी एवं स्वच्छता तक पहुंच बढ़ाने के लिए 2024 तक हर घर में नल का जल कनेक्शन प्रदान करने के लिए भारत सरकार की वर्तमान पहल से अभूतपूर्व प्रयास है।

सतत विकास लक्ष्यों में भी अधिकतर लक्ष्यों में महिलाओं की भूमिका की बात कही गई है। विशेष कर अगर हम लक्ष्य 5 और 6 की बात करें तो इनके केंद्र में महिलाएँ और लड़कियाँ हैं। चाहें लैंगिक समानता का विषय हो या पानी और सफाई का, शिक्षा का हो या आजीविका का, सम्मान का या अधिकारों का, हर विषय में नारी की महती भूमिका है। महिलाओं, साफ पानी और स्वच्छता के बिना सतत विकास के लिए 2030 तक निर्धारित एजेंडा की पूर्ति करना संभव नहीं है।

भारत सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के शुभारंभ से अब तक 8,44,90,344 (52.16%) परिवारों को नल जल कनेक्शन उपलब्ध

कराया जा चुका है। पीआईबी द्वारा प्रेषित खबर अनुसार बच्चों के स्वास्थ्य और भलाई पर ध्यान देने के साथ-साथ सभी ग्रामीण स्कूलों, आंगनवाड़ी केंद्रों और आश्रम शालाओं (जनजातीय आवासीय विद्यालयों) में पीने, मध्याह्न भोजन पकाने, हाथ धोने और शौचालयों में उपयोग के लिए जल कनेक्शन प्रदान करने के बारे में विशेष प्रयास किए गए हैं। अब तक, 9.03 लाख (88.26 प्रतिशत) स्कूलों और 9.36 लाख (83.71 प्रतिशत) आंगनवाड़ी केंद्रों में नल से पानी की आपूर्ति उपलब्ध कराई जा चुकी है। जल जीवन मिशन कई तरह से समाज को प्रभावित कर रहा है। नियमित रूप से नल के पानी की आपूर्ति से महिलाओं और युवा लड़कियों को अपनी दैनिक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़ी मात्रा में पानी ढोने की मेहनत से राहत मिल रही है। दूसरी तरफ, महिलाएं पानी इकट्ठा करने से बचाए गए समय का उपयोग आय सृजन गतिविधियों के लिए, नए कौशल सीखने और अपने बच्चों की शिक्षा में सहायता के लिए कर सकती हैं। पानी इकट्ठा करने में अपनी मां की मदद करने के लिए किशोरियों को अब स्कूल नहीं छोड़ना पड़ेगा।नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. माइकल क्रेमर और उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि अगर परिवारों को पीने के लिए सुरक्षित पानी उपलब्ध कराया जाए तो लगभग 30 प्रतिशत शिशुओं की मृत्यु को रोका जा सकता है। खासकर नवजात बच्चों में डायरिया एक बहुत ही आम बीमारी है। नवजात शिशु पानी से होने वाली बीमारियों के प्रति कई अधिक संवेदनशील होते हैं। इस अध्ययन से यह भी पता चला है कि प्रत्येक चार मौतों में से एक (1.36 लाख प्रति वर्ष पांच मौतों के तहत) 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से संबंधित है जिसे भारत में सुरक्षित पानी के प्रावधान से रोका जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक समानता को लेकर काफ़ी चर्चाएँ और कार्यक्रम हो रहे हैं, जिसमें महिलाओं, बालिकाओं एवं बच्चों को लेकर काफी ध्यान दिया जा रहा है। हमारे देश में महिलाओं का विशेष सम्मान एवं स्थान रहा है और हमने नदी और नारी को देवी का रूप माना है। भारत में महिलाएँ हर क्षेत्र में और हर स्तर पर अपनी भूमिका निभा रही है और प्रगति करती दिख रही हैं।

देश में विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण एवं नारी को अधिक जागरूक, सुरक्षित एवं सक्षम करने के प्रयास जारी हैं, जिनमें से एक है स्वच्छ भारत अभियान जिससे न केवल स्वच्छता का कार्य हुआ है अपितु महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान भी हुआ है। जैसे विश्व स्तर पर नारी सम्मान को लेकर प्रयास किए जा रहे हैं उसी प्रकार नीर को लेकर और नदियों को लेकर भी हमें एकजुट होकर हर संभव प्रयास करने होंगे।

इस 'नीर, नदी और नारी' के विशेष अंक में हमने प्रयास किया है हर स्तर पर एवं विभिन्न क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं के और अन्य लोगों के अनुभव/विचार संकलित कर प्रेषित करने का जिससे समाज के बीच इस विषय का मर्म पहुँचे, भाव उत्पन्न हो और एक दिशा मिले। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री जी का देश व प्रदेश की नदियों को लेकर सभी आमजन जागरूक हों और हर स्तर पर संरक्षण-संवर्धन के प्रयासों हेतु संदेश प्रोत्साहित करता है। हमारे देश के माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा 'नारी नेतृत्व में विकास' का मंत्र दिया है, उनके विचारों से हम सभी प्रेरित हो अमृतकाल में नीर व नदी के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन के लिए सदैव तत्पर रहेंगे और नारी के सम्मान एवं उनके उत्थान के लिए हर संभव प्रयास करेंगे, जिससे देश के विकास में हर व्यक्ति का योगदान हो और संसाधनों से युक्त, समृद्ध हमारा देश एक विश्व शक्ति के रूप में पुनः स्थापित हो सके इस हेतु हम संकल्प करेंगे। □□

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

त्रैमासिक पत्रिका 'नर्मदा समग्र' के 'नीर, नदी एवं नारी' विषय पर केन्द्रित विषय पर आधारित अंक के प्रकाशन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। पत्रिका द्वारा इतने महत्वपूर्ण विषय का चयन सराहनीय है।

नर्मदा नदी के साथ मेरा एक विशेष लगाव रहा है। नर्मदा को प्रदूषण मुक्त बनाने व पारिस्थितिकीय संतुलन को बेहतर करने के लिए नर्मदा समग्र संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयास उल्लेखनीय हैं। यह हर्ष का विषय है कि जबलपुर से संस्था के 'रेडियो रेवा' सामुदायिक रेडियो के प्रसारण का आरंभ लोगों को जागरुक करने में अहम् भूमिका निभाएगा।

हमारे वेदों में कहा गया है- 'अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्' अर्थात् नीर के भीतर अमृत है, औषधि है। हमारे देश की सदानीरा जीवनदायिनी नदियां हमारी संस्कृति व समृद्धि का आधार रही हैं। प्रकृति की प्राणधारा के रूप में बहती नदियों के किनारे मानव सभ्यता पुष्पित-पल्लवित हुई है।

भारत के गौरवशाली इतिहास में नारियों का विशिष्ट स्थान है। हमारी आस्था से लेकर ज्ञान और कला से लेकर पराक्रम तक, हर क्षेत्र में नारी शक्ति ने जनमानस को प्रेरित किया है। आज हमारा देश 'नारी नेतृत्व में विकास' के मंत्र के साथ आगे बढ़ रहा है।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान जन भागीदारी और जन जागरुकता के द्वारा देश भर में नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए ठोस व भविष्योन्मुख प्रयास किए गए हैं जिनका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देते हुए आज हम अपने जल स्रोतों को निरंतर मजबूत कर रहे हैं। जल संरक्षण के लिए पारंपरिक उपायों को अपनाते हुए देश भर में अमृत सरोवरों का निर्माण हमारी इस प्रतिबद्धता को नया आयाम देता है।

अमृत काल में सामूहिकता की शक्ति से ऊर्जित हमारे प्रयासों से जहां नीर और नदी की निर्मलता व अविरलता सुनिश्चित हो रही है, वहीं नारी शिक्षित, समर्थ और सशक्त बन रही है। इस कर्तव्य काल में राष्ट्र को प्रगति की नई ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए अपने प्रयासों को देश की प्रगति से जोड़कर हम एक भव्य व विकसित भारत के निर्माण में भागीदार बनेंगे।

मुझे विश्वास है कि नीर, नदी और नारी विषय पर आधारित 'नर्मदा समग्र' का यह अंक पाठकों को इन विषयों के विभिन्न पहलुओं को समझने और देश व समाज के लिए कार्य करने को प्रेरित करेगा।

'नर्मदा समग्र' के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों व पाठकों को बधाई व भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
चैत्र 03, शक संवत् 1945
24 मार्च, 2023

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

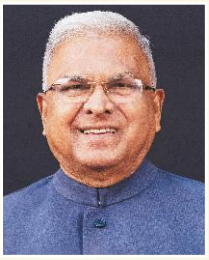

सत्यमेव जयते

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

क्रमांक 140/राजभवन/2023
भोपाल, दिनांक- 10 अप्रैल, 2023

संदेश

हर्ष का विषय है कि नर्मदा समग्र न्यास, भोपाल द्वारा नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका के नीर, नदी एवं नारी विषय पर केन्द्रित अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

नारी सदैव नदी के समान निर्मल और पूजनीय है। नदी का निर्मल जल सदा निर्मल रहता है, उसी प्रकार ईश्वर ने नारी को स्वभावतः निर्मल अन्तःकरण प्रदान किया है। नारी में सहृदयता, दयालुता, उदारता, सेवा, परमार्थ एवं पवित्रता की भावना प्रबल होती है। भारतीय संस्कृति की मान्यता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

आशा है, पत्रिका में नीर, नदी एवं नारी पर केन्द्रित आलेखों का प्रकाशन महिलाओं में अपनी शक्ति को पहचानने और समाज में नारी के आत्मविश्वास को जगाने में सफल होगा।

शुभकामनाएं,

मंगुभाई पटेल

(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक:- 02-04-2023
पत्र क्रमांक - 102/23

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि नर्मदा समग्र न्यास म.प्र. भोपाल द्वारा "नीर,नदी एवं नारी" विषय पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका 'नर्मदा समग्र" का अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

नदियां भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार हैं। नर्मदा जी मध्यप्रदेश की जीवन रेखा हैं। नर्मदा जी सहित समस्त नदियों पर एकाग्र कार्य करने के लिए स्व.अमृतलाल वेगड़ एवं स्व. अनिल माधव दवे द्वारा स्थापित सुप्रतिष्ठित संस्था "नर्मदा समग्र" पर्यावरण एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही है।

आज यह आवश्यक है कि देश और प्रदेश के नागरिक और संगठन नर्मदा समग्र संस्था के नदियों को जोड़ने के महाअभियान में सक्रियता से भागीदारी निभाएं।

आशा है कि पत्रिका -नर्मदा समग्र का अगला यह अंक नदियों के संरक्षण, नारी सम्मान और पर्यावरण संरक्षण के लिए आमजन में जागरूकता उत्पन्न करने का माध्यम सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

(शिवराज सिंह चौहान)

6, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462 002

उषा बाबू सिंह ठाकुर
मंत्री
संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास और धर्मस्व
मध्यप्रदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव

निवास : बी-20, चार इमली, भोपाल, पिन-462016
दूरभाष क्रं. : 0755-2551976, 2777723
E-mail : minister.tcamp@gmail.com

पत्र क्रमांक : 523 /मंत्री/सं./प./ध./2023
भोपाल, दिनांक 16/03/2023

संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि नर्मदा समग्र न्यास म.प्र. भोपाल द्वारा ''नर्मदा समग्र'' का अगला अंक **''नीर,नदी एवं नारी''** विषय पर त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। नर्मदा समग्र न्यास म.प्र. भोपाल एक सुप्रतिष्ठित एवं समादूत संस्था है। संस्था द्वारा ''रेडियो रेवा'' (सामुदायिक रेडियो) का प्रसारण भी किया जाता है।

मेरी ओर से पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाए।

(उषा बाबू सिंह ठाकुर)

कार्यालय : कक्ष क्र. 318, एन-एक्स-3, मंत्रालय, भोपाल, पिन-462004 (म.प्र.) दूरभाष : 0755-27408769 (कार्या.)

भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का

स्वच्छ सुजल शक्ति सम्मान 2023 प्रदान करने के अवसर पर सम्बोधन

आप सभी को मेरा नमस्कार! जल संरक्षण और स्वच्छता के क्षेत्र में जमीनी स्तर पर महिलाओं के नेतृत्व और योगदान को सम्मानित करने के लिए आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आज स्वच्छ सुजल शक्ति सम्मान से पुरस्कृत सभी महिलाओ को मैं बहुत-बहुत बधाई देती है। इन बहनों के अच्छे कार्यों को सम्मानित करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए, मैं जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी और उनकी पूरी टीम की सराहना करती हूँ। जल और स्वच्छता दो ऐसे महत्वपूर्ण विषय है जो हर नागरिक के जीवन में विशेष स्थान रखते हैं। लेकिन ये मुद्दे सबसे ज्यादा हमारी बहनों और बेटियों को प्रभावित करते हैं। क्योंकि प्रायः गांवों में घरेलू काम-काज और पीने के लिए पानी की व्यवस्था करना महिलाओ की जिम्मेदारी होती है। हमारी बेटियों और बहनों को अक्सर पानी लेने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता था। यह समस्या रेगिस्तानी, पहाड़ी और जंगल के क्षेत्रों में और भी अधिक गंभीर हो जाती थी। पीने के पानी की व्यवस्था करने में न सिर्फ उनका काफी समय लगता था बल्कि उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य को भी खतरा बना रहता था। आमतौर पर स्कूल और कॉलेज जाने वाली बेटियां भी अपने घर की बड़ी महिलाओ के साथ पानी की व्यवस्था करने में लगी रहती था, जिससे उनके पढ़ने-लिखने में बाधा आती थी।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर, भारत सरकार द्वारा, 'स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण' और 'जल जीवन मिशन' के माध्यम से सभी लोगों को स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता की सुविधाएं प्रदान करने के लिए विशेष उपाय किए जा रहे हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि आज 11 करोड़ 30 लाख से अधिक परिवारों को नल से पीने योग्य शुद्ध जल उपलब्ध हो रहा है। महिलाएं, जो समय पहले पानी लाने में लगाती थी, उस समय का सदुपयोग वे अब अन्य उत्पादक कार्यों में कर रही हैं।

नल के स्वच्छ पानी से शिशुओं के स्वास्थ्य में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है जो प्रदूषित पानी की वजह से डायरिया और पेचिश जैसी जल से संक्रमित बीमारियों के शिकार हो जाते थे। नोबेल पुरस्कार विजेता माइकल क्रेमर ने अपने अध्ययन में बताया है कि ग्रामीण भारत में नल से सुरक्षित पेयजल प्रदान करके पांच साल से कम उम्र के करीब 1.36 लाख बच्चों की हर वर्ष जान बचाई जा सकती है। जल सृष्टि का आधार है जल के बिना जीवन संभव नहीं है। हमारी प्राचीन परंपरा में भी पानी के महत्व का वर्णन प्राप्त होता है। यजुर्वेद में कहा गया -

आपो हिष्ठा मयो भुवः

अर्थात - इस धरती पर जीवन प्रदान करने वाला रस जल ही है।

हम सब जानते है कि हमारे देश में जल संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध है और उसका वितरण भी असमान है। भारत में विश्व की करीब 18 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है लेकिन विश्व का केवल 4 प्रतिशत जल संसाधन ही हमारे देश में उपलब्ध है। इसमें से भी अधिकांश जल, वर्षा के रूप में मिलता है जो बहकर नदियों और समुद्र में चला जाता है। इसलिए जल- संरक्षण और उसका प्रबंधन हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। अनियोजित शहरीकरण ने तालाबों और झीलों जैसे जल-संचय के परंपरागत तरीको को लुप्त कर दिया है जिसका परिणाम आज पानी की समस्या के साथ-साथ global warning के रूप में भी हमारे सामने है।

आज हम पानी की आपूर्ति के लिए परंपरागत माध्यम से ज्यादा संस्थागत माध्यम पर निर्भर हो गए हैं। लेकिन sustainable water supply के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने के साथ-साथ जल प्रबंधन और जल- संचय के परंपरागत तरीकों

भारत को एक पूर्ण स्वच्छ राष्ट्र बनाना, केवल सरकार की नहीं, बल्कि सभी देशवासियों की सामूहिक जिम्मेदारी है। जन-भागीदारी के बिना यह संकल्प पूरा होना संभव नहीं है। यह खुशी की बात है कि आज जल शक्ति मंत्रालय पेयजल के लिए स्रोत स्थिरता विषय के साथ 'जल शक्ति अभियान- 2023' की शुरुआत कर रहा है। जल शक्ति अभियान की यह चौथी श्रृंखला निरंतर पेयजल आपूर्ति सुनिधित करने के लिए "स्रोत स्थिरता" को महत्व देती है।

को पुनर्जीवित करना भी समय की मांग है। मैं ओडिशा के मयूरभंज जिले से आती हूं जहां मानसून के समय अच्छी बारिश होती है लेकिन फिर भी गर्मी के मौसम में पीने के पानी की कमी हो जाती है। ऐसी ही स्थिति हमारे देश के अनेक शहरों और गावों की है। कुछ वर्षो पहले तक गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ के क्षेत्र में भी जल की कमी होना आम बात थी लेकिन गुजरात सरकार की सुजलाम् सुफलाम् योजना ने जल- प्रबंधन का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इस योजना के सफल कार्यान्वयन ने सौराष्ट्र और कच्छ में पानी की कमी को लगभग समाप्त कर दिया है।

हमारा प्रयास होना चाहिए कि जल संरक्षण और इसके प्रबंधन के लिए, सभी एकजुट होकर कार्य करें। हमें यह प्रयास न सिर्फ अपने लिए, बल्कि हमारी आने वाली पीढियों के स्वस्थ और सुरक्षित जीवन के लिए करना जरूरी है। Earth Day का आरंभ करने वाले, पर्यावरणविद तथा समाजसेवी Gaylord Nelson ने वर्ष 1970 में इसकी शुरुआत में कहा था।

"The ultimate test of nan's conscience may be his willingness to sacrifice something today for future generations whose words of thanks will not be heard."

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि करीब दो लाख गांवों ने स्वयं को ODF plus गांव घोषित कर दिया है। इसका मतलब है कि इन गांवों में ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन की व्यवस्था है। इस संदर्भ में मुझे आप लोगो से कुछ कहना है। मेरा मानना है कि घरों से निकले कचरे का उचित और पर्यावरण- अनुकूल प्रबंधन होना चाहिए। अक्सर देखा जाता है कि घरों से निकला old waste material किसी सार्वजनिक स्थान पर फेंक दिया जाता है। और liquid waste material किसी जल स्रोत में चला जाता है जो कि पर्यावरण और जीव-जंतुओं के लिए हानिकारक है। हमारे पास ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें अधिकांश waste material re-cycle हो, liquid waste, underground water मे न मिल सके, और re-cyeling के बाद जो waste बचे उसे हम खाद के रूप में उपयोग कर सकें।

भारत को एक पूर्ण स्वच्छ राष्ट्र बनाना, केवल सरकार की नहीं, बल्कि सभी देशवासियों की सामूहिक जिम्मेदारी है। जन-भागीदारी के बिना यह संकल्प पूरा होना संभव नहीं है। यह खुशी की बात है कि आज जल शक्ति मंत्रालय पेयजल के लिए स्रोत स्थिरता विषय के साथ 'जल शक्ति अभियान- 2023' की शुरुआत कर रहा है। जल शक्ति अभियान की यह चौथी श्रृंखला निरंतर पेयजल आपूर्ति सुनिधित करने के लिए 'स्रोत स्थिरता' को महत्व देती है।

हम सबने देखा है कि किस तरह आज पुरस्कृत हुई बिहार की बबीता गुप्ता plastic waste को decorative products में बदलने में,ओडिशा की सलिला जेना solid और liquid waste management में, झारखंड की मुन्नी देवी घरों में नल से जल पहुंचाने में, और उत्तर प्रदेश की नीलम सिंह community cooperation द्वारा गाँव को ODF plus बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। आज पुरस्कृत हुई सभी महिलाओ द्वारा जल संरक्षण में, गावों को ODF plus बनाने में, waste management में, rain water harvesting मैं किये जा रहे कार्यों को देखकर मेरा विश्वास सुदृढ़ हो जाता है कि इनकी लगन और मेहनत से भारत जल प्रबंधन

और स्वच्छता में, विश्व समुदाय के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करेगा। देवियो और सज्जनो आज से तीन दिन बाद आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। महिलाएं ही परिवार बनाती है, समाज बनाती है और देश बनाती हैं। मेरा मानना है कि जब शक्ति, नारी शक्ति के बिना फलीभूत हो नहीं सकती। और अगर ये दोनों शक्तिया एक हो जाएं तो समाज का कायाकल्प हो जाएगा। सामाजिक समृद्धि और परिवर्तन के लिए इन दोनों शक्तियों की आवश्यकता है। जल जीवन मिशन हमारी नारी शक्ति को और अधिक ताकत देने के लिए ही है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। नारी शक्ति के समग्र विकास शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक विकास में ही देश का विकास निहित है।

हमारे यहां बहुत सारी कहानियां और किस्से है, जो महिलाओं के अप्रतिम रूप को दर्शाती है। लेकिन अगर हम एक आम महिला के जीवन को देखें, ग्रामीण, आदिवासी, पहाड़ी और दूर-दराज के क्षेत्रों में महिलाओं के जीवन को देखें, तो उन सब की जीवन-गाथाएं त्याग, तपस्या और बलिदान की अनकही। कहानिया है। मैं ऐसी सभी महिलाओं को नमन करती हूँ।

आप सब बहनें और बेटियाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों से आई है। आपने एक-दूसरे के अच्छे कार्यों के बारे में जाना और देखा है। मैं यहां उपस्थित आप सभी बहनों से कहना चाहूंगी कि आप जब अपने गांव वापस जाएं तो अपने साथ देशभर में स्वच्छता और जल संरक्षण के क्षेत्र में हो रहे कार्यों के बारे में लोगों को बताए, उन्हें पर्यावरण अनुकूल व्यवहार करने के लिए प्रेरित करें। मुझे विश्वास है कि आज का यह पुरस्कार आपको और भी अधिक लगन से कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। आपको देखकर अन्य लोग भी सीख लेंगे और स्वच्छता, जल और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देंगे। मैं आप सबके और समस्त नारी-शक्ति के उज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। □□

जल नायिका
वीरांगना रानी दुर्गावती

वीरांगना रानी दुर्गावती इतिहास को नारी सशक्तिकरण का परिचय दिया। मुगलों से लड़ते हुए अपनी मातृभूमि की रक्षा रानी दुर्गावती ने वीरगति को प्राप्त हुई थी। वे एक कुशल नेतृत्व करता और कुशल प्रसाशक भी थी। उन्होंने अपने राज्य में जल प्रबंधन को लेकर कई बड़े कार्य किए। वे पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण के कार्य पर बहुत ध्यान देती थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई सारी जल संरचनाओं का भी निर्माण करवाया था। नर्मदा नदी के पास होने के बाद भी उन्होंने कई तालों को निर्माण करवाया था। इन जल संरचना की रचना ऐसी थी कि बारिश के पानी को सहेजकर भू-जल स्तर को भी रीचार्ज किया जाता था।

वर्तमान जल संकट को देखते हुए रानी दुर्गावती के द्वारा बनाई गई यह जल संरचनाएं शोध का विषय हो सकती है। उन्होंने भौगोलिक स्थिति का भरपूर प्रयोगकर ऐसे स्थानों पर तालाब-पोखर बनवाए, जिनमें बारिश का पानी एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्वयं प्रवाहित होता था। □□

'सिर साटे, रूख रहे, तो भी सस्तो जांण'

यदि किसी व्यक्ति की जान की कीमत पर भी एक पेड़ बचाया जाता है, तो वह सस्ता है।

अमृता देवी विश्नोई राजस्थान के खेजड़ली नामक गाँव की रहने वाली थी। सन 1730 ईस्वी में जोधपुर के महाराजा अभय सिंह जी ने अपने नए महल के निर्माण हेतु आवश्यक लकड़ियाँ काटने का आदेश दिया। अमृता देवी विश्नोई ने इसका विरोध किया और वृक्षों के बचाने के लिए अपने प्राणों तक को न्यौछावर कर दिया था। इतना ही नहीं इस आंदोलन में अमृता देवी विश्नोई ने अपनी 3 पुत्रियों का बलिदान भी किया। सन 1730 इसवी में मारवाड़ रियासत के खेजडली गाँव में कुछ ऐसा हुआ जो सदियों तक अमर हो गया। मारवाड़ रियासत के राजा अभयसिंह मारवाड़ एक महल बनाना चाहते थे उसके लिए चूना गर्म करने के लिए पेड़ के लडकियों की आवश्कता पड़ी तो राजा की सेना खेजडली गांव पहुची। खेजडली गांव जोधपुर से कुछ दुरी पर बसा हे पूर्व में रेगिस्तान में पानी एवं पेड़ का बहुत महत्व था ऊपर से इस गाँव की जनसँख्या विश्नोई समुदाय से थी। विश्नोई अथवा बिशनोई समाज संत जम्बोजी का अनुयायी हे जो प्रकृति एवं जीवो के संरक्षण को ही जीवन मान गए हे। जब मारवाड़ की सेना खेजड़ी के पेड़ काटने खेजडली गांव पहुची तब अमृता देवी नाम की एक विश्नोई महिला ने उनका विरोध किया। अमृता देवी अपने 3 बेटियों आसू, भागु और पत्नी

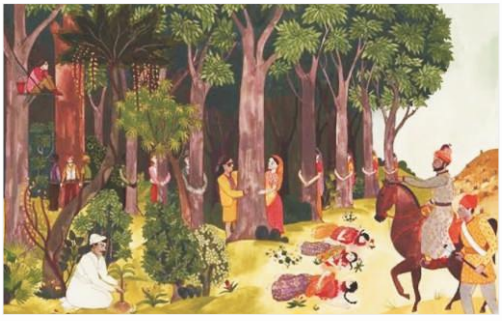

के साथ खेजड़ी के पेड़ से लिपट गयी तथा पेड़ काटना संत जम्बोजी तथा विश्नोई समाज के नियमो के विरुद्ध होने के कारण पेड़ो को काटने से रोक दिया तथा बोली 'सर सान्टे रूख रहे तो भी सस्तो जाण' अगर पेड़ो की रक्षा के लिए सर भी कट जाये तो उससे भी पीछे नहीं हटना। यह खबर महाराज तक पहुंची तब जोधपुर के महाराज अभयसिंह ने हर हाल में लडकिया लाने का हुक्म दे दिया।

हाकिम गिरधारी सिंह भंडारी के हुक्म पर सैनिको ने अमृता देवी और उनकी 3 बेटियों पर कुल्हाड़ी से प्रहार कर उनके टुकड़े टुकड़े कर खेजड़ी के पेड़ो को काटना शुरू किया यह बात पास के गांवो में फैली तब 83 गांवों से विश्नोई समाज के लोग वहां आ गए। धीरे धीरे 363 विश्नोई खेजड़ी के पेड़ो से लिपटते गए और मारवाड़ के सैनिक पेड़ों सहित उनके शरीर के टुकड़े करते गए पुरे खेजडली गाँव की धरती खून से लाल होती चली गयी फिर भी विश्नोई समाज के लोग बड़ी संख्या में पेड़ों से लिपटते रहे यह देख मारवाड़ के हाकिम सेना को लेकर पुनः जोधपुर दरबार लोट गए और महाराजा को पूरा घटनाक्रम बताया। महाराजा ने तुरंत वृक्ष रोकने का आदेश दिया और इस क्षेत्र को वृक्ष व जानवरों के लिए संरक्षित घोषित कर दिया। प्रकृति संरक्षण के इस महान बलिदान पर उन सभी 363 विश्नोई भाई तथा अमृता देवी के परिवार को नमन। □□

जल संरक्षिका

लोक माता अहिल्या बाई होल्कर

लोक माता अहिल्या बाई होल्कर एक कुशल प्रशासक थी । उनको जल संवर्धन-संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण के महत्व को अच्छी समझ थी। उन्होंने अपने शासन काल में इस कार्य को बड़े ही सरलतापूर्वक किया। उन्होंने न केवल महेश्वर का सर्वांगीण विकास किया अपितु जल संरक्षण के लिए अपने संपूर्ण राज्य में अनेक कार्य करवायें। अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर बनवाए, घाट बनवाएं, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया, मार्ग बनवाए- सुधरवाए, भूखों के लिए अन्न क्षेत्र खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बनवाए वे आत्म-प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा संस्कृति और प्रकृति के संरक्षण का प्रयत्न करती रहीं।

अपने शासन काल के दौरान अहिल्याबाई होल्कर ने राज्य में अनेक तालाबों का निर्माण कराया और नर्मदा के घाट पर महेश्वर में और इंदौर में खान नदी के घाट पर अनेक निर्माण करवाये और उनके शासनकाल के दौरान इंदौर के महत्वपूर्ण तालाबों में इस तरह की व्यवस्था को पुख्ता किया गया, कि तालाबों के जल एक दूसरे का पेट भरता जाए। इंदौर में इस व्यवस्था के तहत राऊ की पहाड़ियों से बरसती पानी राऊ के छोटे तालाब से होता हुआ एबी रोड पार करते हुए, निहालपुर-मुंडी के मुंडी तालाब में पहुंचता है। इस तालाब के भर जाने के बाद अतिरिक्त पानी बड़ा बिलावली से ओवर फ्लो होते हुए छोटे बिलावली तालाब का पेट भरता है। इसके बाद पानी, पीपल्यापाला के तालाब तक पहुंचता है।

इसके बाद यह पानी नहर भंडारा यानी खान नदी में प्रवाहित हो जाता है। इसके साथ ही लिंबोदी तालाब भी जल प्रवाह क्षेत्र का एक महत्पवूपर्ण हिस्सा है। इस तालाब में राला मंडल की पहाड़ियों पर बरसात के दौरान गिरने वाला जल आगे बढ़ता हुआ लिंबोदी तालाब में चला जाता है, जहां से यह पानी तालाब के भर जाने पर बड़ा बिलावली तालाब पहुंचता है। जल ग्रहण क्षेत्र और जल प्रवाह क्षेत्र की अनदेखी कर हो रहे विकास और बस्तियों के बसने के कारण इंदौर के तालाबों को एक दूसरे से जोड़ने वाले इस पारंपरिक और प्राकृतिक चैनल में बाधा उत्पन्न हो गई है। आज से 30-40 वर्ष पहले लबालब भरे रहने वाले यह तालाब बरसात में भी खाली रहते हैं। □□

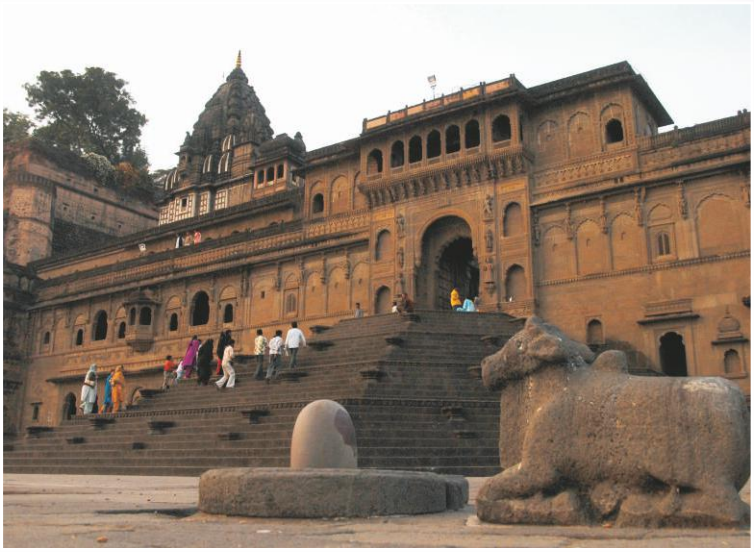

भारत में जल संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

भारत में महिलाओं ने सदियों से जल संरक्षण और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पारंपरिक भारतीय समाजों में, महिलाएं स्थानीय स्रोतों जैसे नदियों, कुओं और तालाबों से पानी इकट्ठा करने और घरेलू उपयोग के लिए इसका प्रबंधन करती थीं।

सुरभि तोमर

(लेखक- जलवायु परिवर्तन कार्यकर्ता, समाजसेवी एवं पर्यावरणविद्)

भारत में, महिलाएं पारंपरिक रूप से जल संसाधनों की प्राथमिक देखभालकर्ता रही हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां पानी की पहुंच अक्सर सीमित होती है। महिलाएं पानी इकट्ठा करने और भंडारण करने, सिंचाई प्रणाली के प्रबंधन और कुओं और तालाबों जैसे जल स्रोतों को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं।

भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाली जल संरक्षण पहलों के सबसे सफल उदाहरणों में से एक जल भागीरथी फाउंडेशन है, जिसे 2002 में राजस्थान में स्थापित किया गया था। यह फाउंडेशन महिलाओं को प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करके जल संरक्षण का प्रभार लेने के लिए सशक्त बनाता है। उनके स्थानीय जल स्रोत। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, कई समुदाय अपनी जल आपूर्ति और सिंचाई प्रणाली में सुधार करने में सक्षम हुए हैं, जिससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है और जीवन स्तर बेहतर हुआ है। एक अन्य उदाहरण राजस्थान के तिलोनिया में स्थित बेयरफुट कॉलेज है, जो ग्रामीण महिलाओं को सौर इंजीनियर और जल संरक्षण विशेषज्ञ बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। कॉलेज का जल साक्षरता कार्यक्रम महिलाओं को वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और जल उपचार के बारे में सिखाता है, जिससे वे अपने गांवों में स्थायी जल प्रबंधन प्रणाली विकसित कर सकें। भारत में महिलाओं ने सदियों से जल संरक्षण और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पारंपरिक भारतीय समाजों में, महिलाएं स्थानीय स्रोतों जैसे नदियों, कुओं और तालाबों से पानी इकट्ठा करने और घरेलू उपयोग के लिए इसका प्रबंधन करने के लिए जिम्मेदार थीं।

ऐतिहासिक रूप से, भारत में महिलाएं तालाबों, नहरों और कुओं जैसे सामुदायिक जल बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव में भी शामिल रही हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान की प्राचीन बावड़ियाँ या बावड़ियाँ, जो 8वीं शताब्दी में बनाई गई थीं, अक्सर महिलाओं द्वारा प्रबंधित की जाती थीं। ये बावड़ियाँ समुदायों के लिए महत्वपूर्ण जल स्रोत थीं और इनका उपयोग सिंचाई, पीने के पानी और नहाने के लिए किया जाता था।

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, आधुनिक जल आपूर्ति प्रणालियों की शुरुआत के कारण जल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका बदल गई। ब्रिटिश प्रशासन ने बड़े बांधों और जलाशयों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया, जिनका प्रबंधन पुरुष इंजीनियरों और अधिकारियों द्वारा किया जाता था। जल प्रबंधकों के रूप में महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं को हाशिए पर रखा गया था, और उन्हें जल प्रबंधन से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा गया था। हालाँकि, हाल के दशकों में, भारत में जल संरक्षण और प्रबंधन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नए सिरे से मान्यता मिली है। जल अवसंरचना परियोजनाओं के डिजाइन, कार्यान्वयन और रखरखाव में महिलाओं को शामिल करने के प्रयास किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, स्थायी जल प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को अपने जल संसाधनों का प्रभार लेने के लिए सशक्त बनाने के लिए महिलाओं के नेतृत्व वाले जमीनी स्तर के आंदोलन उभरे हैं। अंत में, जल संरक्षण और संसाधनों का विकास महिलाओं को सशक्त बनाने और भारतीय गांवों को और अधिक आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जल प्रबंधन और संरक्षण के प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभाकर, महिलाएं न केवल पानी तक पहुंच में सुधार कर सकती हैं बल्कि कृषि उत्पादकता, आय में वृद्धि और समग्र स्वास्थ्य और भलाई में सुधार कर सकती हैं। कई मामलों में, महिलाओं को स्थानीय जल स्रोतों की गहरी समझ होती है और वे इस ज्ञान का उपयोग स्थायी समाधानों की पहचान करने के लिए कर सकती हैं जो उनके समुदायों को लाभान्वित करते हैं।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, एक सक्षम वातावरण बनाना आवश्यक है जो जल संरक्षण और संसाधन प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व का समर्थन करता हो। इसमें प्रशिक्षण, सूचना और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने के साथ-साथ उन सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करना शामिल है जो महिलाओं को सक्रिय भूमिका निभाने से रोक सकती हैं। महिला सशक्तिकरण का समर्थन करने वाली लैंगिक-संवेदनशील नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर, भारत अधिक लचीला समुदायों का निर्माण कर सकता है और सभी के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित कर सकता है। अंततः जल संरक्षण और संसाधन विकास के प्रयासों की सफलता महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और भागीदारी पर निर्भर करती है, जो अपने गांवों और उससे आगे सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखती हैं। □□

'चूनर' ओढ़े 'जल-आंदोलन'

डॉ. क्षिप्रा माथुर

(लेखक - दो दशक से पत्रकारिता और पत्रकारिता से जुड़ी पत्रकारिता में कैंपेन एडिटर, अमेरिका के ग्लोबल स्ट्रेट व्यू अखबार की कंसल्टिंग एडिटर)

दुनिया की हर सभ्यता नदी किनारे पनपी और आज उन्हीं किनारों के लिए हम तरस रहे हैं। जिस 'सप्तसिन्धु' का संदर्भ हम अपने ग्रंथों में पढ़ते रहे हैं, उन नदियों में से कुछ लुप्त हो चुकी हैं, और बाक़ी बची हुई अपने बहाव में आने वाली अड़चनों से जूझ रही हैं। जिन नदियों को हमने माँ कहकर पुकारा, उन्हें दूषित करते हुए हमारे हाथ नहीं काँपे। जिन छोटे बाँधों को हमने बहुत जतन से बांधा, जिन बावड़ियों और जोहड़ों का पूरा जाल देश भर में सदियों से फैला रहा, उनकी मरम्मत और रखरखाव में कसर छूटी तो बारिश का पानी कहाँ ठहरे, कहाँ रुके, कहाँ भरे और किस किसके कुएँ, खेत, मिट्टी को तर करे। पश्चिम के रेतीले धोरे हों, मध्य भारत की पथरीली पहाड़ियाँ या उत्तर की बर्फीली पगडण्डियाँ, पूरब और दक्षिण के ज़्यादा बारिश वाले इलाक़े, पीने और साफ़ पानी की क़िल्लत सबके हिस्से बनी रही। और इसकी मार महिलाओं पर इसलिए ज़्यादा पड़ी, क्योंकि चूल्हे-चौके का इंतजाम आज भी उसी के हाथ है। बच्चों की ही नहीं, घर के बुजुर्ग, गैया, मवेशी, पेड़, पंछी, खेत सबकी देखरेख उसके जिम्मे रही। और जिस भारत की, जिन महिलाओं की बात हम करना चाहते हैं, वो गाँव-क़स्बों में हैं। असल भारत, जो खबरों में भले ही छूट जाता है मगर जिसकी फिक्र किए बगैर पानी, पर्यावरण और जीवन-प्रवाह, कुछ भी क़ायम नहीं रह सकता।

जी-20 कुटुंब में 'जल-जीवन'

आज भले ही भारत जी-20 की अगुवाई कर रहा हो, लेकिन बात तो वो पूरी वसुधा के अपने कुटुंब की करने में सक्षम है। दुनिया के ये 20 बड़ी आर्थिक ताक़तें, 80% जीडीपी की हिस्सेदारी करती हैं। दुनिया की 60% आबादी वाले इन दिग्गज देशों के बीच दुनिया का 75% कारोबार होता है। जिस रफ्तार से 2024 तक ग्रामीण भारत के घर-घर तक पाइपलाइन से पानी पहुँचाने का काम 'जल जीवन मिशन' करता दिख रहा है, जिस अमृत-काल में 'अमृत सरोवर योजना' ज़मीन पर उतर रही है, गंगा की सफाई का काम हुआ है, और जल-चेतना के लिए सरकार और समुदाय साथ आकर काम कर रहे हैं, लग रहा है कि आने वाली सदी में भारत दुनिया के लिये 'जल-मिसाल' क़ायम करने वाला देश बनकर ही उभरेगा। आज आँकड़ों के आईने से पानी का सटीक आकलन कर, समाधान के लिए संकल्पित देश को ये भी मालूम है कि पानी को पूजने की परंपराओं और मान्यताओं के बावजूद, दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियाँ हमारे यहाँ हैं।

जी-20 में जल-संवाद की शुरुआत तबसे हुई जब 2020 में सऊदी अरब ने अपनी प्रेसीडेंसी के समय जल को शीर्ष मुद्दा बनाया। इसके बाद इटली और इंडोनेशिया के बाद भारत की बारी में भी जल चर्चाओं पर पूरा फ़ोकस है। 2047 के 'विज़न इंडिया' में 'वाटर-विज़न' इतना अभिन्न-अहम हिस्सा है कि अभी से 'जल-जीवन मिशन' दुनिया का सबसे बड़ा जल-अभियान बन गया है। संयुक्त राष्ट्र ने भी 46 साल बाद जल क्रॉन्फ्रेंस आयोजित की, और भारत की पानी के हर पहलू पर, सतत विकास छठे लक्ष्य की छाया में हो रहे काम, दुनिया के कान तक पहुँचे। फिर भी देश की फिक्र है कि खूब बरसने के बावजूद देश पानी के लिये तरस रहा है क्योंकि हम जमीन का पानी सोखने में दुनिया में अब भी अव्वल हैं। 'अटल भूजल' कोख का पानी लौटा लाने के लिए 7 राज्यों के 222 सबसे सूखे ब्लॉक्स और ध्यान लगाये है, तो राजस्थान और पंजाब जैसे कुछ राज्यों को छोड़कर बाकी 22 राज्य, ज़मीन से पानी खींचने के लिए केंद्रीय मॉडल कानून अपनाने में आगे हैं। इस पूरी प्रक्रिया में हमें ये महसूस करते रहना होगा, कि इन प्रयासों से लौटने वाली असल खुशहाली तभी है, जब पानी घर के पास तो आ जाये, मगर साफ भी हो। महिलाओं के शौचालय इस्तेमाल लायक और साफ सुथरे हों, और पीने का पानी स्वास्थ्य के लिये ख़तरा ना रहे।

महिला किसान, एकात्म भाव

अमृतकाल से पहले के दशक में यानी करीब अस्सी साल पहले जहां प्रति व्यक्ति मुहैया पानी 4000 घन मीटर था, वही घटकर महज़ 1500 रह गया है। पानी जितना औसतन बरसता है, उस मायने में दुनिया के अव्वल देशों में होने के बाद भी पानी के प्रबंधन में हम पिछड़े रहे। आबादी के दबाव और सिंचाई में बर्बादी के साथ ही ज़मीन की कोख से पानी खींचने के लिए बेहिसाब खोदे ट्यूबवेल, सबने मिलकर बड़ा संकट पैदा कर दिया। यही नहीं, जब विवेकानंद ने अपने दौर में कहा था कि खेती अब देहाती बुद्धि से नहीं, वैज्ञानिक सूझ बूझ से करनी होगी, तब से लेकर अमृत-काल तक आते-आते भी खेती में पानी की 80-90 फ़ीसद की बर्बादी अपने हिस्से कर ली हमने।

आज, जितने पानी में हम फसलें उगाते हैं उससे आधे से भी कम में चीन और अमेरिका वही फसलें उगाना जानते हैं। हमने अपने खेतों में वो फसलें फैला लीं, जो हमारी मिट्टी-हवा में उपजती ही नहीं। इसलिए बाहरी-पराई फसलें उगाने के लिये मशकत ज़्यादा होने लगी। रसायन ज़्यादा छिड़कने पड़े, मिट्टी-हवा-पेड़ में पल रहे, कीट-पतंगों-जीवाणुओं का एक दूसरे पर आश्रित और एक दूसरे को पोषित करता जीवन-तंत्र छिन्न-भिन्न हो गया। असर सीधा सीधा हमारी सेहत पर, फसलों के चक्र

पर, जलवायु संकट की मार के रूप में आना ही था। कृषि विज्ञान, शोध, विश्वविद्यालयीन परिचर्चाओं का यही नतीजा मिला हमें और हमने विचार करना भी जरूरी नहीं समझा कि इस बिगाड़ का तोड़ क्या है।

खेती किसानी में सबसे ज़्यादा भागीदारी महिला किसानों की है, इसलिए, अब तकनीक, विज्ञान और उन्नत खेती का ज्ञान उसके हिस्से रहने से ही बात बनेगी। उसे सिर्फ कामगार कहने से काम नहीं चलेगा। उसे वो सम्मान और पहचान देनी होगी, जो हमारी मान्यताओं से मेल खाती हैं। महिलाओं की अगुवाई की खासियत ये भी है, कि प्रकृति के एकात्म भाव में रहती हुई वो सिर्फ परिवार, गाँव, समाज का ही नहीं पशु-पक्षी की जरूरतों का भी सोचती है। इस बंधुत्व का बाकी रहना ही, हमारे अपने अस्तित्व की धुरी है।

पानी की पीड़ा

पानी से जो रिश्ता सिर पर पानी ढो कर लाती, कुएँ से बाल्टी खींचती, हैंडपंप से चरी भरकर लाती महिलाओं-युवतियों का है, वो दुनिया की समझ में आता तो बहुत पहले ही हमने महिलाओं को जल प्रबंधन की कमान पहले ही सौंप दी होती। दिल्ली के एक आयोजन में पानी के लिए पुरस्कृत एक युवती ने मौका मिलते ही कहा, एक बार सर पर मटका रखकर चलने का अभ्यास सबसे करवाया जाए, तो शायद सबको पानी की पीड़ा समझ आये। संवेदनाओं का खो जाना ही तो हम पर सबसे बड़ा दाग है। नौकरशाही और राजनीति की जुगलबंदी में 'लोकनीति' के सुर के साथ भाव की प्रधानता नहीं होगी तो हल किसी मसले का नहीं निकलेगा। अच्छी बात है कि पानी के प्रबंधन और हर घर नल पहुँचाने के काम के साथ ही पानी की जाँच के लिए बनाई समितियाँ महिलाओं की भागीदारी से बनाई जा रही हैं। जो अभी भले ही कागजी नज़र आयें, मगर धीरे-धीरे असल स्याही में भी होंगी। जल की बात में ये बात दोहराई जाने लगी है कि नल की पहुँच घरों तक नहीं होने और जल स्रोतों के घर से औसतन 2-5 किलोमीटर दूर होने से दूर महिलाओं को पानी भरकर लाने में अपना श्रम और समय दोनों खर्च करना पड़ता है। इसलिए उन्हें प्राथमिकता में रखना ही होगा। नर्मदा के किनारे बसे आदिवासी समाज की महिलाएँ पहाड़ों से उतरकर पानी लेने आती हैं, गर्भ धारण किए महिलाओं की तकलीफ का अन्दाज भी पानी के नजरिए से देखें तो हमें समाधान की जल्दबाज़ी होगी। पूर्वांचल के अपने घरों से दूर रह रही महिलायें 'छठ पूजा' में दिल्ली की मैली यमुना में डुबकी लगाते शर्म से पानी-पानी होती हैं, राजस्थान की माही नदी से भरेपूरे सौ टापू वाले आदिवासी इलाकों में हजार फीट ऊँची पहाड़ियों से आकर आज भी पोखरों की तलाई खोदकर औरतें पानी इकट्ठा करती हैं। कैमरे की नजर से इनके जीवन का ये क्रम बेहद कलात्मक दिखाई देता है, लेकिन इनके दुःख कहीं किसी फाइल, किसी रिकॉर्ड में तुरंत दर्ज नहीं हो पाते। ये कहानियाँ आज की और अभी की हैं जो सिर्फ इसलिये दबी रही हैं क्योंकि, महिलाओं को अपने संघर्ष में भी गीत गाना आया, झगड़ना और भड़कना नहीं। उसे अपने श्रम का जोड़-बाकी करने का वक्त कभी मिल गया तो सारे बही खाते कम पड़ जाएँगे। कई गाँवों की हकीकत यही है कि बच्चे पढ़ जाते हैं, मगर बच्चियाँ पानी, घर और खेत के इंतज़ाम में, कुछ और नहीं कर पातीं। पढ़ाई के लिए वक्त ही नहीं मिलता बच्चियों को। पानी लाने काम, सहेजने और फिर बाँटने का सारा काम, हमने उसके बूते होते ही देखा है।

नदियों का 'जल-गान'

पानी को तरसते और पलायन सहते, महाराष्ट्र माढ़ा तालुक में नदी को जीवित करने के बड़े काम देखे तो, ये भी देखा कि गाँव की हर महिला, हर परिवार अपने-अपने हिस्से की कीमती जमीनें नदी को समर्पित कर दी। पूर्वोत्तर के अंदरूनी इलाक़ों में फ़ौज की मदद से 'जल-प्रबंधन' और देसी फसलों को बढ़ावा देकर पोषण के काम को अंजाम देते महिला समूह देखे, जल जीवन मिशन के जीवट अधिकारियों का दूर दराज के मुश्किल इलाक़ों तक पानी पहुँचाने का जज़्बा देखा। पश्चिमी इलाक़ों में, तकनीकी संस्थाओं की मदद से ग्रामीण आजीविका के लिए भी पानी के कई प्रयोगों का जायजा लिया तो उसमें भी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं अनुभव ये था कि समाधान और नवाचार में महिलाओं का कोई सानी नहीं। फिर राजधानी में मंत्रालय के अधिकारियों से रूबरू होकर देखा, कि देश के अलग-अलग हिस्सों में समाज और संगठनों के तालमेल में जल-जलवायु संकट की खासी फ़िक्र हो रही है। जहां सरकारों की अपनी प्रतिबद्धता है, वहाँ पूरी लगन से काम हो रहा है। राजधानी के रास्ते में हाईवे के बगल में सूखी हुई रूपरेल नदी देखी और दिल्ली से हरियाणा के रास्ते में दूषित साहिबा नदी के किनारे लगा ये बोर्ड, कि ये नदी आपकी है, इसमें कचरा ना डालें। असम के गुवाहाटी के बीचों बीच गुज़रती बेहाल भरालू नदी देखी। इसीलिए लगा, शहरों की हवाई बातों पर भरोसा कम ही ठीक, उन्हें बंद कमरों में चर्चा कर लुभाने का हुनर बखूबी आ गया है, लेकिन समाधान के लिए जुटने का साहस ग्रामीण समाज में ही है। उनके बीच जाकर, देखकर ही यक़ीन हुआ कि गाँव जैसी दरियादिली ही हमारी धरोहर रहेगी। इन सब मसलों को, समुदायों की पहल को 'पाञ्चजन्य' ने अपने पन्नों में 'जल-आंदोलन' छेड़कर साझा किया है।

पानी की पहरेदारी हम सब मिलकर कर पाये, महिला की तड़प समझ पाये, तो नदी-नाले, तालाब, जोहड़, नहरें सब अपने प्रवाह में लौट आयेंगे। सच बात तो ये है कि महिलाओं के बगैर ग्रामीण भारत में किसी भी उद्यम और उपक्रम को साधा नहीं जा सकता। मगर उसके घूँघट और चूनर के पीछे के जिस मन को हम पढ़ने में नाकामयाब रहे, उसमें बड़ी टीस पानी की ही है। पानी घर तक आ जाना, यानी कितने और कामों के लिए, कला के लिए, गीतों के लिए, हंसी ठिठोली के लिए वक्त निकल आना। यूएसऐड की एक रिपोर्ट बताती है कि जीवन भर में महिलाओं-युवतियों-बच्चियों का पानी के इंतज़ाम में कुल क़रीब 15 करोड़ घंटे खर्च होते हैं। इसकी भरपाई घर-घर को नल से जोड़ने से हो पाई, तो भारत के सभी आठ नदी तंत्र और 313 नदियाँ 'चूनर' ओढ़कर भारत के भाग्य का जल-गान करती सुनाई देंगी। □□

नीर, नारी और नदी का संवर्द्धन हो

नैरूति शाह

(लेखक - पर्यावरण विशेषज्ञ और वैराग्य कंस्लटन भरूच की प्रमुख)

नीर बिन जीवन नहीं, नारी बिन नहीं देह,
नदी बिन सृष्टि नहीं सच यही चाहे नहीं केह।

अर्थात नीर, नारी और नदी जीवन की संरचना के अनिवार्य अंग है। नीर, नारी और नदी वास्ताविक रूप में शक्ति स्वरूपा है।

निम्नतर स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक नीर, नारी और नदी को हम जीवन की वास्तविकता तथा तार्किकता से भिन्न नहीं देख सकते। जीव सृष्टि का क्रम जहां से शुरू हुआ और वर्तमान में जहां पहुंचा है वहां नीर यानि जल पहला अनिवार्य तत्व माना गया है, देह के भीतर से लेकर पृथ्वी में इसकी व्यापकता तक। वहीं जीव सृष्टि की उत्पत्ति में जहां प्राणियों की श्रेणी आई वहीं से नारी तत्व की गंभीरता प्राथमिक हो गई। और जहां नदीयां पृथ्वी पर कई परिदृश्यों में जैव विविधता में योगदान करते हैं वहीं समाज और संस्कृति के निर्माण की प्रथम कड़ी ही नदी है। एक स्वस्थ राष्ट्र और समाज की रचना के लिए नीर, नारी और नदी मूलभूत और अनिवार्य पहलू माने जाते है। पहाड़ों से बहते छोटे छोटे झरने मीलकर नदी के रूप में बहते हुए जीव-जन्तुओं के लिये जीवित रहने का एक प्राकृतिक वरदान माना गया। वैज्ञानिकों ने भी जिन-जिन ग्रहों को खोज निकाला, वहाँ भी जीवन की पहली ही खोज की गई, अलबत्ता जहाँ पानी के संकेत उन्हें मिले तो वहीं जीवन के भी संकेत मिले है।

आज भी अपने देश और दुनिया के कई हिस्सों में जहा स्वच्छ नीर और स्वस्थ नदियाँ नहीं है वहाँ सबसे ज्यादा प्रभावित वहा का नारी समाज है। क्योंकि बात चाहे किसी के घर की हो, अमीर हो या गरीब हो, पढ़ा हो या अनपढ़ हो, गाँव से हो या शहर से हो, आर्थिक संपादन के साधन की जिम्मेदारी चाहे घर के किसी भी सदस्य की क्यों न हो परंतु घर में नीर यानि पानी की जिम्मेदारी तो घर की नारी के जिम्मे ही रहती है। हमारे विकासशील देश में जल लाने का कार्य केवल महिलाओ को करना होता है। ऐसे कई रेगिस्तानी व पहाड़ी इलाके है जहाँ पानी लेने के लिए महिलाओं को मीलों चलना पड़ता है।

महिलाएँ जल की प्रमुख उपयोग कर्ता होती है। वे खाना पकाने, धोने, परिवार की स्वच्छता सफाई के लिए जल प्रयोग करती है। जल प्रबंधन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उदाहरण के तौर पर बुन्देलखंड की महिलाओं ने जल सहेलियां बनकर अपने श्रम से पुराने जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित कर दिया है और बर्बाद होते पानी को उपयोगी बना दिया।

अगर हम शारीरिक, मानसिक आर्थिक और आध्यात्मिक स्तर पर एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र का निर्माण करना चाहते है, तो हमे चाहिये की नीर, नारी और नदी का संवर्धन हो। इनके प्रति आदर बने और इन्हें उपभोग का साधन समझने की जगह इन्हें पुजनीय मानकर इनके प्रति जागरूकता बढे वैसे प्रशिक्षण हो। अभ्यास पाठशाला में हो या घर में, शिक्षक के द्वारा हो , माता-पिता या परिवार के सदस्यों के द्वारा हो या फिर धर्मगुरु के माध्यम से, प्राथमिकता नीर, नारी और नदी के संवर्धन और सम्मान की होनी चाहिये।

पर्यावरण के सन्दर्भ में अगर कोई बात करे तो नीर और नदी की स्वच्छता और स्वस्थता का आधारस्तंभ उस स्थान का नारी समाज प्राथमिक रूप से रहता है। नीर का उपभोग किस मात्रा में करना है, कैसे नीर को उपभोग योग्य माना जा सकता है, उसे कैसे घर में संगृहीत करना चाहिये, बदलते रहते मौसम में नीर का उपभोग कैसे बदलना चाहिये, पानी के उपभोग में स्वयं और घर के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य की क्या अग्रिमता होनी चाहिये, यह सबके लिए नारी का प्रशिक्षित होना जरुरी है। यह प्रशिक्षण किसी भी माध्यम से हो सकता है। हमारे दादी नानी को इनके बड़े बुजुर्ग ही इसके लिए प्रशिक्षित करते आये है, धर्म और श्रद्धा से हमें नदी से जोड़कर। इतिहास में, वेदों व पुराणों में हमें नीर की पूजा व जल संरक्षण के प्रमाण मिलते है। यह सब इसलिए था ताकि हम जल संपदा हमेशा सुरक्षित रखें। यदि हमें भू जल स्तर बढ़ाना है तो पारंपरिक जल संरक्षण के तरीकों को पुनर्जीवित करना होगा और आधुनिक जल संरक्षण के तरीकों को अपनाना होगा। जिसमे महिलाओं की विशेष भागीदारी आवश्यक है। पानी के अभाव में सबसे अधिक संघर्ष पूर्ण जीवन महिलाओं का ही होता है, यदि जल आपूर्ति सभी क्षेत्रो में समान और भरपूर मात्रा में हो तो महिलाएं अपनी संपूर्ण ऊर्जा परिवार समाज और देश के विकास में लगा सकती हैं। नदियों में बहते पानी की स्वच्छता, उसको उपभोग में लाने की विधि, अगर नदी के पास में ही बसे है तो नदियों के घाट पर किये जाने वाले सभी क्रिया कर्मो में नदी की स्वच्छता की प्राथमिकता इन सब के लिए नारी का प्रशिक्षण होना चाहिए।

नीर और नदी को स्वस्थ व स्वच्छ बनाने, प्रकृति के प्रबंधन के घटक के तौर पर नीर और नदी के आदान-प्रदान में सहायक बन उसके संरक्षण में नारी की भूमिका अहम हो सकती है क्योंकि वह स्वयं संवेदनशील, समझदार, दूरदर्शी व स्नेह प्रेम की मूर्ति होती है। मां, बहन, बेटी या पत्नी के रूप में वह अपने बच्चों, भाइयों, पिताओं या पतियों की सबसे बड़ी हितचिंतक होती है साथ ही वह इस प्रकृति मां के अति दोहन व शोषण की पीड़ा को भी अच्छे से समझ सकती है।इसलिए वह हर रूप में हर व्यक्ति को पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण के संस्कार बड़ी आसानी से दे सकती है।□□

नदी और नारी दोनों पूजनीय

भारत वर्ष में नदियों को देवी, नारी की मान्यता दी गई है। नदी और नारी में निश्चित रूप से समानता है। दोनों ही शीतल, संवेदनशील, चंचल और मनोहर। दोनों ही पूजनीय है, दोनों का जीवन संघर्षपूर्ण है। जब ये अपनी आत्म निर्मित दिशा में अग्रसर हो जाती हैं, इनके प्रवाह को रोकना असंभव जैसा प्रतीत होता है। दोनों ही अपनी यात्रा में ऊँचे नीचे रास्ते, स्थान या समय की कठिनाइयों को पार करते हुए अपनी यात्रा पूर्ण करती हैं।

डॉ. स्मिता

(लेखक - सहायक आचार्य, पर्यावरण अध्ययन विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय जाँत - पाली, महेंद्रगढ़ (हरियाणा)

सविन्दु सिन्धु सुरस्खल त्तरङ्गभङ्गरञ्जितं
द्विषत्सु पापजातजातकारिवारिसंयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारिवर्मदे
त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे...।

हे नर्मदा देवी, नर्मदा पानी की पवित्र बूंदों से प्रकाशित आपका नदी-शरीर, चंचलता के साथ बहता है, लहरों के साथ झुकता है, आपके पवित्र जल में उन लोगों को परिवर्तित करने की दिव्य शक्ति है जो घृणा से लिप्त हैं, घृणा जो पापों से उत्पन्न होती है, आप अपने सुरक्षात्मक कवच (शरण का) देकर मृत्यु के दूत के भय को समाप्त कर देती हैं, हे देवी नर्मदा, मैं आपके चरण कमलों को नमन करता हूं, मुझे अपनी शरण दें।

भारत वर्ष में नदियों को देवी, नारी की मान्यता दी गई है। नदी और नारी में निश्चित रूप से समानता है। दोनों ही शीतल, संवेदनशील, चंचल और मनोहर। दोनों ही पूजनीय है, दोनों का जीवन संघर्षपूर्ण है। जब ये अपनी आत्म निर्मित दिशा में अग्रसर हो जाती हैं, इनके प्रवाह को रोकना असंभव जैसा प्रतीत होता है। दोनों ही अपनी यात्रा में ऊँचे नीचे रास्ते, स्थान या समय की कठिनाइयों को पार करते हुए अपनी यात्रा पूर्ण करती हैं। नदी अपने जीवन के अंत में महासागर में जा के मिल जाती है, और नारी इस संसार-रूपी महासागर में, मां, बेटी, बहन, पत्नी... या न जाने कितने अलग-अलग रूपों में अपना सर्वस्व दे देती है। नदियों का संरक्षण और नारी का सशक्तिकरण, दोनों ही इस समय की अहम आवश्यकता है।

औद्योगीकरण और प्रदूषण के परिणामस्वरूप नदियों का प्राचीन जल प्रदूषित और अशुद्ध होता जा रहा है। नदियों का संरक्षण मनुष्य का दायित्व है। नतीजतन, आने वाली पीढ़ियां भी शुद्ध पानी तक पहुंच सकेंगी। नदी के पानी का उपयोग बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है। लोग आए दिन नालों में कूड़ा डाल देते हैं। विडंबना यह है कि बुद्धिमान लोग भी इस व्यवहार में शामिल हो रहे हैं। क्योंकि नदियाँ हमें जीवन प्रदान करती हैं, इसलिए उनका संरक्षण और सफाई करना महत्वपूर्ण है। पानी के संरक्षण के वैश्विक प्रयासों के अलावा, पारंपरिक जल शोधन और संरक्षण तकनीकों पर पर्याप्त ध्यान देकर और इस मुद्दे के बारे में जन जागरूकता बढ़ाकर ही पानी की गुणवत्ता और उपलब्धता को बनाए रखना संभव है। 'वर्ल्डवाइड फंड फॉर नेचर' के अनुसार विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्रों में तेजी से होते परिवर्तनों के पीछे औद्योगिकीकरण मुख्य कारण रहा है। दुनिया भर में, उद्योग उपलब्ध मीठे पानी का लगभग 22% उपयोग करते हैं। उद्योग में उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा लगातार बढ़ रही है और अगले 20 वर्षों में इसके दोगुना होने का अनुमान है। विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में प्रदूषण नियंत्रण समितियों के साथ साझेदारी में, सीपीसीबी 'राष्ट्रीय जल गुणवत्ता निगरानी परियोजना' के हिस्से के रूप में निगरानी स्टेशनों के एक नेटवर्क के माध्यम से पूरे देश में नदियों और अन्य जल निकायों की जल गुणवत्ता पर नज़र रख रहा है। ' सीपीसीबी जल गुणवत्ता निगरानी के निष्कर्षों के आधार पर समय-समय पर नदी प्रदूषण का आकलन करता है। 323 नदियों में 351 प्रदूषित खंड पाए गए। शहरी और औद्योगीकरण से संबंधित नदी का मुद्दा और भी बदतर हो गया है।

भारत में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि कृषि अपवाह (उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवारनाशी), जीवाश्म-ईंधन जलाने, अपशिष्ट जल और डिटर्जेंट से प्राप्त पानी में फास्फोरस की अत्यधिक मात्रा के कारण अधिकांश ऐल्गल ब्लूम शुरू हो जाते हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान के वैज्ञानिकों ने नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के तहत राष्ट्रीय नदी के जल में पाए जाने वाले कीटनाशकों की मात्रा का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि गंगा जल में खतरनाक रसायनों के साथ कीटनाशकों की मात्रा बढ़ रही है। इसके अलावा एक मुख्य समस्या यूट्रोफ़िकेशन की भी है। किसी जलाशय को पोषक तत्वों से समृद्ध करना सुपोषण (eutrophication) कहलाता है। सुपोषण की प्रक्रिया में जलाशय में पौधों तथा शैवाल (algae) का विकास होता है। इसके अलावा जल में बायोमास की उपस्थिति के कारण उस जल में ऑक्सीजन

की मात्रा कम हो जाती है।

नदियों के किनारों पर व्यापक वृक्षारोपण हो; अनुपचारित पानी, प्लास्टिक और औद्योगिक कार्बनिक पदार्थों को पानी में मिलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। साथ ही, नदियों को कानूनी अधिकार देने का नया आंदोलन और विचार, नदियों को व्यक्तियों के रूप में मानकर उनके संरक्षण का समर्थन करेगा।

इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सतत विकास की अवधारणा का पालन किया जाना चाहिए। जल संसाधन मंत्रालय की एक केंद्रीय योजना जिसे बाद में वित्त मंत्रालय द्वारा अधिकृत किया गया था। दुर्भाग्य से, नदी संरक्षण के प्रयास तब तक सफल नहीं होंगे जब तक कि इस मुद्दे के पारिस्थितिक, आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक पहलुओं की पूरी तरह से जांच नहीं की जाती। इन परिवर्तनों को प्रभाव में लाने के लिए, कुछ जीवनशैली समायोजन किए जाने चाहिए। शहरों को आपूर्ति करने के लिए जलाशयों या बांधों में पानी जमा किया जाना चाहिए, और घरों से सीवेज को नदियों में छोड़ने से पहले साफ किया जाना चाहिए, जिससे नुकसान होने की संभावना कम होती है।

गंगा, यमुना, सिंध, कृष्णा, कावेरी नदियों को हम अपने राष्ट्रीय गान में नित्य ही गाते हैं, लेकिन इनकी सेहत का ख्याल नहीं करते। भूल गए हैं कि हमारा स्वास्थ्य और नदियों का स्वास्थ्य अन्योन्याश्रित है। यदि नदी के स्वास्थ्य में गिरावट आती है तो भारत की राजनीति, सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक संरचना और आर्थिक स्थिति सभी का पतन हो जाएगा। हमें नीर-नारी नदी का सम्मान करने के लिए खराबी को रोकने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए और भारत की जल समस्या का समाधान खोजना चाहिए।

नदी के लिए नीर-नारी सम्मान की आवश्यकता है। इससे किसी भी तरह का विचलन नहीं होना चाहिए। नदी की नैतिकता को मानवीय नैतिकता से जोड़ा जाना चाहिए। हम नदी की जरूरतों के अनुकूल नहीं हैं। नदियों का संकट हमारा ही संकट है। □□

□ **ममता तिवारी**

(लेखक - स्वतंत्र लेखक, कवियित्रि, सामाजिक कार्यकर्ता, रसायन शास्त्र में एम.एस.सी. गर्ल्स कॉलेज में पूर्व व्याख्याता)

तत्वमसि

तुम्हें मेरे बहने का अहसास भी नहीं होता,
पर जब कभी मैं तूफां हो जाती हूँ,
या सुनामी के लिए जिम्मेदार ठहराई जाती हूँ,
या जब मैं बदबू हो जाती हूँ
बस तभी तुम्हें मेरे अस्तित्व का आभास होता है,
सोचो, तुम्हारी फैलाई हुई तबाहियों का ही एक हिस्सा हूँ,
और कोई नहीं, मैं प्राणदायिनी ''हवा'' हूँ!

तुम्हें मेरे व्यर्थ बहाये जाने का
अफसोस नहीं होता,
पर जब मैं अचानक नल से टपकता नहीं,
या बाढ़ बन कर तबाही फैलाता नहीं,
या सड़ांध बना कर नालों से बहता नहीं
बस तभी तुम्हें मेरे अस्तित्व का आभास होता है
सोचों वहीं बिन पानी सब सून तुम्हारी जिन्दगानी हूँ,
और कोई नहीं मैं बेबस दो बूँद ''पानी'' हूँ!

तुम्हें कभी मेरे निरंतर खड़े होने का
अहसास नहीं होता
पर अचानक कड़ी धूप में जब तुम्हारा सिर
झुलसने लगता है
या तेज बारिश से तुम तरबतर हो जाते हो,
या बारिश ना होने पर मेरी कमी को
तुम रोते हो,
बस, तभी तुम्हें मेरे अस्तित्व का
अहसास होता है,
सोचों, तुम्हारी बढ़ती कुल्हाड़ियों से मैं
कितना रुष्ट हूँ,
और कौन नहीं मैं वही छायादायिनी ''वृक्ष'' हूँ।

तुम्हें मेरे छाये रहने का भी अहसास भी नहीं होता
पर जब सूरज की किरणें तुम तक नहीं पहुँच पाती,
या, जब भीषण गर्मी से तुम सुलगते हो,
या, पक्षियों के झुण्ड तुम्हें कहीं दिखते नहीं,
बस तभी तुम्हें मेरे अस्तित्व का
अहसास होता है
सोचो, मैं इन्हीं फैक्ट्रियों और वाहनों के धुँए
से बनी लाश हूँ,
और कोई नहीं मैं ईश्वर प्रदत्त छतरी ''आकाश'' हूँ।

तुम्हें मेरे पड़े रहने का भी अहसास नहीं होता
पर जब पानी की कमी से मेरा सीना फटता है,
या, जब कैमिकल्स प्रदूषित पानी मुझे 'वाला
उगलने पर मजबूर करता है,
या, जब अन्न की कमी तुम्हारे ब'चों को बेतहाशा रुलाती है
तब ही शायद तुम्हें मेरी याद आती है,
सोचो, आज तुम्हारे लिए भूकम्प, सूखा, 'वालामुखियों
से भरा कचरा हूँ,
और कोई नहीं मैं वही अन्नप्रदायिनी ''वसुंधरा'' हूँ। □□

मेरे रिपोर्टिंग के सफर में विभिन्न प्रदेशों में जाना होता है। विविधता से पूर्ण अपने देश में एक बात समान है । अरुणाचल प्रदेश हो, तमिलनाडु हो, या मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल क्षेत्र, सब जगह महिलाओं को ही सबसे ज्यादा काम करते देखा। क्यों ? पर्यावरण की क्षति का खामियाजा सबसे ज्यादा महिलाओं को ही भुगतना पड़ता है और महिलाये ही है जो पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय है आदिवासी प्रदेश में माफिआ ने जंगल कटाई करने के बाद दूर-दूर से चूल्हे के लिए लकड़ी लाना घर की महिलाओं का ही काम होता है। धान बोना जब होता है, बिहार में, आसाम में या आंध्रप्रदेश में, महिलाओं का ही काम। इसी तरह से घर के सदस्यों के लिए पानी लाना हो, तब भी महिलाएं ही है। जब नीर, नदी और नारी की बात हो, तो हाथ में बैनर पकड़े, नारा देते हुए ही या पेड़ों को मत काटिये बोलने वाली ही पर्यावरण कार्यकर्ता होता या होती है, ऐसा नहीं है। घर-घर पानी का एक-एक बून्द बचने वाली, फसल का एक-एक दाना बचने वाली, जो हमारी माताएं है, बहने है, बेटियां है, ये सारी की सारी पर्यावरण संरक्षण का ही काम करती है। वर्षों से पुरुषों के द्वारा चलायी गयी, बनायीं गयी परियोजनाओं के कारण दिक्कते झेलने के बाद, पर्यावरण को हानि पहुंचने के बाद, अब समय आया है कि महिलों की दृष्टि से पूरी प्लानिंग हो। ताकि, जैसे अविरल और निर्मल नीर ही नदी को नदी की असली पहचान देता है ठीक उसी तरह अविरल, निरंतर कार्य और निर्मल विचार, निर्मल आचार वाली नारी की पर्यावरण क्षेत्र में एक अलग पहचान होगी और वही पर्यावरण की अपूरणीय क्षति होने से बचाएगी। □□

- निवेदिता खांडेकर, दिल्ली

न्यूज नाइन प्लस में सीनियर एसोसिएट एडिटर है। मध्य प्रदेश और खासकर नर्मदा मैय्या से काफी लगाव रखती है। उनके लेखन और कार्य में पर्यावरण और विकास विषयों को प्राथमिकता देती है, जल, जंगल, जमीन, नदियां, हिमालय और जल वायु परिवर्तन विषयों पर सतत लेखन करती है।

नीर, नारी और नदी असंख्य रूप में एक दूसरे से जुड़े हैं। नदियां हमारे पृथ्वी ग्रह की जीवन रेखायें हैं और हमें जीवनदायी पदार्थ जैसे ताजा जल, खाद्यान्न, परिवहन एवं ऊर्जा प्रदान करती हैं। महिलायें, विशेषकर विकासशील देशों में, अपने भोजन पकाने, सफाई करने और वस्त्र धोने के लिए दैनंदिन जीवन में नदियों के जल पर निर्भर रहती हैं। इसलिए महिलायें जल संसाधन की पहली रक्षक कही जा सकती हैं। दुर्भाग्यवश दुनिया की नदियां गंभीर संकट का सामना कर रही हैं जिनमें प्रदूषण, बांधों का निर्माण, जलवायु परिवर्तन, अतिउपयोग प्रमुख हैं जिससे लाखों लोगों का रोजगार और स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। इन प्रभावितों में सबसे अधिक महिलायें ही हैं। स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की कमी न केवल उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करती है अपितु वह उनकी शिक्षा, आर्थिक अवसर एवं सामाजिक प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। इसलिए, महिलाओं को सशक्त करना एवं पुरूष समाज के समकक्ष अधिकार देना संपोषणीय जल प्रबंधन के लिए आवश्यक है। अंत में हम कह सकते हैं कि नीर, नारी और नदी के मध्य का सम्बन्ध जटिल और बहुआयामी है। हमारे जल संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण में उससे लाभ उठाने वाले सभी वर्गों जिसमें नदियां भी सम्मिलित हैं उन्हें नदी और नीर जैसे जल संसाधन के संपोषणीय प्रबंधन में महती भूमिका निभानी चाहिए। □□

- शिल्पा अरोरा, मुम्बई

मर्क बायोफार्म इंडिया में फर्टिलिटी डिविजन की निदेशक (व्यवसाय इकाई प्रमुख)। प्रबंधन (रणनीतिक योजना, बिक्री-विपणन, व्यापार विकास) विशेषज्ञ।

प्रसन्नता का विषय है कि नर्मदा समग्र न्यास म.प्र. भोपाल द्वारा 'नीर, नदी एवं नारी' विषय पर त्रैमासिक पत्रिका नर्मदा समग्र का अंक प्रकाशित किया जा रहा है। नदियां हमारी सदैव आस्था का केन्द्र रही है, भारतीय समाज ने हमेशा नदियों को पूजा है। नदियों के संरक्षण में हमेशा नारी ने अग्रणी भूमिका निभाई है। नर्मदा जी और सहायक नदियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए स्व. अनिल माधव दवे जी द्वारा प्रकल्पित संस्था नर्मदा समग्र निरंतर कार्य एवं कार्यक्रमों के माध्यम से जन जागरण का कार्य करती आ रही है श्री दवे जी के इन्हीं कार्यों को आगे बढ़ाते हुए संस्था द्वारा नीर, नदी एवं नारी विषय को लेकर प्रकाशित किये जा रहे अंक से समाज और नदी संरक्षण से जुड़े संस्थानों को इससे कार्य करने में सक्रियता मिलेगी। आशा है कि पत्रिका का यह अंक आमजन में जागरूकता उत्पन्न करने का माध्यम सिद्ध होगा। □□

हार्दिक शुभकामनाएँ।

- ज्योति पंड्या, मंगलेश्वर, गुजरात

यहाँ मैं नीर, नारी और नदी के सदियों पुराने चले आ रहे रिश्ते को बताना चाहूंगी। मुझे याद आती है मेरी माँ की उपमा, वो मुझे एक नदी के रूप में देखती थी, मुझे कहती - 'तू दिन भर चलती रहती है, बहती रहती है, तू थकती नहीं, घर में, बाहर, जिसे भी जरुरत होती है, उसकी तू मदद करती है, तू मुझे एक नदी सी दिखती है।' जहाँ चाहो जैसी ढल जाती हो। इस नीर रूपी नारी के बिना सब कुछ नीरस, शुष्क और बंजर है। नीर, नारी और नदी अपना नियंत्रण सहज नहीं खोते। किन्तु परिस्थिति अगर उसे ऐसा करने पर मजबूर करती है तो फिर परिणाम सर्वविदित है। नीर कहां से आकर कहाँ-कहाँ बह जाता है, नारी अपने उद्गम से अपने अंत तक न जाने कितने टुकड़ों में बंट जाती है । नीर नारी और नदी का ये अंतरंग रिश्ता अद्भुत एवं अनमोल है। जरुरत है इन तीनों को सहजने की नहीं तो 'बिन पानी सब सून'। □□

- डॉ. मीना अग्रवाल, दिल्ली
विशेषज्ञ नाक कान गला रोग, वर्तमान में दिल्ली में कार्यरत।
गत 30 वर्षों से सेवा भारती विदिशा में सक्रिय

पृथ्वी पर सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक नीर, नदी व नारी जीवन के तीन प्रमुख आधार स्तंभ रहे हैं। नीर के बिना जीवन की कल्पना असम्भव है। पृथ्वी ग्रह पर जीवन का अस्तित्व ही नीर, नदी एवं नारी की वजह से है। नीर का स्तोत्र चिरकाल से ही नदियाँ रही है और नीर, नारी व नादियों का पृथ्वी पर अवतरण ही अखंड मानव कल्याण के लिए हुआ है, इन तीनों को सहेजना मानवता का परम कर्तव्य है। हमारे देश की संस्कृति में नीर, नारी एवं नदियाँ तीनों हमेशा से पूजनीय रही है व इतिहास में इसके असंख्य प्रमाण मिलते हैं। नीर, नारी एवं नदियों पर चर्चा व विचार मंथन और इनके के उत्थान लिए किये जाने वाले कार्य, समाज व विश्व का कल्याण करेंगे । नीर, नदी एवं नारी विषय चुनाव के लिए नर्मदा समग्र पत्रिका के संपादक मंडल एवं रेडियो रेवा का विशेष अभिनंदन । □□

- डॉ. अंजली पोटनीस, भोपाल
विगत 25 वर्षों से तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय है।
वर्तमान में राष्ट्रीय संस्थान NITTTR Bhopal में संकाय इलेक्ट्रॉनिक्स के पद पर कार्यरत है।

नदी एक ऐसी प्रवाहित धारा है जो न केवल कृषि हेतु फसल उपजाती है बल्कि किसी भी सभ्यता के विकास में सहायक होती है। पुरातन समय से मनुष्य नदी को देवी-देवताओं के रूप में पूजता आया है। हम यह भी जानते हैं हमारे देश में बहुत से ऐसे ऋषि मुनि हुए हैं जिन्होंने नदी किनारे कड़ी तपस्या कर आध्यात्म और मोक्ष से संबंधित ज्ञान प्राप्त किया है। 'नर्मदा' हमारे मध्य प्रदेश की जीवन रेखा है, स्वर्गीय अमृत लाल जी एवं स्वर्गीय माननीय अनिल जी द्वारा माँ नर्मदा के संरक्षण के लिए किए गए प्रयास आज 'नर्मदा समग्र' के रूप में एक जन अभियान का रूप ले चुके हैं। न्यासी, कार्यकर्ता समस्त नदी अनुरागी, अनिल जी के बताये पथ पर चलते हुए माँ नर्मदा की सेवा में अपने आप को पूरी तरह से समर्पित हैं। ईश्वर, माँ नर्मदा इस अभियान को और और विशाल स्वरूप प्रदान करे। शुभकामनायें। □□

- डॉ. शालिनी गुलाटी, भोपाल
शिशु रोग विशेषज्ञ

नर्मदा समग्र संस्था से जुड़ने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ यह मेरे लिए बहुत आनन्द का विषय है। ''नीर, नदी एवं नारी'' यह बहुत ही महत्व का विषय चूना है।

जल का योग्य तथा कार्यक्षम प्रबंधन इस समय की मांग है। हर व्यक्ति, हर उपयोग को, हर फसल को, हर राज्य को सामान्य पद्धति के द्वारा जल प्राप्ति हो यह विचार गलत नहीं है। वर्तमान में कुछ फसलों का, कुछ प्रदेशों का पानी कही और ले जाना यह राजनीतिज्ञों का धंधा बन गया है। प्रतिवर्ष हम लाखों की संख्या में व्यवस्थापको का निर्माण करते हैं। हर विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय इस काम के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहा है, परंतु इन व्यवस्थापको का ज्ञान इस कार्य के लिए उपयोग में नहीं ले जा रहा है। यह दुर्भाग्य है। यह सोच कर अनेक कल्पनाओं के यदि प्रत्यक्ष में उपयोग की बात कर पाएंगे तो जल के प्रश्न को हम मात कर देंगे। यह परिवर्तन लाने के लिए अत्यधिक प्रयास किए जाना चाहिए, यह संदेश इस अंक के द्वारा दिया जायेगा यही अपेक्षा है। □□

- निर्मला कांदळगांवकर
विवम एग्रोटेक, पुणे

एक महिला और एक पर्यावरण रक्षक के रूप में, मुझे हमारी प्राकृतिक विरासत की सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका का स्मरण करना आवश्यक लगता है। मैं पर्यावरण रक्षा, साहस और लिंग के बीच संबंधों को दृश्यमान बनाने की ओर एक विशेष आकर्षण महसूस करती हूं। महिलाएं, पर्यावरण के बिगड़ने की पहली शिकार हैं, लेकिन वे प्रकृति की रक्षा और संरक्षण में सबसे बड़ी नायिका भी हैं। हालांकि ऐसा लग सकता है कि महिलाएं और पर्यावरण दो अलग-अलग विषय हैं, दोनों के बीच सूक्ष्म लेकिन मजबूत लिंक हैं, खासकर जब पानी की बात आती है। महिलाओं का पानी के साथ एक महत्वपूर्ण रिश्ता है, जीवन के स्रोत और अस्तित्व के लिए दोनों ही मौलिक हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महिलाओं को अक्सर पानी की रक्षा में अग्रणी संघर्षों को देखा जा सकता है, खासकर स्वदेशी और ग्रामीण आबादी के भीतर। जल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को दृश्यता देना, पुरुषों और महिलाओं के हितों को समान मान्यता देना और निर्णय लेने की जगहों तक समान पहुंच को बढ़ावा देना आवश्यक है। केवल इसी तरह से हम अधिक समानता की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

जल प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका को दृश्यता देना, पुरुषों और महिलाओं के हितों को समान मान्यता देना और निर्णय लेने की जगहों तक समान पहुंच को बढ़ावा देना आवश्यक है। केवल इसी तरह से हम अधिक समानता की ओर आगे बढ़ सकते हैं। जीवन महिलाओं पर निर्भर करता है, जैसे यह पानी पर निर्भर करता है। इसलिए हम गर्व से न केवल पानी, बल्कि सभी प्राकृतिक संसाधनों और उन पर निर्भर लोगों के जिद्दी रक्षकों के रूप में कार्य करते हैं। हालांकि हमेशा दिखाई नहीं देता, हमारा संघर्ष उतना ही मौजूद है जितना कि पानी जो हमारे ग्रह में कई तरह से यात्रा करता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक-दूसरे के समर्थन में एक साथ आएं हमारी जीत और हमारी हार में। हम अपने डर और अपने झगड़ों को साझा करना जारी रखें और सबसे बढ़कर, हम अपने क्षेत्र की रक्षा को कभी न छोड़ें, क्योंकि यह हमें परिभाषित करता है और इसके लिए हम सब एहसानमंद हैं। मैंने हमेशा सोचा है कि पानी में एक औरत का चेहरा होता है। अब हर दिन, मैं इसे और अधिक स्पष्ट रूप से देखती हूं। ☐☐

- योगिनी बापट, कोलकता

B.E Civil, M.E Env., पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की केंद्रीय टोली की सदस्या, कई अन्य सामाजिक संस्थानों के साथ कार्यरत है। WICCI बायोएनजाइम पश्चिम बंगाल कौंसिल की उपाध्यक्ष है।

आज भारत सूखा, बाढ़ और अपदाओं से ग्रसित है। आजादी के बाद भारत का दस गुना क्षेत्र सूखाग्रस्त हो गया है या बाढ़ग्रस्त क्षेत्र बढ़ गया है, जो कि करीब आठ गुना बढ़ा है। ज्यादात्तर छोटी नदियां लुप्त हो गई है या अपना अस्तित्व खो चुकी है। भारत में कुछ नदियां गंदा नाला बनकर वर्षभर बहती दिखायी देती है। इस संकट को हम सभी देख रहे हैं। नदियों के जल प्रवाह स्तर के बारे में, नदियों के चरित्र के बारे में, नदी और मानव के सेहत के संबंधों के बारे में कई पुस्तकें लिखी हुई है, जिसमें इनका वास्तविक चित्रण भी किया गया है। नदियां सभ्यता व संस्कृति का आधार रही है। सभी नदियों का जीव-जगत व व्यक्ति के रक्त की तरह अलग-अलग होता है। नदियाँ वर्षों से पूजनीय रही है। वर्तमान में हम भूल रहे है कि नदियों की सेहत और हमारी सेहत एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। नदी की सेहत खराब होगी तो भारत की रणनीति, सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक और आर्थिक दशा खराब होगी। भारत का जल संकट समाधान, नीर-नारी-नदी का सम्मान करने से ही होगा।

नदियों का संकट भूजल दोहन से जन्मा है। जब भूजल का स्तर कम हो जाता है, भण्डारण कम हो जाता है तो नदियों का जल प्रवाहित नहीं होता है। नदियों का जल प्रवाह बनाये रखना, उन्हें प्रदूषण, अतिक्रमण और दोहन से मुक्त बनाना वर्तमान संदर्भ में अति आवश्यक है। जल प्रदूषण से 66 प्रतिशत बीमारियां बढ़ी है। आज भारत के 264 जिलों में सूखा और कई जिलों में बाढ़ एकसाथ दिखाई देती है। इन समस्याओं से लोग लाचार-बीमार और बेकार होकर पलायन को मजबूर हो रहे है। पलायन लोगों की जीवन का संतुलन, मन-मानस का संतुलन बिगाड़ देता है। इसलिये नीर-नारी-नदी का सम्मान करें, जल समाधान तय है। नर्मदा समग्र संस्था द्वारा नदियों की सांस्कृतिक धरोहर बनाये रखने का तथा विकास व जल पर लगातार प्रयासरत है। महिलाओं की भूमिकाएं इस प्रयास को आगे बहुआयामी रूप से बढ़ाने के लिये बहुत आवश्यक है। हम कैसे अपने पारम्परिक ज्ञान को आगे बढ़ायें, उसमें वर्तमान तकनीकि को भी आधार बनाकर जन-जन तक फैलावें। यह सत्य है कि जल ही जीवन है, इसको बचाएें, संजोए, इस धरोहर को बनाये रखें। जल संरक्षण है एक संकल्प, नहीं इसका दूसरा विकल्प। आने वाली पीढ़ी, आने वाले भविष्य को बनाये रखना अपना कर्त्तव्य ही नहीं, दायित्व भी है। ☐☐

- मंजू जोशी, जयपुर

सचिव/सीईओ सिकोईडिकोन

मां और नदी (मां नर्मदा) एक ही सिक्के के दो पहलू हैं पवित्रता, निर्मलता और सरलता, इसी गुण के आधार पर जीव सृष्टि का पालन, पोषण, और संवर्धन करती हुई प्रकृति की समग्र सुंदरता को अपने आंचल में समाहित करती हुई, अविरत रुप से बहना उसका स्वभाव है। और इसीलिए मां जननी है, तो नदी (मां नर्मदा) जीवन है, नदी पर्यावरण का अटूट हिस्सा है और इसीलिए प्रकृति को संतुलित भी करती है और संवर्धन भी। माननीय अनिलजी नर्मदा समग्र का सिर्फ नेतृत्व ही नही, पर सही में एक माता का सुपुत्र होने का फर्ज निभाया, और उन्ही के कारण समग्र ना सिर्फ मध्यप्रदेश और गुजरात में मां नर्मदा एक जीवित इकाई है यह प्रस्थापित किया, मात्र नदी के रूप में ही नही, पर सही मायनों में एक मां का होना यह अनुभूति भी करवाई। नदी के साथ संवाद कार्यक्रम जैसे मां के आंचल की अद्भुत अनुभूति बनी और इससे जुड़े हर किसी को मां को अपने मन की बात करने का माध्यम बनाया। रक्षा बंधन और पर्वत पूजन समाज के जागरण एवम दायित्व निभाने के कार्य' म बने। हरियाली चुनरी, मां की फुलवारी, पर्यावरण पंचकोषी यात्रा भी जागरण के स्वाभाविक उपकरण बन गए और श्रद्धा एवं विज्ञान का अनोखा समन्वय प्रस्थापित किया। और ऐसे ही नर्मदा पुत्र माननीय अमृतलाल जी ने मां के सौंदर्य को वैश्विक पहचान दी। मां नर्मदा के आपके अनुभव और चित्र जैसे हमारे साथ बातचीत कर रहे हो। जीवन को सफल नहीं अपितु सार्थक बनाने की प्रेरणा देनेवाले अमृतलालजी और उनकी पत्नी कांताबेन नर्मदा का पर्याय बन चुके हैं। सही कहा था उन्होंने कि हमारी मृत्यु के बाद यदि कोई जोड़ी नर्मदा किनारे पर यात्रा करते मिले तो समझ लेना कि अमृतलाल और कांताबेन ने पुनर्जन्म ले लिया है। इन दोनो महात्मा को मेरा शत शत नमन। और आप सभी से एक निवेदन है कि नदी का घर, जो भोपाल में स्थित है उसके दर्शन करने एकबार जरूर जाएं। वहा मां नर्मदा का साक्षात्कार का अनुभव होगा।

इसके बाद :- नर्मदा समग्र नीर नदी एवं नारी पर जो विशेषांक निकालने जा रहा है वह बेहद उपयोगी होगा.... समस्त नर्मदा समग्र टीम को बहुत बहुत शुभकामनाएं ! □□

- डॉ. दीपिका विजय शाह, भरूच

एसोसिएट प्रोफेसर, नर्मदा कॉलेज, भरूच समन्वय चैरिटेबल ट्रस्ट ट्रस्टी,
मातृभाषा गौरव प्रतिष्ठान भरूच के सहसंयोजक, एवं हिंदू जागरण मंच गुजरात प्रान्त टोली की सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता

अगर रख सको तो मिठास हूं मैं, और अगर खो दो तो सिर्फ एक आस हूं मैं
रुक न पाए जो दुनिया के विचारों से, वो एक इतिहास हूं मैं
मैं पृथ्वी की सुंदर बनावट भी हूं, और तीव्र क्रोध में उठी बगावत भी हूं!
मैं पर्वतीय वेग का धीर हूं, मैं नीर , नदी और नारी हूं!

नारी बिन नर अधूरा , नीर बिन जीवन अधूरा और नदी बिन अधूरा है प्रकृति का श्रेष्ठ श्रृंगार। मनुष्य जीवन के इन तीनों प्रमुख आयामों को एक कतार में प्रस्तुत किया जाए तो मालूम होता है की इनकी महत्ता को जानकर उसके वास्तविक मूल्य को पहचानना ही कई सारी समस्याओं का हल हो सकता है। भारत वर्ष जैसे विविध देश में जहां नदियां, जन जातियां और जल स्त्रोत सब कुछ विविधता से परिपूर्ण होने के बाद भी एकता के गीत में मुग्ध है। यहां हर विविध आयाम का एक पहलू समान पाया जाता है और वह है उनसे जुड़ी समस्याएं। जहां जल स्त्रोतों के घटते क्रम और नदियों में बढ़ते प्रदूषण से हर गृहणी अर्थात नारी समस्या में पड़ चुकी है। नीर की कमी केवल एक नारी के घर को ही नही परंतु एक नदी के जलाशय में पनाह लेने वाले सैकड़ों जीव जंतुओं के घर के लिए भी संकट का विषय है। यदि इस जटिल समस्या का हल ढूंढ़ा जाए तो नारी का सशक्तिकरण, नीर का संरक्षण और नदी का प्रतिरक्षण ही सामाजिक एवं पर्यावरण संबंधी समस्याओं का हल है। भारत वर्ष एक महान देश है जहां नीर के प्रमुख स्त्रोत नदी को मां अर्थात स्त्री रूप में पूजा जाता है। नदियों को मां कहा जाता है। हमे केवल आवश्यकता है अपनी नीव को पहचान कर, हमारी संस्कृति के अनुसार आधुनिकता का उपयोग करने की। और फिर विश्व की कोई शक्ति हमे हमारे मूल्यों से न भटका सकती है और न ही हमे एक सशक्त देश बनने से रोक सकती है, क्योंकि - वेदों से निकली, पुराणों की वाणी हूं, नीर, नदी और नारी की कहानी हूं मैं।

- मनोज जोशी,
मुख्य समन्वयक, नर्मदा समग्र

नीर/नदी- मानव सभ्यता का विकास किसी न किसी जल स्त्रोत के किनारे हुआ है, चाहे वह सबसे पुरानी सिन्धुघाटी सभ्यता हो या कि वर्तमान की सभ्यतायें। बगैर जल के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जैसे-जैसे जल स्त्रोत प्रदूषित हुये, उस जल के सेवन से उस क्षेत्र की मानवता भी कुछ न कुछ मात्रा में प्रदूषित हुई है।

नारी - नये जीवन का सृजन भी एक नारी से ही संभव है, नारी ही नव जीवन का आधार है। नारी ही आने वाली पीढ़ी की दिशा-दशा बदलने का माध्यम है, जहां पर नारी सम्मान और गौरव पूर्ण व्यवहार होता है वहां की आने वाली पीढ़ी भी सृजनात्मक होती है।

वर्तमान समय में यदि हम नीर, नदी और नारी की शूचिता, पवित्रता बचाते है तो आने वाली पीढ़ी की शूचिता और पवित्रता को अपने आप ही बचा सकते हैं।

- लालाराम चक्रवर्ति
परिक्रमा आयाम प्रमुख, नर्मदा समग्र

नदी - एक कविता

डॉ. दिव्या गुप्ता

(लेखक - सामाजिक कार्यकर्ता, सदस्य राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, 'उजाला' संस्था की संस्थापक)

मैं नदी हूँ
और मैं नारी भी हूँ
मेरे होने से खुशहाली है,
मेरे समृद्ध होने से हरियाली है
मेरे बहने से निरंतरता है
मेरे भरे-पूरे होने से समृद्धि है
मेरे साथ चलती संस्कृति है
मेरे साथ चलती सभ्यता है
मेरे साथ चलती परम्परा है
मैं हूँ तो किनारा है
किनारे की बसावट है
किसान है, अन्नदाता है, मेहनत करता,
पसीना बहाता, कर्मठ, न थकने वाला
किसान है
उसका परिवार है,
जीवन के उतार-चढ़ाव अपनी झुर्रियों में
लपेटे पिता हैं
जीवन रस से ओत-प्रोत, निःस्वार्थ कर्म को
अपनी धर्म मानती माँ हैं,
सपने संजोती, पर माँ के आँचल और पिता
के साए में पलती सलोनी बेटी अल्हड़,
घुम्मकड़, बेफ़िक्री दिखाता बेटा
और मैं
घर की धुरी, नारी
धरती की कोख से जन्मी मैं
छोटी-सी, पतली-सी, बारीक-सी मैं
ऐसा लगता मानों, आगे चल भी पाएगी ?
लेकिन मैं तो मैं हूँ
असीम क्षमता वाली
असीम शक्ति वाली

बढ़ चली मैं उच्च श्रृंखल
इठलाती, इतराती, मदमस्त मेरा यौवन,
उल्लास भरा, उन्मुक्त
मेरा बहाव वेग भरा
कभी-कभी शोर भरा भी !
मेरा गान होता है,
मैं गीत गाती चलती हूँ
आँख बंद करके कभी बैठो
मेरे साथ
मेरा तान अन्दर तक
सकून भर देता है
वो आवाज़ कानों में देर तक
गूँजती रहती है
पर मेरी खुशी ज्यादा देर चलती नहीं
अंकुश लग गया मेरे आवेग पर,
मानों, बेड़ी में जकड़ दिया
मैं ठहर सी गई
ठिठक गई
रुक सी गई
अब मैं शांत हो गई हूँ
बस अब मेरा कर्म है बहना
मेरा जीवन अब मेरा नहीं रहा
अब मैं निःस्वार्थ भाव से बहती हूँ
सिर्फ़ देती हूँ
पालती हूँ, पोसती हूँ
मेरे किनारे बसे लोगों को,
मेरे किनारे की सभ्यता को,
मेरे सहारे फल दे रहे पेड़ों को,
जंगलों को,
उन पर बैठे पक्षियों को, जानवरों को
कहीं किसान खुश था तो कहीं जानवर
मेरे दोनों किनारों पर बसी
सभ्यता को मैं देती जाती हूँ
मैं खुश हूँ, इस त्याग में भी
पर यहाँ भी बेहद अवसाद
मुझे दिया मेरे मनुष्य ने,
मेरा अपमान हुआ,
मेरा तिरस्कार हुआ,

मुझे गंदा, कर गया,
मैला कर गया,
बार-बार लगातार,
मेरा चीर-हरण हुआ
आपने पाप कर
घोर पाप
मेरा क्या दोष था ?
मैंने आपका बुरा कब चाहा,
मैंने तो कभी आपका नुकसान नहीं चाहा
फिर आपने मुझे गंदा, मैला,
मटमैला क्यों कर ?
क्या नहीं डाला मुझ में ?
कभी धर्म के नाम पर
तो कभी अपनी छोटी सोच के कारण
कभी बासी फूल,
तो कभी गंदे रंगों से भरी तथाकथित
भगवान की मूर्ति
कभी किनारे बैठे मल-मल कर नहाते
लोगों ने साबुन डाला
तो कभी कपड़े धोने का साबुन
उफ़ मेरा वजूद मेरा नहीं रहा
पर मैं अन्दर ही अन्दर रोती रही
किसको कहती
रूको, सुनो, मत करो, मुझे परेशान
मत करो, पर तुम सुनते कहाँ हो
मानते ही नहीं ।
जब तक मैं सागर से मिलने,
विलीन होने, अपने उत्गर्ग तक पहुँची
मैं बहुत दुःखी हो गई हूँ
थक गई हूँ
हार गई हूँ
कभी समझ ही नहीं पाई
तुमने मेरा दोहन क्यों कर ?
अपमान क्यों कर ?
मैं तो निर्मल थी,
प्रेम से भरपूर देने में स्वयं को धन्य मानती,
नदी या नारी
पता नहीं !!! □□

नदी का संरक्षण और नारी का सम्मान-समाज की जिम्मेदारी

डॉ. आलोक व्यास

(लेखक - उपनिदेशक सिकोईडिकोन। सामाजिक संगठनों के क्षमतावर्द्धन एवं प्रबंधन के विशेषज्ञ)

> नदी और नारी के प्रति समाज की दृष्टि, उस संस्कृति की जीवन्तता का पैमाना है। नदियों का प्रदूषण संस्कृति का प्रदूषित होना है, नदियों का सूखना, संस्कृति का सूखना है और नदियों का अविरल बहना, संस्कृति का गतिमान होना है।

भारतीय परम्परा में नदियों को नारी स्वरूप में ही देखा-समझा गया है। गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा ये सभी नदियाँ कथा-कहानियों में नारी स्वरूप में ही पूजनीय मानी गई है। नारी और नदी में एक स्वभावगत साम्य है और यह साम्य ही दोनों के संबंधों की कड़ी को जोड़ता है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में जबसे हमने उपयोगिता के चश्में से दुनिया को देखना शुरू किया है, हम प्रकृति को भी इसी रूप में देखने लगे हैं कि इस पर भी हमारा अधिकार हें नदी हमें पानी दे, तभी वो हमारे लिए उपयोगी है। काफी हद तक महिलाओं को भी समाज ने इसी नजरिए से देखा है। आज महिलाएं समाज में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है और इस प्रयास में काफी हद तक सफलता भी मिली है, मगर असल मसला समाज की सोचमें बदलाव का है। देश के कई प्रांतों में महिला अत्याचार व घरेलू हिंसा के आंकड़े शर्मसार कर देने वाले हैं। ठीक इसी प्रकार नदियों का अस्तित्व भी समाज की बाजारवादी सोच के फलस्वरूप किए जा रहे शोषण के कारण दम घोट रहा है। नदियों को सिर्फ जल की उपलब्धता वाली वॉटर बॉडी के रूप में देखना सिर्फ एक भौतिक रिश्ता है जो आज की दुनिया देख रही है। जबकि हमारी परम्परा ने नदियों को प्रकृति की जीवंत ईकाई के रूप में देखा जो अपने साथ एक पूरे तंत्र को समेटे है, जिसमें जंगल, वनस्पति, जीव-जन्तु, पहाड़ शामिल है। वस्तुतः नदियों को केवल भौतिक ईकाई के रूप में देखने का कारण यह है कि हमारी चेतना में भौतिक समृद्धि, सुविधाएं और उन्हें हर हाल में पाने की लालसा इतनी प्रबल है कि हम इसके प्रबल वेग में प्रकृति से निरंतर दूर होते जा रहे हैं। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि जितने वेग से हम नदियों को प्रदूषित करेंगे, उनके सहज प्रवाह का अवरूद्ध करेंगे, जंगलों को काटेंगे, इससे कई गुना प्रबल वेग से जीवन दायिनी नदियॉं अपने रौद्र रूप में भीषण प्रलयकारी हो सकती है। यही बात नारी के अस्तित्व के लिए भी है। जिस नारी को ममता, करूणा, स्नेह की प्रतिमूर्ति के रूप में माना जाता है, यदि उसके सम्मान व गरिमा को ठेस पहुँचाई जाएगी तो उसके शक्ति स्वरूप की प्रचंडता में सबकुछ जलकर भस्म हो सकता है।

नदी और नारी के प्रति समाज की दृष्टि, उस संस्कृति की जीवन्तता का पैमाना है। नदियों का प्रदूषण संस्कृति का प्रदूषित होना है, नदियों का सूखना, संस्कृति का सूखना है और नदियों का अविरल बहना, संस्कृति का गतिमान होना है। इसी प्रकार नारी की गरिमा व सम्मान की सुनिश्चितता संस्कृति का गौरव है। आज दुनियाभर में जलवायु परिवर्तन जैसे संकट का असर नदियों पर तो पड़ ही रहा है, महिलाएं भी इस संकट में सर्वाधिक वंचित वर्ग में आती है। जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाले तूफानों या सूखे की स्थिति में महिलाओं के जीवन का खतरा बढ़ जाता है।

ग्रामीण इलाकों में दूर-दराज से पानी लाने का काम महिलाएं ही करती है। सूखे के कारण यह दूरी और बढ़ जाती है, जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। इसी प्रकार समुद्री तूफान या भयंकर बारिश में खुद को बचाने की सामर्थ्य पुरूष की अपेक्षा कम होने के कारण भी उनके जीवन का खतरा बढ़ जाता है। नदियों के संरक्षण और महिलाओं की गरिमा की सुरक्षा के लिए यद्यपि विश्व स्तर पर प्रयास किए जा रहे है, किंतु नीति-नियम बनाने या कानून, अधिनियम बनाने से बडा बदलाव नहीं हो पाएगा।

इसके लिए एक साझा प्रयास करना होगा, जिसमें सबसे जरूरी है अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजगता। समाज, और सरकार नदियों के संरक्षण के प्रति सामूहिक रूप से संवेदनशील होते हुए 'कर्त्तव्य चेतना' के बोध से इस काम में नहीं लगेंगे तब ही जमीनी स्तर पर नदियों का सदानीरा बने रहना और नारियों के सम्मानपूर्वक जीवन की प्रतिष्ठा संभव होगी। □□

'पेड़ नहीं, हम कटेंगे'

चिपको आंदोलन मूलतः उत्तराखण्ड के वनों की सुरक्षा के लिए वहां के लोगों द्वारा 1970 के दशक में आरम्भ किया गया आंदोलन है। इसमें लोगों ने पेड़ों को गले लगा लिया ताकि उन्हें कोई काट न सके। यह आलिंगन दरअसल प्रकृति और मानव के बीच प्रेम का प्रतीक बना और इसे 'चिपको' की संज्ञा दी गई। चिपको आंदोलन को प्रायः एक महिला आंदोलन के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसके अधिकांश कार्यकर्ताओं में महिलाएं ही थीं तथा साथ ही यह आंदोलन नारीवादी गुणों पर आधारित था। 26 मार्च, 1974 को जब ठेकेदार रेणी गांव में पेड़ काटने आये, उस समय पुरुष घरों पर नहीं थे। गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने कुल्हाड़ी लेकर आये ठेकेदारों को यह कह कर जंगल से भगा दिया कि यह जंगल हमारा मायका है। हम इसे कटने नहीं देंगी। मायका महिलाओं के लिए वह सुखद स्थान है जहाँ संकट के समय उन्हें आश्रय मिलता है।

> "गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने कुल्हाड़ी लेकर आये ठेकेदारों को यह कह कर जंगल से भगा दिया कि यह जंगल हमारा मायका है। हम इसे कटने नहीं देंगी। मायका महिलाओं के लिए वह सुखद स्थान है जहाँ संकट के समय उन्हें आश्रय मिलता है। वास्तव में पहाड़ी महिलाओं और जंगलों का अटूट संबंध है।

वास्तव में पहाड़ी महिलाओं और जंगलों का अटूट संबंध है। पहाड़ों की उपजाऊ मिट्टी के बहकर चले जाने से रोजगार के लिए पुरुषों के पलायन के फलस्वरूप गृहस्थी का सारा भार महिलाओं पर ही पड़ता है। पशुओं के लिए घास, चारा, रसोई के लिए ईंधन और पानी का प्रबंध करना खेती के अलावा उनका मुख्य कार्य है। इनका वनों से सीधा संबंध है।

वनों की व्यापारिक दोहन की नीति ने घास-चारा देने वाले चौड़ी पत्तियों के पेड़ों को समाप्त कर चीड़, देवदार के शंकुधारी धरती को सूखा बना देने वाले पेड़ों का विस्तार किया है। मोटर-सडकों के विस्तार से होने वाले पेड़ों के कटाव के कारण रसोई के लिए ईंधन का आभाव होता है। इन सबका भार महिलाओं पर ही पड़ता है। अतः इस विनाशलीला को रोकने का काम महिलाओं के अलावा और कौन कर सकता है। वे जानती हैं कि मिट्टी के बहकर जाने से तथा भूमि के अनुपजाऊ होने से पुरुषों को रोजगार के लिए शहरों में जाना पड़ता है। मिटटी रुकेगी और बनेगी तो खेती का आधार मजबूत होगा। पुरुष घर पर टिकेंगे। रेणी के पश्चात् (चिपको के ही क्रम में) 1 फरवरी, 1978 को अदवाणी गांव के जंगलों में सशस्त्र पुलिस के 50 जवानों की एक टुकड़ी वनाधिकारियों और ठेकेदारों द्वारा भाड़े के कुल्हाड़ी वालों के संरक्षण के लिए पहुँची। वहाँ स्त्रियाँ पेड़ों पर चिपक गयीं। इस अहिंसक प्रतिरोध का किसी के पास उत्तर नहीं था। इन्हीं महिलाओं ने पुनः सशस्त्र पुलिस के कड़े पहरे में 9 फरवरी, 1978को नरेन्द्र नगर में होने वाली वनों की नीलामी का विरोध किया। वे गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दी गईं।

25 दिसम्बर, 1978 को मालगाड़ी क्षेत्र में लगभग 2500 पेड़ों की कटाई रोकने के लिए जन आंदोलन आरंभ हुआ जिसमें हजारों महिलाओं ने भाग लेकर पेड़ कटवाने के सभी प्रयासों को विफल कर दिया। इस जंगल में 9 जनवरी, 1978 को सुन्दरलाल बहुगुणा ने 13 दिनों का उपवास रखा। परिणामस्वरूप सरकार ने तीन स्थानों पर वनों की कटाई तत्काल रोक दी और हिमालय के वनों को संरक्षित वन घोषित करने के प्रश्न पर उन्हें बातचीत करने का न्योता दिया। इस संबंध में निर्णय होने तक गढ़वाल और कुमायूं मण्डलों में हरे पेड़ों की नीलामी, कटाई और छपान बंद करने की घोषणा कर दी गई।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि जंगलों की अंधाधुंध कटाई के खिलाफ आवाज उठाने में महिलाएं कितनी सक्रिय रहीं हैं। चिपको ने उन पहाड़ी महिलाओं को जो हमेशा घर की चार दीवारों में ही कैद रहती थीं, बाहर निकल कर लोगों के बीच प्रतिरोध करने तथा अपने आपको अभिव्यक्ति करने का मौका दिया। इसने यह भी दर्शाया कि किस प्रकार महिलाएं पेड़-पौधे से संबंध रखती हैं और पर्यावरण के विनाश से कैसे उनकी तकलीफें बढ़ जाती हैं। अतः चिपको पर्यावरणीय आंदोलन ही नहीं है, बल्कि पहाड़ी महिलाओं के दुख-दर्द उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी आंदोलन है। □□

लक्ष्मी माता जी

माँ नर्मदा जी की परिक्रमा के उपरान्त लक्ष्मी माता जी के नाम से जानी जाने वाली माता जी ने स्वयं की प्रेरणा से माँ नर्मदा में प्रदूषण कम हो इस दिशा में विगत पाँच वर्षों से शालिवाहन मंदिर नावड़ाटोडी तह. कसरावद जिला खरगोन में अपनी कुटिया बनाकर आटे के दीपक बनाने का काम शुरू किया।

आप हर परिक्रमावासी को दो दीपक एवं दो बाती निःशुल्क प्रदान करते हैं। माँ नर्मदा के किनारे पर प्रचलित तीज-त्यौहारों पर माता जी निःशुल्क दीप प्रदान करते आ रही है। स्वेच्छा से जो कोई राशि देता है उसे माँ का प्रसाद समझकर ग्रहण करती है। आप जोधपुर मनावर जिला धार की मूल निवासी होकर पिछले 15 वर्षों से माँ नर्मदा जी के किनारे रहकर माँ नर्मदा जी की सेवा में समर्पित हैं।

मुन्नी दीदी जाधव

मुन्नी दीदी जाधव जो वनवासी क्षेत्र पानसेमल जिला बड़वानी में निवास करती है आप सेवा भारती संस्था से विगत 25 वर्षों से जुड़ी है। आपकी मुलाकात 2010 में स्व. श्री अनिल माधव दवे जी से होने के उपरांत उनकी प्रेरणा से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करना प्रारंभ किया। आपने वनवासी अंचल की बहनों को, युवाओं को जैविक कृषि के माध्यम से जैविक उर्वरक निर्माण, केचुआ खाद निर्माण, जीवामृत, घन जीवामृत इत्यादि प्रकार के रोजगारन्मुखी कार्यों से जोड़ा। आप स्वयं भी जैविक कृषि करती है। आप समय-समय पर नर्मदा जी किनारे नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं को जैविक खाद निर्माण का प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान करती है। आप इन कार्यों के साथ घर का संचालन, सेवा भारती के कार्य एवं अनेक पर्यावरणीय गतिविधियों में संलग्न रहती है।

श्रीमती प्रिया योगेश जोशी

सरोवर सेवा संकल्प संस्थान महेश्वर माँ नर्मदा जी के संरक्षण में आटे के दीपक बनाकर योगदान दे रही है। कार्य की शुरूआत की एक रोचक कहानी है। संस्था का टूर निमाड़ अंचल की निमाड़ अभ्युदय सेवा संस्थान लेपा तह. कसरावद जिला खरगोन पर था। संस्था का भ्रमण करने के उपरांत जब संस्था की संस्थापिका सुश्री भारती दीदी ठाकुर से सदस्यों का मिलना हुआ इसी बीच चर्चा के दौरान भारती दीदी ने एक रोचक बात संस्था के सदस्यों से कही कि आप लोग एकत्रित होकर आटे के दीपक बनाने का कार्य प्रारंभ कर नर्मदा किनारे विभिन्न पर्वों पर इनका सशुल्क वितरण प्रारंभ करें।

संस्था के सदस्य श्रीमती प्रिया योगेश जी जोशी एवं श्रीमती सिंधु राजेश जी जोशी जी ने विस्तार से इस विषय पर भारती दीदी से चर्चा कर संस्थान के भ्रमण के दूसरे दिन से ही इस कार्य का संस्था की बैठक लेकर श्रीगणेश किया। श्रीमती प्रिया जोशी ने बताया कि वह व्यक्तिगत रूप से विगत कई वर्षों से आटे बने हुए दीपक का ही नर्मदा जी में दान करती थी। आज सामूहिक रूप से इस कार्य का प्रारंभ कर बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही है। इस कार्य से संस्था की बहनों के बीच एक आत्मनिर्भरता का कार्य प्रारंभ हुआ है।

श्रीमती सिंधु राजेश जोशी

- आर्या श्रीवास्तव, विधि छात्रा,
निवासी - भोपाल

जागरूकता किसी उम्र या वर्ग का मोहताज़ नहीं होती और पर्यावरण प्रेम तो समझ के साथ साथ ही विकसित होना चाहिए।

भोपाल की मात्र 19 साल की छात्रा आर्य श्रीवास्तव इसका वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत कर रहीं हैं।

आर्या ने बड़े तालाब पर हो रहे अतिक्रमण को अपने स्कूल आते जाते और लोगो की ही तरह देखा मगर छोटी सी उम्र में गलत को सही करने की जिद में आर्या ने अवैध अतिक्रमण के खिलाफ ह्र' में याचिका दायर की, यही नहीं, खुद ही सारे सबूत इकट्ठा कर कोर्ट में बहस भी की, पर्यावरण संरक्षण की इस लड़ाई में अधिवक्ता श्री धरमवीर शर्मा ने आर्या का पूरा साथ दिया। आर्या की समाज के प्रति दायित्व एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना के कारण की उन्होंने अपने मौलिक एवं कानूनी अधिकारों के बारे में गहन छानबीन की और शायद इसी वजह से आर्या श्रीवास्तव अब विधि में स्नातक तक कर रहीं हैं। विधि के क्षेत्र में कार्य करने के लिए आर्या की जागरूकता और पर्यावरण प्रेम रंग लाया और राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने आर्या के पक्ष में फैसला सुनाते हुए भोपाल कलेक्टर को आदेशित किया है की राजस्व, नगर निगम और वेट लैंड अथॉरिटी के सहयोग से सीमांकन कर बड़े तालाब पर अवैध अतिक्रमण जल्द से जल्द हटाया जाये। हमारे आस पास अक्सर ऐसी अवैध और नुकसानदायक गतिविधियाँ होती रहती हैं जिनका विरोध कोई नहीं करता, अब इसका कारण चाहे राजनीतिक स्वार्थ में चुप्पी हो या जागरूकता में कमी, लेकिन इसका नुकसान तो कभी ना कभी हमें ही चुकाना होगा। भोपाल की आर्या श्रीवास्तव जैसी जागरूक नई पीढ़ी पर उनके माता पिता को तो गर्व होगा ही साथ ही ऐसी लड़कियां आज कल के युवा वर्ग के लिए पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभाने का जीता जागता उदहारण दर्शाता है। □□

गौरी जोशी बचपन से ही प्रकृति के प्रति प्रेमभाव रखती है, अपने बाल्य काल से ही वह कविताएं लिखती है, साथ ही वह 4R रिड्यूस, रियूज, रिसाइकल और रिपयूज के लिए सबका प्रेरित करती है। अपने छोटे भाई के साथ वह ईको-ब्रिक्स बनाती है, घर में रखें पुराने वस्तुओं का पुनः किसी कार्य में उपयोग करती हैं, जैसे पौधे लगाना, कुछ वस्तुएं बनाना, घर का कचरा घर में, घर पर ही कम्पोस्टिंग करना इत्यादि।

सेवा की अविरल धारा है, ये हर मर्त्य का सहारा है,
हर क्षण में निश्चल ममत्व सा, ये मां का रूप निराला है।

आस्था से भरी एक थाल लिए, मैं शीश नित नमाती हूं,
कल कल बहती इस धरा को, मैं अक्सर निहारा करती हूं।

सर्व दुःख हारिणी मैया मेरी, सारे कष्टों को सहती है,
वन और उपवन के जीवों को, अपनी शरण में पनाह देती है।

सौंदर्य की अतिशयोक्ति फीकी है, जिसके वर्णन में,
हर एक संकट का हल है, मात्र उसके स्मरण में।

मेकल के आंचल से, निकली ये नन्ही सी धारा,
बिंदु सिंधु से परिणित हो कर, बह चली निर्मल धारा।

- गौरी मनोज जोशी
कक्षा 12वीं केन्द्रीय विद्यालय भोपाल की छात्रा
निवासी - ग्राम खोरांवा, जिला खरगोन

रोली, सिन्दूरी, रोहिणी, रक्तांगा

वैज्ञानिक नाम - Mallotus Phillipensis कुल - Euphorbiaceae

डॉ. सुदेश वाघमारे

(लेखक - सेवानिवृत्त उप वनरक्षक, म.प्र. राज्य वनसेवा। नगरीय पौधारोपण, वन्याप्राणी प्रबंधन, जल संरक्षण और जैव विविधता में विशेषज्ञता, स्वतंत्र लेखक और भारत शासन के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की क्षेत्रीय साधिकार समिति के सदस्य)

छोटे आकार का वृक्ष है जिसकी शाखायें चारों ओर फैली रहती हैं। प्रायः नदियों और जलधाराओं के किनारे पाया जाता है और बड़े वृक्षों के नीचे भी सुगमता से जीवित रहता है। अक्सर सदारहित दिखाई देता है और मई-जून में यदि पर्णपातन होता है तो शीघ्र ही नई पत्तियां निकल आती हैं।

इसमें दो प्रकार की पत्तियां होती हैं- एक अण्डाकार और लम्बी तथा दूसरी भाले के आकार की (lanceolate) जिनका शीर्ष नुकीला होता है। पत्तियां ऊपर की ओर चिकनी-चमकीली तथा नीचे की ओर रोमिल तथा कुछ लाल ग्रंथियों (glands) वाली होती हैं। इस प्रजाति में नर पुष्प अलग वृक्ष पर और मादा पुष्प अलग वृक्ष पर आते हैं, अर्थात ये वृक्ष एकलिंगाश्रयी होते हैं। मादा पुष्प बहुत छोटे और नर पुष्प बड़े होते हैं। इनके पुष्प गेंहू की बाली के सदृश (spike) होते हैं। पुष्पन दिसम्बर-जनवरी माह में होता है। फलन फरवरी-मार्च में होता है। फल गोल तथा तीन कोष्ठ वाले होते हैं जिन पर रोमिल लाल रंग लगा रहता है। फलों की ऊपरी सतह पर लगे लाल रंग को फलों से पृथक किया जाता है। इस लाल रंग से कीमती सिल्क और ऊन के वस्त्र रंगे जाते हैं। भारतीय महिलायें इसके पावडर का उपयोग कुमकुम और सिन्दूर के रूप में करती रही हैं जो वर्तमान में रासायनिक पदार्थों द्वारा विस्थापित कर दिया गया है। इसका उपयोग घी एवं वनस्पति तेलों में एंटीऑक्सीडेंट के रूप में भी किया जाता है। पावडर में रेचक और कृमिनाशक गुणधर्म पाये जाते हैं। इस मलहम बनाकर दाद (ringworm) के उपचार में भी उपयोग किया जाता है।

भारत में सिन्दूरी नाम से एक नई सजावटी झाड़ी या छोटा वृक्ष भी लगाया जाने लगा है जो अमेरिकी मूल का हैं। भारत के वनों में यह प्राकृतिक रूप से नहीं पाया जाता। इसका वानस्पतिक नाम Bixa orellena है। इसके फल से भी लाल रंग प्राप्त होता है। □□

इस अंक में सिन्दूरी का वर्णन क्यों

नदी, नीर और नारी पर केन्द्रित इस अंक में सिन्दूरी वृक्ष का वर्णन इसलिए लिया गया क्योंकि यह तीनों विषयों से जुड़ा हुआ है। नदियों और जलधाराओं के समीप पाया जाता है, नीर प्रेमी वृक्ष है और भारतीय नारियों के कुमकुम और सिन्दूर में उपयोग किया जाता रहा है।

जंगल में कैसे पहचानें

1. छत्र फैला होता है तथा लघु-मध्यम आकार का वृक्ष है।
2. जल धाराओं के समीप होता है।
3. तरूण शाखायें और पत्तियां रोमिल होती हैं। पत्तियां ऊपर चिकनी, गहरे हरे रंग की और नीचे की ओर रोमिल तथा थोड़ी लाल ग्रंथियोंयुक्त होती हैं।
4. पर्णवृन्त बड़ा (3 सेमी) होता है तथा पत्ती में तीन आधार नाड़ियां होती हैं।
5. वृक्ष के आसपास मूल प्ररोहक (root suckers) भी मिल सकते हैं।

उल्लेखनीय कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत

पद्‌म श्री

डॉ.(श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन

डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन, एक सामाजिक कार्यकर्ता, समाज-विज्ञानी तथा एक समर्पित पर्यावरणविद् है। आप विगत 30 वर्षों से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं।

2. आपका जन्म फरवरी 16, 1948 को हुआ। आपने वर्ष 1972 में अंग्रेजी विषय, वर्ष 1976 में राजनीति-विज्ञान से स्नातकोत्तर तथा वर्ष 1981 में पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से विशिष्टता के साथ राजनीति-विज्ञान में एमफिल की डिग्री हासिल की। आपने वर्ष 2004 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से अपनी पीएच.डी पूरी की।

3. ग्रामीण एवं औद्योगिक विकास अनुसंधान केन्द्र, चंडीगढ़ में शोध-फैलो पद से त्यागपत्र देकर आप 'बार्ली डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट फॉर रूरल वूमन' स्थापित करने एक बहाई पथप्रदर्शक के रूप में इंदौर आ गईं। इस संस्थान के निदेशक के तौर पर अपनी 26 वर्ष की सेवा के दौरान आपने 6000 से अधिक युवा आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित करके उन्हें सबल बनाया है, जिनमें से अधिकांश मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और भारत के अन्य राज्यों के 500 गांवों से सर्वाधिक निरक्षर तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े परिवेश से आती हैं। वर्ष 2011 में आपने संस्थान में 100 आवासीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के विकास और संचालन तथा 8 पाठ्यक्रम पुस्तकें तैयार करने सहित उल्लेखनीय शैक्षणिक और शोध-कार्य करने के पश्चात् वर्ष 2011 में आपने संस्थान का दायित्व अपने उत्तराधिकारी को सौंप दिया। आप नव-साक्षर आदिवासी एवं ग्रामीण महिलाओं के लिए मासिक न्यूज़लैटर, 'कोकिला' की संस्थापक संपादक हैं, जिसे आपने वर्ष 1993 में प्रारंभ किया था तथा बाद में इसका नाम बदलकर 'बार्ली की दुनिया' कर दिया था। यह न्यूज़लैटर अभी भी बार्ली स्नातकों को दिया जाता है।

4. आपने गिनी-कृमि (गिनिया वर्म) से प्रभावित झाबुआ जिले के 302 गांवों से गिनी-कृमि के सफल उन्मूलन में अपना योगदान दिया तथा वर्ष 1987-88 में उन गांवों में 302 दिनों तक रहकर स्थानीय लोगों को इस मुकाबला करने का प्रशिक्षण दिया। यू एन ई पी ने आपके कार्य की सराहना करते हुए वर्ष 1992 में रिओ डि जेनेरियो में पृथ्वी-सम्मेलन के दौरान बार्ली संस्थान को 'ग्लोबल 500 रॉल ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया।

5. जून, 2011 में आप पति के निधन के पश्चात सनवडिया गांव आ गईं तथा मिशन को जारी रखा। आपने 50 आदिवासी भूमिहीन परिवारों के सशक्तिकरण के लिए काम करना आरंभ किया। गोद लिए गए चार व्यक्तियों के आदिवासी परिवार के साथ रहकर आपने अपने घर को जिम्मी मैकिगलिन सेन्टर फॉर सस्टेनबल डेवलपमेंट का रूप दे दिया। आपने प्रकृति पर निर्भरता के क्षेत्र में 20,000 से अधिक लोगों को शिक्षित किया और स्वयं भी प्रकृति आधारित जीवनयापन, आर्गेनिक वस्तुएं उगाने तथा खाने, सौर रसोई, सौर ड्रायर, सौर वॉटर हीटर, सौर ऊर्जा से चार्ज किए गए रेडियो, मोबाइल फोन और कंप्यूटर का प्रयोग करती हैं। आप जैव-खाद्य पदार्थ को लगाने, आर्गेनिक खाद्य पदार्थ, सौर खाद्य प्रसंस्करण को प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। आप कैंसर रोगियों के लिए काम करती हैं तथा धारणीय प्रौद्योगिकियों के अन्तरण के क्षेत्र में शोध और प्रोत्साहन दिए जाने संबंधी कार्य को जारी रखी हुई हैं।

6. आपकी सेवाओं को सरकार तथा अनेक गैर-सरकारी संगठनों से मान्यता मिली है। वर्ष 2001 में आपको 'उत्कृष्ट महिला सामाजिक कार्यकर्ता पुरस्कार', 'राष्ट्रीय अम्बेडकर साहित्य सम्मान' और 'ग्रामीण एवं जनजातीय महिला सशक्तिकरण पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वर्ष 2005 में आपको 'महिला समाज सेवी सम्मान' तथा वर्ष 2006 में 'जनजातीय महिला सेवा पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वर्ष 2008 में मध्य प्रदेश सरकार ने आपको 'राजमाता विजयराजे सिंधिया समाज-सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया। वर्ष 2010 में आपको 'लक्ष्मी मेनन साक्षरता पुरस्कार', वर्ष 2011 में 'नवोन्मुखी सामाजिक शिक्षक पुरस्कार', वर्ष 2012 में 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' तथा वर्ष 2013 में 'सौहार्दता पुरस्कार' के साथ-साथ 'वूमन ऑव सब्सटेंस अवॉर्ड' भी प्राप्त हुआ।

वर्ष 2015

पद्‌म श्री

श्रीमती सालुमरदा तिम्मक्का

श्रीमती सालुमरदा तिम्मक्का एक प्रसिद्ध पर्यावरणविद हैं। आपको कभी पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला और आपको दूसरे लोगों के घर में काम करना पड़ा। आपको गरीबी के कारण छोटी उम्र में ही पशु और भेड़ें चरानी पड़ी।

2. आपका जन्म 1 जनवरी, 1912 को कर्नाटक के तुमकुर जिले के एक दूर-दराज स्थान में हुआ था। श्रीमती तिम्मक्का का विवाह कर्नाटक के राम नगर जिले के मगदी तालुक के ग्राम हुलीकल, कुदूर होबली के श्री बिक्काला चिकैय्या के साथ हुआ था। इसके बाद आपने जीवन-यापन के लिए सड़क निर्माण, पत्थर तोड़ने और कुली का काम भी किया। विवाह के 25 वर्षों के बाद भी आपकी कोई संतान नहीं हुई। निःसंतान होने के कारण आपको समाज का तिरस्कार झेलना पड़ा। पति-पत्नी दोनों ही इस निरर्थक जीवन से निराश और दुःखी थे। एक दिन इस दुःख और निराशा के कारण दोनों ने अपने बच्चों के रूप में पौधे लगाने का निर्णय लिया। इसके बाद आपने अपने पति के प्रोत्साहन से अपने पूरे जीवन यथा संभव अधिक से अधिक बरगद के पेड़ लगाने का मिशन शुरू किया। शुरूआत में आपने अपने गांव हुलीकल से कुदूर तक सड़क के दोनों ओर 4 किलोमीटर की दूरी तक वृक्षारोपण किया। आपने केवल वृक्षारोपण ही नहीं किया बल्कि इन पेड़ों के बड़े होने तक इनकी देखभाल भी की। आपने अब तक पूरे भारत में अनगिनत पेड़ लगाए हैं।

3. 107 वर्ष की वृद्धावस्था में, आप अपने पोष्य-पुत्र श्री उमेश बी.एन. के साथ रह रही हैं। वन, मृदा, वन्यजीवन और जल संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए आपने श्री उमेश के साथ पूरे भारत की यात्रा की है। श्री उमेश ने भी आपके कार्य के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। वे आपके पर्यावरण संरक्षण के मिशन में भी शामिल हो गए हैं और वे "पृथ्वी बचाओ" (सेव अर्थ) आंदोलन को सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं।

4. हमारे पर्यावरण के प्रति आपके द्वारा दी गई बहुमूल्य सेवाओं को विश्व-व्यापी पहचान मिली है। आप ऐसी विशिष्ट प्रतिभा हैं जिन्होंने पर्यावरण के क्षेत्र में अपनी अतुलनीय और अथक प्रयासों से कर्नाटक राज्य को विश्व-व्यापी पहचान दिलाई है। कर्नाटक सरकार ने आपकी उपलब्धि को स्वीकार करते हुए, "सालुमरदा तिम्मक्का नेरलु योजने" (सालुमरदा तिम्मक्का शेड प्लान-1 वर्ष तक 3000 किलोमीटर तक वृक्ष लगाना) की घोषणा की। कर्नाटक सरकार ने राज्य के बजट वर्ष 2014-15, 2015-16, 2016-17 में और बजट वर्ष 2017-18 में कर्नाटक राज्य के सभी 224 विधान सभा क्षेत्रों में "सालुमरदा तिम्मक्का वृक्ष उद्यानवन" (सालुमरदा तिम्मक्का ट्री पार्क) के लिए प्रावधान किया है।

5. आपने कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए है। आपको डॉक्ट्रेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आपको वर्ष 2010 में हम्पी विश्वविद्यालय द्वारा "नडोजा पुरस्कार", वर्ष 1995 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार, भारत सरकार द्वारा वर्ष 1997 में इन्दिरा प्रियदर्शनी वृक्ष मित्र पुरस्कार, कर्नाटक सरकार द्वारा वर्ष 1997 में कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार, वर्ष 2007 में कर्नाटक राज्य पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया, बीबीसी ने वृक्ष संरक्षण में आपके द्वारा किए गए अनुकरणीय कार्य के लिए आपका नाम वर्ष 2016 में विश्व की सबसे अधिक प्रभावशाली और प्रेरक महिलाओं की सूची में शामिल किया है। आपको डॉ. बी.आर.अम्बेडकर राज्य पुरस्कार, गैत फ्री ब्रेबिएन्नी नेशनल अवार्ड, इन्दिरा रत्न पुरस्कार, महिला सशक्तिकरण पुरस्कार, दि ग्रीन मदर पुरस्कार, वनरानी पुरस्कार और बसावश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने सी बी एस ई पाठ्य पुस्तकों में आपके ऊपर लिखी गई एक कविता को शामिल करने की पहल की है। कर्नाटक सरकार ने साक्षरता कार्यक्रमों (साक्षरता आन्दोलन) में आप पर अध्याय शामिल करने और कक्षा 1,2,3,4,5,6,7,8 एवं 9 की मानक पाठ्य पुस्तकों और एस एस एल सी की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में आपकी उपलब्धियों से संबंधित अध्याय शामिल करने की भी पहल की है। कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तक में भी आपसे संबंधित एक अध्याय शामिल किया गया है।

वर्ष 2019

पद्‌म श्री

श्रीमती जमुना टुडू

श्रीमती जमुना टुडू एक प्रतिष्ठित भारतीय पर्यावरण कार्यकर्ता है। जैसा कि हम कहते हैं कि परोपकार घर से ही शुरू होता है, यह श्रीमती जमुना जो 'लेडी टार्जन ऑफ झारखंड' के रूप में जानी जाती हैं, पर बिल्कुल सटीक बैठता है। आप एक ऐसी नायक हैं जो अपने राज्य में लगभग बीस सालों से जंगलों को बचाने के लिए कार्य कर रही है।

2. आपका जन्म 19 दिसम्बर, 1980 में हुआ था। आपको प्रकृति से बहुत प्रेम हैं। आपने ओडिशा के मयूरभंज जिले के रंगा माटिया गांव के एक गरीब संथाल परिवार में जन्म लिया और पली-बढ़ी। आपके पिता श्री बाघीमुर्मु आपके प्रथम अध्यापक थे जिन्होंने आपको वनों, वन्य जीवों और प्रकृति से प्रेम करना और आदर करना सिखाया।

3. आपने श्री मान सिंह टुडू से विवाह किया जो चाकुलिया जिले के मुतुरखाम गांव के निवासी थे। विवाह के बाद, आपने अपने रोजमर्रा के जीवन में मुश्किलों का सामना करना पड़ा। आपको खाना बनाने के लिए जलावन की लकड़ी लाने के लिए बहुत दूर जंगल में जाना पड़ता था। उस समय वनोन्मूलन का दौर भी था। प्रतिदिन जिले में सैकड़ों पेड़ काटे जाते थे और हरा-भरा जंगल एक बंजर भूमि के रूप में बदल चुका था। यह आपके जीवन में परिवर्तन का दौर था जब आपने पेड़ों को बचाने और इसके लिए संघर्ष का निर्णय लिया। आपने अपनी यह यात्रा वन संरक्षण आन्दोलन के दौरान प्रारंभ की थी और गांव के लोगों को 'माफिया' के विरुद्ध लड़ने के लिए समझाना शुरु कर दिया था। आपने आस-पास के गांव की महिलाओं के साथ एक समूह बनाया और उसके बाद वन माफिया के विरुद्ध जंग शुरु हो गई।

4. अपने इस यात्रा के दौरान, आपने घाटशिला रेंज में कई हेक्टेयर जंगल को बचाया। माफियों द्वारा आपको कई बार निशाना बनाया गया और जान लेवा हमला भी किया गया परंतु आप जीवित बच गई। हाल ही में, आपने "वन प्रबंधन आवाम संरक्षण महासमिति" नामक एक संगठन की स्थापना की है। यह संगठन लगभग 350-400 गांवों में कार्य कर रहा है और इस महासमिति के बैनर तले 350 से अधिक समितियां हैं। इस प्रकार, आप गांव वालों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गई। आपने यह साबित कर दिया है कि एक अनपढ़ और गरीब व्यक्ति जो दूर-दराज गांव में रहता है, वह भी समाज में बदलाव ला सकता है यदि उसका नज़रिया इस प्रकार का हो।

5. आपने बहुत से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं। केन्द्र सरकार, झारखंड राज्य सरकार और कई अन्य संगठनों द्वारा आपको अवेकन इंडिया (एजेंट्स ऑफ चेंज) अवार्ड, ऑल ग्रास रूट वीमेन ऑफ दी डिकेड एचिवर्स अवार्ड, वीरांगना स्पेशल अवार्ड, वीमेन पॉवर अवार्ड, अपराजिता अवार्ड, वीमेन ट्रांसफोर्मिंग अवार्ड, 2017 में वीमेन एचिवर्स अवार्ड और बहुत से पुरस्कारों से नवाजा गया है।

वर्ष 2019

पद्‌म श्री

श्रीमती तुलसी गौड़ा

श्रीमती तुलसी गौड़ा कर्नाटक राज्य के अंकोला तालुक के होन्नाली गांव की भारतीय पर्यावरणविद् हैं। वह 30 हजार से अधिक पौधे लगा चुकी हैं और वन विभाग की नर्सरियों की देखभाल करती हैं। औपचारिक शिक्षा हासिल न करने के बावजूद उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भरपूर योगदान दिया है ।

2. श्रीमती गौड़ा का जन्म 30 अप्रैल 1943, को एक अत्यंत गरीब हलक्की जनजातीय परिवार में हुआ था। जब उनके पिता की मृत्यु हुई तो वह मात्र दो वर्ष की थी। अपने पिता की मृत्यु से उन्हें गहरा आघात लगा। वह कोई औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं कर सकी। उनकी मां एक दिहाड़ी मजदूर थी। गरीबी के कारण उन्हें बचपन से ही अपनी मां के साथ काम करना पड़ा। कम उम्र में ही उनका विवाह श्री गोविंदे गौड़ा से हुआ। लेकिन कुछ ही वर्षों में उनके पति का निधन हो गया। जीवन ने सभी बाधाओं परविजय प्राप्त करते हुए उन्होंने जो जीवन जीया वह पूरे देश के लिए अनुकरणीय बन गया।

3. श्रीमती गौड़ा पिछले छह दशकों से निःस्वार्थ भाव से पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में शामिल रही हैं। वह वन विभाग द्वारा संचालित वनीकरण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल रही हैं। उनके कार्य का सम्मान करते हुए, विभाग ने उनकी सेवा को नियमित कर दिया। 14 वर्ष तक नौकरी करने के बाद, वह सेवानिवृत्त हो गईं।

4. श्रीमती गौड़ा को उनके द्वारा लगाए गए प्रत्येक पौधे की प्रजाति, प्रत्येक पौधे के लाभ और उन्हें विकसित करने के लिए आवश्यक पानी की मात्रा की जानकारी है। पौधों के बारे में उनका ज्ञान किसी वनस्पति विज्ञानी से कम नहीं है। वह वनों के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रही हैं। विभाग में काम करते हुए उन्होंने अंकोला, येल्लापुर और सिरसी तालुक में जो पौधे लगाए थे, वे अब विशाल पेड़ बन गए हैं।

5. श्रीमती गौड़ा को विभिन्न संगठनों की ओर से अनेक सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

वर्ष 2020

उल्लेखनीय कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत

पद्म श्री

श्रीमती राहीबाई सोमा पोपरे

श्रीमती राहीबाई सोमा पोपरे, जिन्हें 'सीड मदर' के नाम से जाना जाता है, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में अकोले जनजातीय ब्लॉक के कोम्बलने गाँव के महादेव कोली जनजातीय समुदाय की एक जनजातीय किसान हैं।

2. 1 जनवरी, 1943 को जन्मी, श्रीमती पोपरे गरीबी के कारण स्कूल नहीं जा सकी और उन्होंने 10 साल की उम्र से ही काश्तकारी और गाय पालन में अपने परिवार का हाथ बंटाना शुरू कर दिया था। उनका विवाह 17 वर्ष की आयु में श्री सोमा पोपरे के साथ हुआ, जो स्वयं भी अशिक्षित थे। उनका पूरा परिवार कृषि पर निर्भर था। यद्यपि वह कभी स्कूल नहीं गई थी परंतु अभ्यास और अनुभव के जरिए उन्होंने कृषि–विविधता, वन्य खाद्य संसाधनों और पारंपरिक संस्कृति के बारे में जानकारी हासिल की। वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के एक कोर सपोर्ट ग्रुप, बीएआईएफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन से भी जुड़ी रही हैं। उन्होंने सैकड़ों देशी किस्मों के संरक्षण और किसानों को पारंपरिक फसल उगाने के लिए प्रोत्साहित करने का काम किया है। उन्होंने जैविक खेती, कृषि–जैव विविधता और वन्य खाद्य संसाधनों के बारे में जागरूकता फैलाने को अपने जीवन का एक ध्येय भी बना लिया है।

3. श्रीमती पोपरे ने अपने अनुभवों से यह महसूस किया कि कृषि–जैव विविधता और वन्य खाद्य संसाधनों के संरक्षण के लिए बीज की मौलिकता और पोषण सुरक्षा प्राप्त करना समय की जरूरत है। उन्होंने जामुन की एक नर्सरी शुरू की और इसे स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को उपहार के रूप में वितरित कर दिया। उन्होंने तब लोभिया अंकुरण, चावल, सब्जियां, बीन्स भूप्रजातियों की एक नर्सरी की स्थापना की और उन्हें अकोले ब्लॉक के 7 गांवों के 210 किसानों के साथ साझा किया। उन्होंने अपने आसपास ही एक जर्मप्लाज्म संरक्षण केंद्र की स्थापना करके धान, लोभिया, बाजरा, दलहन, तिलहन आदि सहित 17 विभिन्न फसलों की 43 भूप्रजातियों का संरक्षण किया और उनमें कई गुना वृद्धि की। उन्होंने घरेलू और साल भर के उपयोग के लिए एक किचन गार्डन भी तैयार किया है।

4. श्रीमती पोपरे, कलसुबाई परिसर बियानी संवर्धन समिति, अकोले की एक सक्रिय सदस्य हैं, और उन्होंने फसल विविधता और वन्य खाद्य संसाधनों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए अपने छोटे से घर में एक सामुदायिक बीज बैंक की स्थापना की है। वर्तमान में, 32 फसलों की लगभग 122 भूप्रजातियों का संरक्षण किया जा रहा है। उनमें नई कृषि तकनीक सीखने का जज्बा है। उन्होंने धान की खेती की एसआरआई पद्धति में विशेषज्ञता हासिल की, टमाटर और लोभिया के लिए खेती के तरीकों में सुधार किया, सहभागितापूर्ण बीज चयन, जैविक खेती तकनीक, नर्सरी की शुरुआत की और अहमदनगर जिले के लगभग 3500 किसानों को इनका प्रशिक्षण प्रदान किया।

5. श्रीमती पोपरे, कोम्बलने गांव में 5 स्वयं सहायता समूहों का नेतृत्व करती हैं और स्वयं सहायता समूह अभियान, ग्राम स्वच्छता, स्वच्छ रसोई, बीज संरक्षण और वन्य खाद्य प्रदर्शनियों में भागीदारी के लिए महिलाओं में जागरूकता पैदा कर रही हैं। महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों से बहुत से कृषि अधिकारी, वैज्ञानिक, किसान, विद्यार्थी उनके कार्य से प्रभावित होकर वहां बने संरक्षण केंद्र, लोभिया विविधता केंद्र, किचन गार्डन आदि देखने आते हैं।

6. श्रीमती पोपरे को विभिन्न सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया नारी शक्ति पुरस्कार 2018 शामिल है। उन्हें बीबीसी द्वारा 2018 की विश्व रैंकिंग में "सबसे प्रभावशाली और प्रेरणादायक महिला" के रूप में चुना गया था। कांस फिल्म महोत्सव में बीज संरक्षण के उनके अग्रणी प्रयासों पर एक वृत्तचित्र को पुरस्कृत किया गया था। उन्हें राज्य सरकार, मीडिया आदि से अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

वर्ष 2020

पद्म श्री

श्रीमती रंगम्माल अलयस पापम्माल

श्रीमती रंगम्माल अलयस पापम्माल तमिलनाडु कोयंबटूर जिले की एक किसान हैं।

2. 10 मार्च 1916 को जन्मी, श्रीमती पापम्माल ने बाल्यकाल में ही अपने माता–पिता को खो दिया था। उनका लालन–पालन उनकी नानी ने किया । वह किराने की दुकान से अपनी आजीविका चलाती थीं। फिर उन्होंने एक होटल शुरू किया और अपनी आय से उन्होंने 10 एकड़ जमीन खरीदकर उस पर जैविक खेती शुरू की।

3. श्रीमती पापम्माल कई वर्षों से बाजरा (जैसे थिताई, सामाई, रागी, सोलम, काम्बू), दालें (जैसे बंगाल चना, काला चना, काली आंखों वाली सेम, चौड़ी सेम, चिक मटर, काउ मटर, हरी मूंग दाल, घोड़ा चना, लाल चना) और सब्जी की खेती कर रही हैं। वह जैव उर्वरकों के रूप में गोबर और अपने खेत के पौधों के अवशेष का प्रयोग कर रही हैं। उन्होंने अपने पड़ोसियों को भी जैव उर्वरक के तौर पर अपघटित गोबर को इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

4. श्रीमती पापम्माल विभिन्न संगठनों में अलग–अलग पदों पर आसीन रही हैं। उन्होंने 1959 में कोयंबटूर के थेक्कामपट्टी पंचायत के निर्वाचित वार्ड सदस्य के रूप में कार्य किया; 1964 में वह करमादाई पंचायत संघ, कोयंबटूर की पार्षद के रूप में चुनी गईं; उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को सेवाएं प्रदान करने के लिए माथर संगम (महिला संघ) की अध्यक्षता की।

5. श्रीमती पापम्माल पिछले 45 वर्षों से कोयंबटूर स्थित तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के किसान परिचर्चा समूह की एक सक्रिय सदस्य रही हैं। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी अक्सर उनकी जमीन का दौरा करते हैं और उन्होंने कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकी प्रयोग करने में उनकी मदद की है। उन्होंने बहुत सारे पुरस्कार और प्रशंसा के माध्यम से उनके समर्पण और रुचि को भी प्रोत्साहित किया है। श्रीमती पापम्माल ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर के 12 विभिन्न कुलपतियों की भी सराहना प्राप्त की है।

वर्ष 2021

पद्म श्री

श्रीमती कमला पूजारी

श्रीमती कमला पूजारी ओडिसा की एक ख्यातिप्राप्त कृषक हैं।

2. आपका जन्म वर्ष 1955 में कांतिकीगुडा ब्लॉक के आदिवासी गांव बायपारीगुड़ा के शांत एवं सुरम्य वातावरण में हुआ था। आपने कुपोषण प्रभावित जिला कोरापुट में लुप्तप्राय और दुर्लभ प्रकार के बीजों जैसे कि धान, हल्दी, तिली, काला जीरा, महाकांता, फूला, घंटिया का संग्रहण किया जोकि राष्ट्रीय कर्तव्य के प्रति आपकी समर्पण और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

3. श्रीमती पूजारी ने अपने पूरे जीवन काल में कभी भी असफलता स्वीकार नहीं की है। किसानों को मजबूत बनाने तथा विकसित करने के आपके ममतामयी प्रयासों से किसान काफी प्रोत्साहित हो रहे हैं। कृषि वैज्ञानिक भी आपके द्वारा संरक्षित संसाधनों से लाभान्वित हो रहे हैं। आपके दृष्टिकोण तथा संरक्षणवादी सोच से राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी क्रांतिकारी सुधार आये हैं। आप अपने शोध कार्य में अनवरत रूप से लगी हुई हैं। आपने जैविक खाद का उपयोग करके सफलतापूर्वक खेती-बाड़ी की है। आप स्थानीय/पारंपरिक धान के संरक्षण के लिए भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत रही हैं।

4. आपके इन कार्यों के लिए आपको राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है। वर्ष 2002 में आपको वर्ल्ड थिंकिंग कन्वेंशन में जोहान्सबर्ग में सम्मानित किया है। वर्ष 2004 में, राज्य सरकार ने आपको सर्वोत्कृष्ट महिला कृषक के रूप में सम्मानित किया। आपने धान की सैकड़ों स्थानीय किस्मों को संरक्षित करने और जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2002 में दक्षिण अफ्रीका में इक्वेटर इनीशिएटिव अवॉर्ड भी जीता है। आपको वर्ष 2003 में नई दिल्ली में कृषि विशेषज्ञ पुरस्कार भी मिला है।

वर्ष 2022

पद्म श्री

श्रीमती बसन्ती देवी

श्रीमती बसन्ती देवी एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपने प्रयासों के लिए व्यापक रूप से जानी जाती हैं।

2. 30 नवंबर, 1958 को उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले की कनालीछीना तहसील के ग्राम डिगरा में जन्मीं श्रीमती बसन्ती ने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद, अपने पैतृक गाँव को छोड़ दिया और सामाजिक सुधार के लिए कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल, लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा के साथ जुड़ गईं। उन्होंने सामाजिक सुधारों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे वन संरक्षण, महिला सशक्तीकरण आदि में योगदान दिया है। उन्होंने समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए महिला समूहों का गठन किया। उन्होंने महिला समूहों के माध्यम से वनों को बचाने के लिए अभियान शुरू किया और घरेलू हिंसा तथा महिलाओं के प्रति अत्याचार को रोकने के लिए जन जागरूकता भी शुरू की।

3. श्रीमती बसन्ती ने कोसी नदी के संरक्षण और अन्य सामाजिक बुराइयों के प्रति संघर्ष करने के लिए कौसानी से लोद तक, सम्पूर्ण घाटी के 200 गांवों की महिलाओं का एक विशाल समूह बनाया। उन्होंने वर्ष 2008 में गांव की पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी के लिए अभियान शुरू किया। उन्होंने घरेलू हिंसा और पुरुष उत्पीड़न का सामना करने वाली महिलाओं की मुक्ति के लिए अभियान भी शुरू किया। वर्ष 2014 में, उन्होंने 51 गांवों की 150 महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में उनकी सहायता की। वह 12 साल की आयु में ही विधवा हो गई थीं। बाल विवाह की भुक्तभोगी होने के कारण, उन्होंने बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया।

4. श्रीमती बसन्ती को उनके निःस्वार्थ विशिष्ट सामाजिक कार्यों के लिए नारी शक्ति पुरस्कार; देवी पुरस्कार और फेमिना महिला जूरी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

वर्ष 2022

विश्व रेडियो दिवस पर
श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी का संदेश

विश्व रेडियो दिवस है, इस दिवस के दिन मैं सब नागरिकों को अपनी और से खूब-खूब बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि इसी अवसर पर म.प्र. में नर्मदा जी के क्षेत्र में रेडियो रेवा शुरू किया जा रहा है। इसके संपूर्ण संचालन की जिम्मेदारी नर्मदा समग्र ने ली है। नर्मदा समग्र पहले से ही नदियों को बचाने, नदियों के पुर्नजीवन के लिए निरंतर काम करता आ रहा है। मान. अनिल दवे जी जो आज हम सबके बीच नहीं है, उन्होंने इसकी नींव रखी थी और स्वयं रहते हुए भी इस दिशा में उन्होंने काफी काम किया था लेकिन उनकी प्रेरणा से आज नर्मदा समग्र से जुड़े सभी हमारे मित्र इस काम को आगे बढ़ा रहे है। मेरे लिए निश्चित प्रसन्नता की बात है और रेडियो रेवा आरंभ हुआ है इससे निश्चित रूप से इस पूरे परिक्षेत्र में निवास करने वाली लोग जुड़ेंगे और पर्यावरण, नदी के महत्व को इसके माध्यम से समझने का उन्हें अवसर मिलेगा और सभी किसाना भाइयों और बहनों को मैं यह कहना चाहता हूं कि कुल मिलाके रेवा रेडियों के माध्यम से जो सूचनाएं, जो ज्ञान आप तक पहुंचे आप उसका पालन करें और इस उद्देश्य की सफलता में अपना योगदान दें। यह वर्ष कृषि के क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण वर्ष है। पर्यावरण कि रक्षा और भूमि की रक्षा और स्वस्थ भोजन लोगों को मिले इसके लिए भारत सरकार ने नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय प्राकृतिक पद्धति की खेती की शुरूआत की है इसके लिए 1584 करोड़ रूपये का बजट प्रावधान किया है। इस वर्ष हम लोग 479 करोड़ रूपया प्राकृतिक खेती पर खर्च करेंगे। यह गौ आधारित खेती है। इससे हम गाय को भी बचा सकेंगे किसानों की लागत को भी कम कर सकेंगे और स्वच्छ कृषि उत्पादन होगा जिसे ग्रहण करके मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से भी यह खेती बहुत अनुकूल है और इसलिए इस दिशा में भी आप सबके पास काफी सूचनाएं आयेगी वो भी आप सब ग्रहण करिए और साथ ही साथ यह वर्ष 2023 है हम सब जानते है हमारे देश में छोटे किसान बड़ी संख्या में है और बहुत बड़ा रकका खेती का क्षेत्र है जो वर्षा आधारित सूखी खेती है। ऐसे स्थानों पर मिलेट्स यानी श्री अन्न बाजरा, श्री अन्न ज्वार, श्री अन्न रागी, श्री अन्न कोदो ये जो मोटा अनाज कहते है अपनी भाषा में इसका प्रचार-प्रसार के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 2023 को पूरी दुनिया में मिलेट्स ईयर के रूप में मनाने का फैसला किया है। इसके सार कार्य' म देशभर में हो रहे है। मोटे अनाज को श्री अन्न बाजरा, ज्वार, रागी को भोजन की थाली में प्रतिष्ठा पूर्वक स्थान फिर से स्थापित हो जिससे मनुष्य का स्वास्थ्य भी ठीक रहे मनुष्य के भोजन में पोषकता का जो महत्व होना चाहिए वो रहे और साथ ही साथ हमारे जो छोटे किसान है वो मिलेट्स की खेती करे।

उत्पादन बढ़ाये उत्पादकता बढ़ाये बड़ी मात्रा में एवरी स्टार्ट लोगों नेउसके प्रोसेसिंग को प्रारंभ किया। कई प्रकार के पोषक पदार्थ बनाये जिनकी देश में भी मांग है और दुनिया में भी मांग है और निश्चित रूप से मिलेट्स से जो पदार्थ बनेंगे उसका एक्सपोर्ट भी होगा देश में भी उनका उपयोग होगा और भोजन की थाली में उन्हें महत्व मिलेगा तो निश्चित रूप से हमारे किसान कि आमदनी बढ़ेगी। इस दृष्टि से भी मैं समझता हूं कि विश्व रेडिया दिवस है उस अवसर पर जब रेडियो रेवा आरंभ हो रहा है। उस दिन मैंने भी अपने स्वास्थ्य की दो बातें रखी। मुझे लगता है कि आप सब लोगों को अच्छी लगेगी और आप सब लोगों के लिए ऋणी हू। □□

विश्व रेडियो दिवस (13.02.2023) के अवसर पर नर्मदा समग्र द्वारा जबलपुर में संचालित
''रेवा रेडियो 90.8 एफ.एम.'' के theme और logo का अनावरण केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर द्वारा किया गया।

आदरणीय श्री सुरेश सोनी जी, अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने
अपने जबलपुर प्रवास के दौरान ''रेवा रेडियो'' केंद्र का अवलोकन किया।
साथ ही कार्य एवं आगामी योजना की सराहना करते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए
मोदी सरकार की पहल

कुलदीप सिंह राठौर
(लेखक - एडिशनल पीएस केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री।)

हमारे लोकप्रिय व दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पारंपरिक रासायनिक गहन कृषि के परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस करते हुए, देशवासियों के हित में प्राकृतिक खेती को जनांदोलन बनाने पर जोर दिया है। उन्होंने खेती को रसायन विज्ञान प्रयोगशाला से बाहर निकालकर प्रकृति की प्रयोगशाला से जोड़ने की आवश्यकता रेखांकित की है। इसके अलावा, वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने बजट में, पहले चरण में गंगा नदी के किनारे 5 किलोमीटर के कारिडोर में रसायनमुक्त प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और कृषि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वित्त मंत्री के हाल के बजट भाषण में अगले तीन वर्षों में 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती को अपनाने की सुविधा प्रदान करने की परिकल्पना की गई हैं। इसके लिए 10 हजार जैव-इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित किए जाने हैं।

1960 के दशक में शुरू हुई कृषि-तकनीकी क्रांति, जिसे हरित क्रांति नाम से जाना जाता है, ने भारतीय कृषि को बदल दिया था। इसने निस्संदेह देश को खाद्यान्न (विशेषकर चावल-गेहूं) उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया, इस प्रकार लाखों किसानों के लिए खाद्य व आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित की, तथापि, उर्वरकों, कीटनाशकों, सिंचाई, जुताई जैसी प्रौद्योगिकियों के अंधाधुंध उपयोग से गंभीर समस्याएं उत्पन्न हुई जिससे कृषि की स्थिरता को लेकर चिंता होना स्वाभाविक है। हमारे समक्ष मृदा स्वास्थ्य, जैविक पदार्थों की उपलब्धता, पानी एवं पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता और उत्पादन लागत आदि जैसे सवाल अहम हैं। कृषि क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए खेती को प्रकृति के अधिक अनुकूल बनाने की आवश्यकता है, ताकि खरीदे गए (ऑफ-फार्म) इनपुट पर निर्भरता कम हो सकें और जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं को कम कर अधिक लचीलापन सुनिश्चित किया जा सके।

सबसे पहले, पारंपरिक खेती की तुलना में प्राकृतिक खेती और इसके लाभों को समझना अत्यावश्यक है। प्राकृतिक खेती एक कृषि-पारिस्थितिक दृष्टिकोण है जहां कृषि प्रणाली प्राकृतिक जैव विविधता को एकीकृत करती है, पौधे और जानवर दोनों के माध्यम से मृदा की जैविक गतिविधि को प्रोत्साहित करती है और खाद्य उत्पादन प्रणाली के साथ पनपने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाती है। भारतीय संदर्भ में प्राकृतिक खेती पौधों की विविधता, मृदा के वातन, मल्चिंग के माध्यम से बायोमास रीसाइक्लिंग, स्वदेशी गाय के गोबर और मूत्र आधारित माइक्रोबियल फॉर्मूलेशन के उपयोग के माध्यम से मृदा कायाकल्प और सभी रासायनिक आदानों के बहिष्करण व ऑन-फार्म वानस्पतिक मिश्रण के माध्यम से पौधों की सुरक्षा पर आधारित है।

प्राकृतिक खेती के लाभ

किसानों को खरीदे गए आदानों से आजादी, बेहतर अर्थशास्त्र के साथ लागत में कमी, गाय के गोबर व गोमूत्र से मिटटी की उर्वरता का प्रतिस्थापन, मात्रा और गुणवत्ता के साथ निरंतर उत्पादकता, संसाधन संरक्षण (मुख्य रूप से पानी) और एकाधिक और बहुस्तरीय खेती दृष्टिकोण के माध्यम से फसल सघनता में वृद्धि तथा स्वस्थ मृदा, स्वस्थ वातावरण और जानवरों और मानव के लिए स्वस्थ भोजन। प्राकृतिक खेती को खरीदे गए आदानों पर किसानों की निर्भरता को कम करने और मृदा के स्वास्थ्य को बहाल करने के लिए एक आशाजनक उपकरण के रूप में भी पहचाना गया है। यह कृषि पद्धतियों को एकल फसलों से विविध बहु-फसल प्रणाली में परिवर्तित करने पर जोर देती है। गाय का गोबर और गौमूत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे बीजामृत, जीवामृत और घन-जीवामृत जैसे विभिन्न इनपुट खेत पर बनाए जाते हैं जो मृदा में पोषक तत्वों और जीवन का स्रोत होते हैं। अन्य पारंपरिक पद्धतियां जैसे बायोमास के साथ मृदा की मल्चिंग करना या मृदा को पूरे वर्ष हरे आवरण से ढके रखना, यहां तक कि बहुत कम पानी की उपलब्धता की स्थिति में भी पहले वर्ष से ही निरंतर उत्पादकता सुनिश्चित करती हैं।

प्राकृतिक खेती के 5 आधार हैं

(i) जीवामृत बनाने हेतु माइक्रोबियल गतिविधि को उत्प्रेरित करना;

(ii) एक अन्य माइक्रोबियल कल्चर, बीजामृता का उपयोग करके कवक और मृदा जनित रोगों से नई जड़ों की सुरक्षा;

(iii) स्थिर मृदा जैविक पदार्थों का उत्पादन व फसल अवशेष मल्चिंग (आच्छादन) द्वारा ऊपरी मृदा का संरक्षण;

भारत सरकार द्वारा 2019-20 से भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) योजना के माध्यम से भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। भूजोत धारक श्रेणी के किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है, परंतु सरकारी प्रयासों के माध्यम से लक्षित किए जा रहे अधिकांश किसान छोटे व सीमांत किसान हैं। प्रधानमंत्रीजी के आह्वान के अनुसरण में, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए मिशन मोड दृष्टिकोण अपनाया गया है। सरकार का लक्ष्य राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के माध्यम से आत्मनिर्भर प्राकृतिक कृषि पद्धति का कार्यान्वयन करना है।

(iv) मृदा संरचना में सुधार करके और जुताई को कम करके मृदा वातन (वाफसा) और (1) वर्षभर उत्पादन के लिए बहुफसलन, कीट नियंत्रण।

आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश व गुजरात में प्राकृतिक कृषि आंदोलन पहले से ही 5 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र के कवरेज के साथ जमीनी स्तर पर जारी है। भारत सरकार द्वारा 2019-20 से भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) योजना के माध्यम से भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है व 4.09 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र के रूपांतरण की प्रक्रिया जारी है। यद्यपि, सभी भूजोत धारक श्रेणी के किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है, परंतु सरकारी प्रयासों के माध्यम से लक्षित किए जा रहे अधिकांश किसान छोटे व सीमांत किसान हैं। उस क्षेत्र में उगाई जा रही सभी प्रकार की फसलों की खेती प्राकृतिक खेती के तहत की जा रही है। प्राकृतिक खेती न तो फसल विशिष्ट है और न ही स्थान विशिष्ट है, लेकिन खेती के तौर-तरीके अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग हो सकते हैं।

प्रधानमंत्रीजी के आह्वान के अनुसरण में, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए मिशन मोड दृष्टिकोण अपनाया गया है। सरकार का लक्ष्य राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के माध्यम से आत्मनिर्भर प्राकृतिक कृषि पद्धति का कार्यान्वयन करना है। चूंकि प्राकृतिक कृषि पद्धति में गहन ज्ञान और बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और प्रारंभिक सहायता शामिल है, इसलिए सरकार ने खेत पर प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के लाभों को ध्यान में रखते हुए तथा इस पद्धति के लाभों

के संबंध में किसानों को स्वेच्छापूर्वक आकर्षित करने पर जोर देते हुए गहन जागरूकता और दीर्घकालिक प्रारंभिक सहायता देने की शुरूआत करने का प्रस्ताव दिया है।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन-बीपीकेपी को बढ़ाना

मिशन की रणनीतियों में ज्ञान संग्रह, प्रसार, प्रशिक्षण, प्रदर्शन, प्रारंभिक सहायता और किसानों का निरंतर क्षमता निर्माण करना शामिल है। प्रमुख राज्य और प्राकृतिक खेती करने वाले किसान ज्ञान प्रदान करेंगे जिसका प्रसार किया जाएगा। सफल प्राकृतिक किसानों के खेत केंद्र बिंदु होंगे, जहां किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा और एनएफ तकनीक का प्रदर्शन किया जाएगा।

कार्यान्वयन की कार्यनीति निम्नलिखित पर केंद्रित होगी

आंध्रप्रदेश, गुजरात और हिमाचल प्रदेश जैसे अग्रणी राज्य इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए आधार तैयार करेंगे। प्रशिक्षण और अध्ययन दौरों व सर्वोत्तम प्राकृतिक किसानों के साथ परिचर्चा के माध्यम से मिशन अधिकारियों की क्षमता निर्माण पर ध्यान दिया जाएगा। प्राकृतिक खेती करने वाले किसान ज्ञान प्रदर्शन केंद्रों के रूप में कार्य करेंगे, जो व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करेंगे। सर्वोत्तम पद्धतियों का दस्तावेजीकरण और प्रसार किया जाएगा। फार्म फील्ड स्कूल दृष्टिकोण द्वारा क्षमता निर्माण। इच्छुक किसानों को क्लस्टरों के गठन हेतु पंजीकरण कराना होगा। एनएफ क्लस्टरों को किसान केंद्रित, स्थानीय सत्यापन-आधारित प्रमाणन प्रणाली के तहत प्रमाणित किया जाएगा।

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) और राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केंद्र (एनसीओएनएफ) क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और प्रमाणन और बाजार सुगमता के लिए ज्ञान भागीदारों के रूप में मिशन चलाने

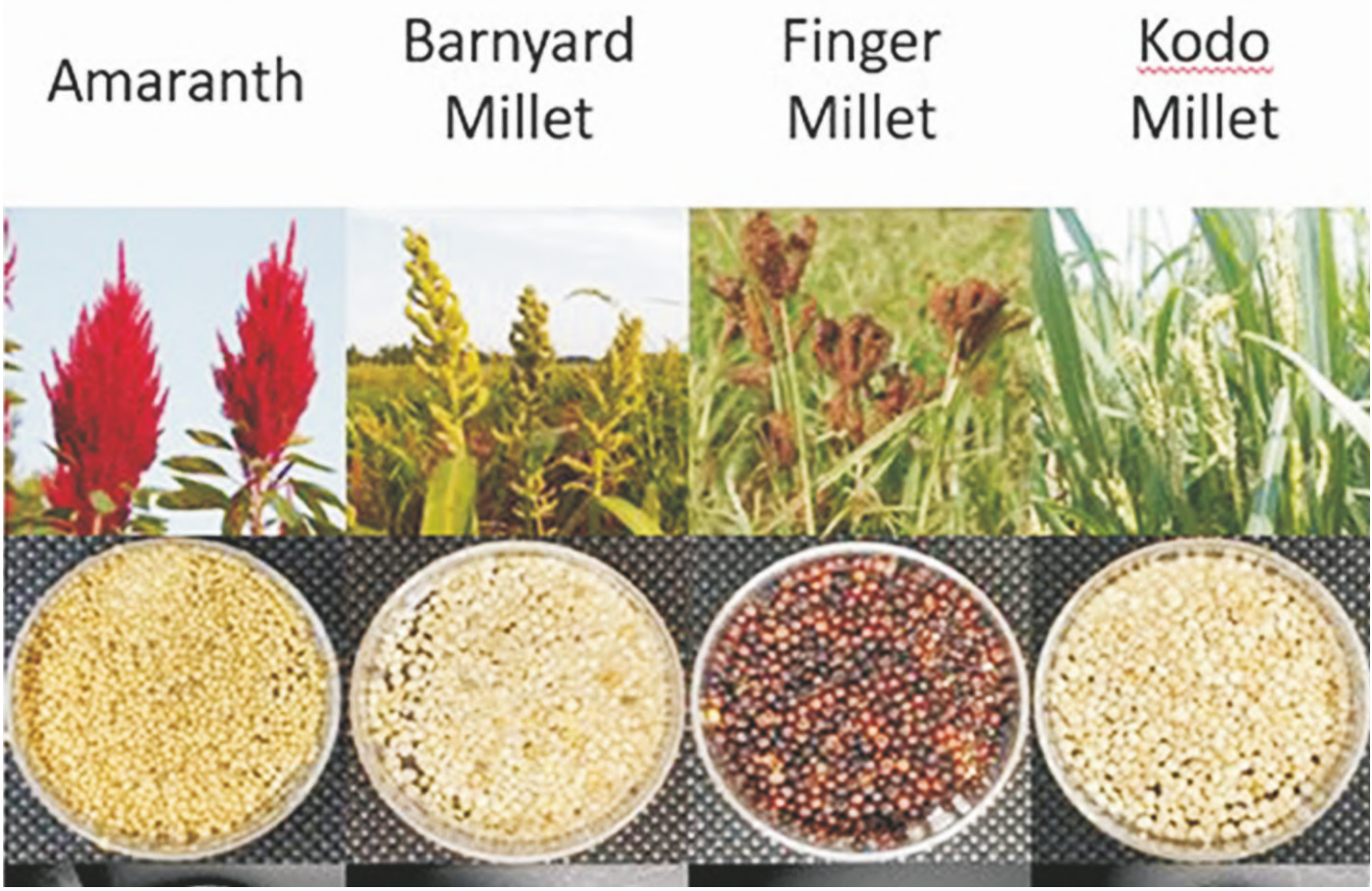

वाले संस्थानों का नेतृत्व करेंगे। मंत्रालय ने आजादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में दिनांक 22.03.2022 को मैनेज को प्राकृतिक खेती के संबंध में ग्राम प्रधानों के लिए 750 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का कार्यभार सौंपा है। मैनेज ने व्यवसायियों के परामर्श से ग्राम प्रधानों और मास्टर ट्रेनरों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार की है तथा इस अध्ययन सामग्री को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा गठित समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है। मैनेज ने आईसीएआर संस्थानों और एसएयू से प्राकृतिक खेती से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों, सर्वोत्तम पद्धतियों और सफलता की कहानियों को एकत्रित किया है। प्राकृतिक खेती और ज्ञान कोष के संबंध में एक वेबपेज बनाया गया है तथा प्राकृतिक खेती से संबंधित जानकारी इस वेबसाइट पर अपलोड की गई है।

प्राकृतिक कृषि सिद्धांत एवं पद्धति उन्मुखीकरण के संबंध में मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और देशभर में ग्राम प्रधानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के लिए 616 प्रतिभागियों को मास्टर ट्रेनर के रूप में मान्यता दी गई। ग्राम प्रधानों के लिए प्राकृतिक खेती से संबंधित अध्ययन सामग्री 22 क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार की गई है और मैनेज की वेबसाइटों पर होस्ट की गई है तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम में उनका उपयोग करने के लिए सभी राज्यों के साथ साझा की गई है। मैनेज ने देशभर में 56,952 ग्राम प्रधानों को कवर करते हुए प्राकृतिक खेती के संबंध में ग्राम प्रधानों के लिए 997 एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र का नाम बदलकर राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केंद्र (एनसीओएनएफ) कर दिया गया है, जिसने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने किसानों, विस्तार कार्मिकों और अन्य हितधारकों के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षण व जागरूकता कार्यक्रम चलाए हैं। एनसीओएनएफ ने रेडियो और टीवी वार्ता, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जागरूकता कार्यक्रम भी तैयार किए हैं। विभिन्न प्रकार के विस्तार साहित्य भी तैयार किए गए और हितधारकों को वितरित किए गए हैं।

एनसीओएनएफ ने निम्नलिखित के माध्यम से एनएफ की नींव रखी है

मास्टर ट्रेनर के रूप में राज्य सरकार के 482 अधिकारी, 30 दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स के माध्यम से 250 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया, 10 हजार किसानों को प्रशिक्षित किया गया, 20 राज्यों में किसान संपर्क कार्यक्रम, एनसीओएनएफ के यू ट्यूब चैनल

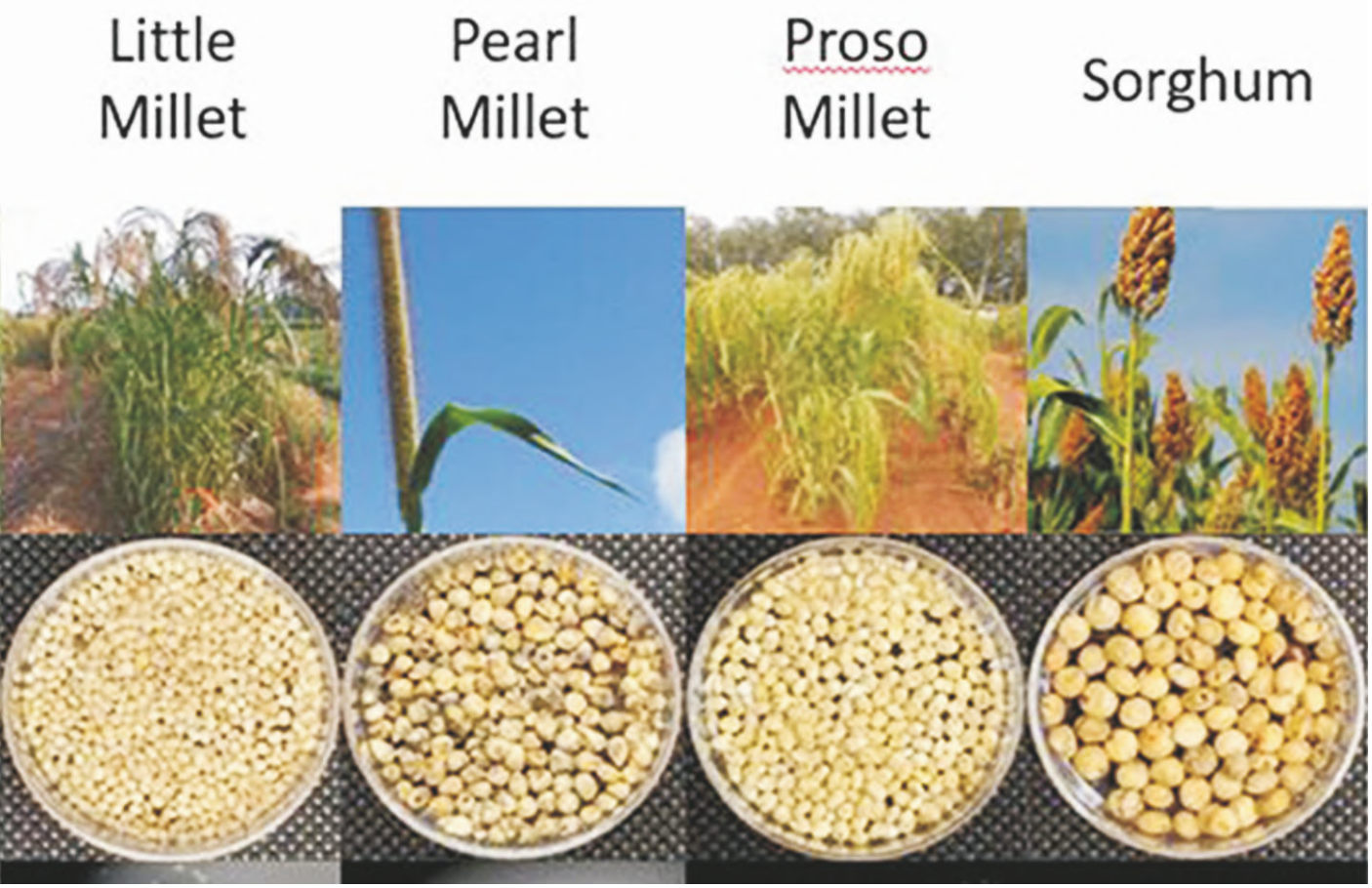

पर 49 वीडियो, व्यापक प्रशिक्षण मैनुअल तैयार किए गए हैं, सफलता की कहानियां, कृषि, आरडी, जल संसाधन, डेयर, गैर सरकारी संगठनों की सर्वोत्तम पद्धतियों का दस्तावेजीकरण, एसएचजी की क्षमता का लाभ उठाने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ एमओयू, 9 लाख एसएचजी सदस्यों को जागरूक बनाना, कृषि-सखी व एमकेएसपी किसान शामिल हो रहे हैं।

उपलब्धियां:

पहले से ही स्वीकृत क्षेत्र और कार्यान्वयन के अंतर्गत क्षेत्र

गंगा बेसिन में 1,23,620 हेक्टेयर क्षेत्र पहले ही जैविक क्षेत्र में परिवर्तित किया हैं। क्षेत्र को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करने के लिए 4 राज्यों को अतिरिक्त 1,48,111 हेक्टेयर क्षेत्र की मंजूरी दी गई। 425 केवीके में प्रशिक्षण और मॉडल विस्तार केंद्र शुरू करने के लिए 11.94 करोड़ रुपये जारी किए गए। व्यय विभाग ने राष्ट्रीय मिशन शुरू करने की अनुमति दी। ईएफसी ने योजना का मूल्यांकन किया व अनुमोदित किया। कैबिनेट नोट प्रस्तुत किया है।

आईसीएआर द्वारा प्रशिक्षण और आउटरीच गतिविधियां

3,60,000 किसानों को प्रदर्शनियों, गोष्ठियों, किसान से किसान संपर्क और प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया। 539 केवीके ने अपने अनुदेशात्मक फार्म पर प्रदर्शन किया और 3,452 किसानों के खेत में प्रदर्शन किया। 575 केवीके ने प्राकृतिक खेती पर 85,315 किसानों को प्रशिक्षित किया। रबी सीजन से 425 केवीके के माध्यम से प्राकृतिक खेती का आउट-स्केलिंग किया जा रहा है (प्रति वर्ष 68,000 किसानों का प्रशिक्षण और 8,500 प्रदर्शन)। 16 राज्यों को कवर करते हुए 20 स्थानों पर विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकी में प्राकृतिक खेती पद्धतियों का मूल्यांकन और सत्यापन किया गया।

डिजिटल दृष्टिकोण के माध्यम से बड़े पैमाने पर आउटरीच- मैनेज और नीति आयोग द्वारा प्रशिक्षण सामग्री, निर्देशात्मक वीडियो और पीयर-टू-पीयर लर्निंग की सुविधा के साथ प्राकृतिक खेती पर समर्पित पोर्टल है। प्राकृतिक खेती पर आजीविका मिशन के तहत 9 लाख एसएचजी सदस्यों की जागरूकता और प्रशिक्षण संचालित किया गया है। 14 क्षेत्रीय भाषाओं में 10 मिनट की वीडियो फिल्म तैयार की गई और 10 करोड़ से अधिक दर्शकों के साथ कई प्लेटफार्मों, केवीके और ग्राम पंचायतों के माध्यम से राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित की गई है। □□

मोटा अनाज यानि मिलेट्स = पर्यावरण और मानव के लिये वरदान

म.प्र. सरकार ने मिलेट्स की खेती के प्रोत्साहन के लिये काफी योजनाएँ बनायी है, जो बहुत ही प्रशंसनीय कदम है। इससे म.प्र. के किसानों के जीवन स्तर और स्वास्थ्य में तो सुधार होगा ही। मध्यप्रदेश के आय रहवासी भी उन्नत स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकेगें। म.प्र. के भू-जल स्तर और पर्यावरण में इसके दीर्घ कालिक सकारात्मक प्रभाव देखनें को मिलेगें।

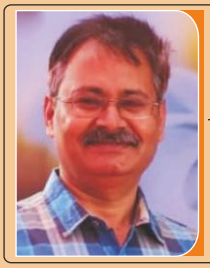

संतोष शुक्ला

(लेखक - वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता)

Nutritional content in 100 gms of dry Grain	Protein (in gms)	Carbohydrates (in gms)	Fat (in gms)	Minerals (in gms)	Fiber (in gms)	Calcium (in mgs)	Phosphorous (in mgs)	Iron (in mgs)	Energy (in KCals)	Thiamin (in mgs)	Niacin (in mgs)
Foxtail	12.3	60.2	4.3	4	6.7	31	290	2.8	351	0.59	3.2
Little	7.7	67	4.7	1.7	7.6	17	220	9.3	329	0.3	3.2
Kodo	8.3	65.9	1.4	2.6	5.2	35	188	1.7	353	0.15	2
Proso	12.5	70.4	1.1	1.9	5.2	8	206	2.9	354	0.41	4.5
Barnyard	6.2	65.5	4.8	3.7	13.6	22	280	18.6	300	0.33	4.2
Sorghum	10.4	70.7	3.1	1.2	2	25	222	5.4	329	0.38	4.3
Pearl	11.8	67	4.8	2.2	2.3	42	240	11	363	0.38	2.8
Finger	7.3	72	1.3	2.7	3.6	344	283	3.9	336	0.42	1.1
Paddy Rice	6.8	78.2	0.5	0.6	1	33	160	1.8	362	0.41	4.3
Wheat	11.8	71.2	1.5	1.5	2	30	306	3.5	348	0.41	5.1
Quinoa	14	64	6	*	7	36	457	4.6	368	0.36	*

Compiled from a study published by the National Institute for Nutrition, Hyderabad and other sources for Quinoa.

वर्तमान पीढ़ी जिसकी उम्र पचास के आसपास है, उन सभी लोगो ने बचपन के भोजन में ज्वार बाजरा, मक्का, कोदो, कुटकी, सांवॉ आदि सभी मोटे अनाजों को खाया है। इनके बने सोंधे स्वाद की तलाश आज भी इस पीढ़ी को रहती है। लेकिन लगभग पचास साल पहले जब विकास ने रफ्तार पकड़ी उसकी गति में ये सब स्वाद पीछे छूटते गये। इसके साथ ही छूट गया मानव का स्वास्थ्य, स्वास्थ्य कमजोर होने से शारीरिक शक्ति यही नहीं शरीर के स्तर के इतर मानव ने इसी दौरान धरती के स्वास्थ्य अर्थात पर्यावरण को भी खो दिया। इन सबका प्रभाव मानव जीवन के लिये अतिरिक्त प्रयास पूर्ण जीवन और संघर्ष लेकर आया, सहज प्राकृतिक रुप से उपलब्ध थी, उसके लिये आज मानव को बहुत सारा श्रम और मूल्य (पैसा) चुकाना पड़ रहा है।

इस मूल्य को अर्जित करने में मानव को असीमित तनावों से गुजरना पड़ रहा है। प्रश्न उठता है, क्या यह ऐसा ही चलता रहेगा ? शायद नहीं। इन सभी दुश्वारियों के बीच आशा की किरण भी है। मानव स्वास्थ्य को पूर्ण सामर्थवान् बने रहने के लिये जिन विटामिन और मिनरल की आवश्यकता है, उसके लिये मंहगे मेवे खरीदने की जरुरत नहीं है, यदि हम अपने भोजन में मिलेट अर्थात् मोटे अनाज और जंगली फल शामिल कर सके। इसके साथ ही मोटे आनाज की खेती से पर्यावरण में भी अशातीत सुधार की संभावना है। मिलेट्स की उगाने के लिये अधिक पानी आवश्यकता नहीं होती, इसमें कीटों/रोगों का प्रकोप कम-से-कम होता है। इनकी खेती में कम पानी के उपयोग से धरती का भू-जल स्तर सही बना रहता है। किसान को नया बीज लेने और कीटाणुनाशक, रासायनिक खाद आदि के खर्च से मुक्ति मिल जाती है। इस तरह मिलेट्स की खेती करने से वर्तमान में खेती में लग रही लागत आधी से कम हो जाती है। प्रतिकूल मौसम और फसली बीमारियों में भी कई प्रकार के मिलेट्स की खेती में कुल-ना-कुछ उपज अवश्य प्राप्त हो जाती है।

पोषण की दृष्टि से विश्लेषण करने पर भी मोटे आनाज में गेहूँ, चावल आदि की तुलना में पोषक तत्व और सूक्ष्म पोषक तत्व की मात्रा कई गुना अधिक पायी गई है।

म.प्र. सरकार ने इस वर्ष मिलेट्स की खेती के प्रोत्साहन के लिये काफी योजनाएँ बनायी है, जो बहुत ही प्रशंसनीय कदम है। इससे म.प्र. के किसानों के जीवन स्तर और स्वास्थ्य में तो सुधार होगा ही। मध्यप्रदेश के आय रहवासी भी उन्नत स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकेगें। म.प्र. के भू-जल स्तर और पर्यावरण में इसके दीर्घ कालिक सकारात्मक प्रभाव देखनें को मिलेगें। □□

जल संरक्षण के लिए जन भागीदारी जरूरी

जल सुरक्षा की चुनौतियों के समाधान के मद्देनजर जल शक्ति मंत्रालय ने 5 जनवरी 2023 को जल पर राज्यमंत्रियों के पहले अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया है। इस आयोजन में जल संरक्षण की दिशा में में कार्य करने के विषय पर राज्यों के मंत्रियों का प्रथम अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन को मध्यप्रदेश की राजधानी भोपल में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का विषय वॉटर विजन-2047 है और फोरम का उद्देश्य सतत विकास और मानव विकास के लिए जल संसाधनों के दोहन के तरीकों पर चर्चा के लिए प्रमुख नीति निर्माताओं को एक साथ लाना है।

हमारी संवैधानिक व्यवस्था में पानी का विषय, राज्यों के नियंत्रण में आता है और जल संरक्षण के लिए राज्यों के प्रयास, देश के सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत सहायक होंगे। इसी वजह से इस सम्मेलन का महत्व बहुत ही बढ़ जाता है और वॉटर विजन-2047 की यात्रा के लिए जल संरक्षण से जुड़े अभियानों में जनता को, सामाजिक संगठनों को, सिविल सोसाइटी को भी ज्यादा से ज्यादा साथ लेना इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण आयाम बन सकता है।

केंद्र सरकार का यह समग्र दृष्टिकोण जल संरक्षण के क्षेत्र में एक ऐसी प्रणाली की तरह काम कर सकता है, जिसमें राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों, जैसे जल मंत्रालय, सिंचाई मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, ग्रामीण एवं शहरी विकास मंत्रालय और आपदा प्रबंधन के बीच निरंतर संपर्क व संवाद से इन विभागों के पास एक-दूसरे से संबंधित जानकारी और डेटा होगा तो जल संरक्षण-संवर्धन के लिए योजना बनाने में मदद मिलेगी।

भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप केंद्र सरकार एक्शन प्लान और वॉटर विजन डाक्यूमेंट-2047 तैयार करने को लेकर चर्चा की गई। इस चर्चा के प्रमुख बिन्दू निम्न हैं -

जन भागीदारी पर दिया गया जोर

वॉटर विजन-2047 के सम्मेलन में सरकार ने सामूहिक प्रयास और जन भागीदारी के जोर दिया। जल संरक्षण पर केवल सरकारें ही अगर प्रयास करेंगी तो सफलता मिले इस बात पर हमेशा प्रश्न चिन्ह लगा रहेगा। इसलिए इस सम्मेलन में सार्वजनिक और सामाजिक संगठनों व नागरिक समाजों की भूमिका की ओर ध्यान आकर्षित करने पर जोर दिया गया। जल संरक्षण से संबंधित अभियानों में उनकी अधिकतम भागीदारी यह जरूरी है पर इसके बाद भी सरकार की जवाबदेही कम नहीं होती है और इसका मतलब यह नहीं है कि सारी जिम्मेदारी लोगों पर डाल दी जाएगी। जब किसी अभियान से जनता जुड़ी रहती है, तो उसे भी कार्य की गंभीरता पता चलती है। इससे जनता में किसी योजना या अभियान के प्रति भागीदारी की भावना भी आती है।

> "वॉटर विजन-2047 की यात्रा के लिए जल संरक्षण से जुड़े अभियानों में जनता को, सामाजिक संगठनों को, सिविल सोसाइटी को भी ज्यादा से ज्यादा साथ लेना इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण आयाम बन सकता है। भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप केंद्र सरकार एक्शन प्लान और वॉटर विजन डाक्यूमेंट-2047 तैयार करने को लेकर चर्चा की गई।

जल संरक्षण के प्रति जन भागीदारी के इस विचार को मन में बैठाने और प्रभावी तौर पर जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

प्रौद्योगिकी-स्टार्टअप्स को लेना होगा साथ

समस्याओं की पहचान करने और समाधान खोजने के लिए प्रौद्योगिकी, उद्योग और स्टार्टअप्स को जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। जियो-सेंसिंग व जियो-मैपिंग जैसी तकनीकों के बारे में बात कि गई, जो कि बहुत मददगार साबित हो सकती है। नीतिगत स्तरों पर जल से संबंधित मुद्दों से निपटने के लिए सरकारी नीतियों और नौकरशाही प्रक्रियाओं को लागू करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। प्रौद्योगिकी के मध्यम से पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर जल परीक्षण की व्यवस्था भी विकसित की करने पर भी जोर दिया गया। उद्योग और कृषि दोनों क्षेत्रों में पानी की आवश्यकताओं के बारे में चर्चा करते हुए सुझाव दिया गए कि हमें इन दोनों ही क्षेत्रों से जुड़े लोगों में विशेष अभियान चलाकर इन्हें जल सुरक्षा के प्रति जागरूक करना चाहिए। उन्होंने फसल विविधीकरण और प्राकृतिक खेती जैसी तकनीकों का उदाहरण दिया, जो जल संरक्षण पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

रिसायकल, री-यूज करना आज की जरूरत

जल संरक्षण के क्षेत्र में इकोनॉमी के महत्व बहुत महत्व है राज्य सरकार ने इस बजट में सर्कुलर इकोनॉमी पर काफी जोर दिया है। उन्होंने कहा, जब ट्रीटेड वॉटर को री-यूज किया जाता है, फ्रेश वाटर को कंजर्व किया जाता है, तो उससे पूरे इकोसिस्टम को बहुत लाभ होता है। इसलिए वॉटर ट्रीटमेंट, वॉटर रीसाइकलिंग आवश्यक है। राज्यों को विभिन्न उद्देश्यों के लिए शोधित जल के उपयोग को बढ़ाने के तरीके खोजने होंगे। हमारी कोई भी नदी या जल निकाय बाहरी कारकों से प्रदूषित ना हो, इसके लिए हमें हर राज्य में वाटर मैनेजमेंट और सीवेज ट्रीटमेंट का नेटवर्क बनाना होगा। अपशिष्ट प्रबंधन और सीवेज ट्रीटमेंट का एक नेटवर्क बनाने पर जोर देना चाहिए। हमारी नदियां, हमारे जल निकाय पूरे वाटर इकोसिस्टम का सबसे अहम हिस्सा होते हैं। अतः राज्य में नदियों के संरक्षण के लिए ऐसे ही अभियान चलाने की आवश्यकता है। ☐☐

जल संरक्षण के लिए जन भागीदारी की सोच को जनता के मन में जगाना है। जब किसी अभियान से जनता जुड़ी रहती है, तो उसे कार्य की गंभीरता भी पता चलती है।
जल पर अखिल भारतीय राज्य मंत्री वार्षिक सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी
5th जनवरी 2023

भारत ने जल सुरक्षा में बड़ी प्रगति की है। 2047 के लिए हमारा जल का विज़न अमृत काल में एक बड़ा योगदान होगा
जल पर अखिल भारतीय राज्य मंत्री वार्षिक सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी
5th जनवरी 2023

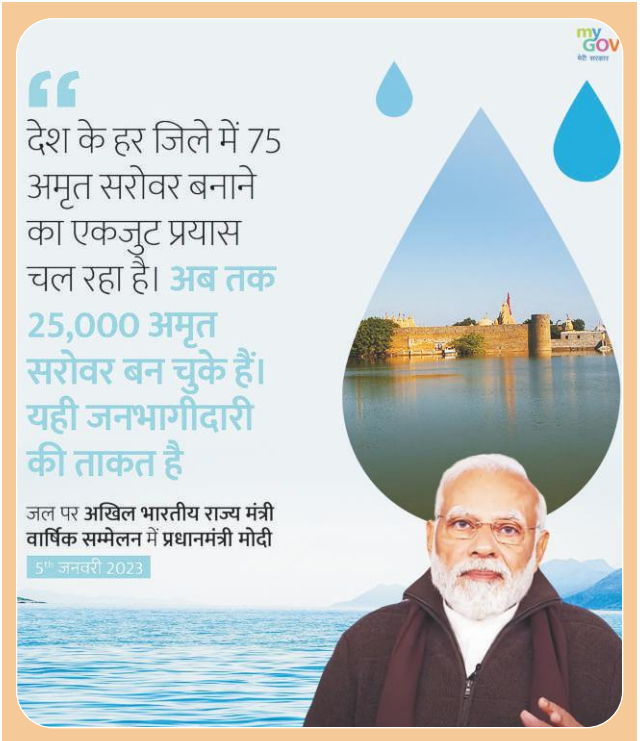
देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का एकजुट प्रयास चल रहा है। अब तक 25,000 अमृत सरोवर बन चुके हैं। यही जनभागीदारी की ताकत है
जल पर अखिल भारतीय राज्य मंत्री वार्षिक सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी
5th जनवरी 2023

ग्राम पंचायतें जल जीवन मिशन का नेतृत्व करे, और काम पूरा होने के बाद ये सुनिश्चित भी करे कि गांव में पर्याप्त और स्वच्छ पानी उपलब्ध हो
जल पर अखिल भारतीय राज्य मंत्री वार्षिक सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी
5th जनवरी 2023

यमुना बाढ़ के मैदानों से संबंधित गढ़ी मांडू प्लैन्टैशन ड्राइव

डॉ. सुनीश बक्शी

(लेखक - अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन, वन विभाग, दिल्ली)

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के अवसर पर, केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव जी ने, दिल्ली के उपराज्यपाल, श्री वी.के. सक्सेना के साथ मंगलवार (21 मार्च) को 05 K.M. लंबे यमुना बाढ़ के मैदान पर वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की। इस मौके पर क्षेत्र सांसद श्री मनोज तिवारी जी, व स्थानीय विधायक श्री अजय महावर भी मौजूद थे।

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस मनाने के लिए, माननीय केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने हजारों छात्रों, शिक्षकों और इको-क्लब के सदस्यों के साथ उत्तर पूर्वी दिल्ली में बेला फार्म व शास्त्री पार्क गढ़ी मांडू के बीच यमुना बाढ़ के मैदानों की रेस्टरैशन के लिए वृक्षारोपण अभियान शुरू किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में 4000 ईको क्लब के सदस्यों व स्कूलों और कॉलेजों के बच्चों ने भाग लिया। माननीय केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जी और माननीय उपराज्यपाल जी ने बच्चों के साथ पौधे लगाए।

एक व्यापक वृक्षारोपण अभ्यास के तहत यमुना बाढ़ के इन मैदानों पर एक ट्रिपल ग्रिड प्लांट कवर विकसित किया गया है। इस ट्रिपल ग्रिड लैअर्ड डिजाइन के अनुसार पहले लेयर में नदी की घास है, दूसरे लेयर में बांस के पौधे व तीसरे लेयर में विभिन्न फूल देने वाले पेड़/पौधे लगाए गये हैं।

यमुना बाढ़ के मैदानों का रेस्टरेशन प्लान 2

यमुना बाढ़ का मैदान यमुना नदी के किनारे वाली भूमि का एक विशाल क्षेत्र है, जो दिल्ली सहित उत्तरी भारत से होकर बहती है। बाढ़ का मैदान एक पारिस्थितिक रूप से समृद्ध क्षेत्र है जो विविध प्रकार की वनस्पतियों और जीवों का घर है। यमुना बाढ़ के मैदान के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है -

⏭ **पारिस्थितिक महत्व :** यमुना बाढ़ का मैदान आर्द्रभूमि, घास के मैदान और जंगलों सहित विविध प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों का समर्थन करता है। ये पारिस्थितिक तंत्र विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों के लिए आवास प्रदान करते हैं।

यमुना बाढ़ का मैदान एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपत्ति है और इसके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और मानव और पर्यावरण दोनों को स्थायी लाभ प्रदान करने के लिए है। वन विभाग फ्लडप्लेन का रेस्टरेशन कर रहा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी स्थिरता सुनिश्चित कर रहा है। माननीय केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जी ने माननीय उपराज्यपाल जी को बधाई देते हुआ कहा कि यह वृक्षारोपण अभियान एक प्रोग्राम नहीं बल्कि एक एक्शन ओरिएन्टेड प्रोग्राम है जो कि एक अच्छी ऐडमिनिस्ट्रेशन की पहचान है।

⏭ **बाढ़ नियंत्रण :** यमुना बाढ़ का मैदान क्षेत्र में बाढ़ के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानसून के मौसम के दौरान, बाढ़ का मैदान एक प्राकृतिक बफर के रूप में कार्य करता है जो अतिरिक्त पानी को अवशोषित करता है और निचले इलाकों में बाढ़ को रोकता है।

⏭ यमुना नदी, गंगा की एक सहायक नदी, भारत के उत्तरी भाग से होकर बहती है, और इसका बाढ़ का मैदान एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र है जो वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करता है।

⏭ फ्लडप्लेन एक प्राकृतिक जल भंडारण और निस्पंदन प्रणाली के रूप में कार्य करता है, जो भूजल को फिर से भरने और मानसून के दौरान बाढ़ को कम करने में मदद करता है।

⏭ यमुना फ्लडप्लेन मिट्टी संरक्षण, कार्बन पृथक्करण और मनोरंजन जैसी कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं भी प्रदान करता है, जो इसे एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपत्ति बनाता है।

यमुना बाढ़ का मैदान एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपत्ति है और इसके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और मानव और पर्यावरण दोनों को स्थायी लाभ प्रदान करने के लिए है। वन विभाग फ्लडप्लेन का रेस्टरेशन कर रहा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी स्थिरता सुनिश्चित कर रहा है।

माननीय केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जी ने माननीय उपराज्यपाल जी को बधाई देते हुआ कहा कि यह वृक्षारोपण अभियान एक प्रोग्राम नहीं बल्कि एक एक्शन ओरिएन्टेड प्रोग्राम है जो कि एक अच्छी ऐडमिनिस्ट्रेशन की पहचान है। पिछले वर्ष केंद्रीय वन विभाग ने ICFRE के सहयोग से देश की 13 प्रमुख नदियों का कायाकल्प करने के लिए DPR एक्शन प्लान बनाया था और विभिन्न राज्य सरकारों को इस विषय पर कार्य करने के लिए CAMPA के फंड दिलवाने की बात भी की थी और CAMPA के तहत 13 नदियों का जो कायाकल्प प्लान कर रहे हैं उस में दिल्ली के उपराज्यपाल जी ने जो यमुना के रिवर फ्रन्ट पे काम किया है, माननीय केंद्रीय पर्यावरण मंत्री जी ने उनको और वन विभाग को इसस विषय पर बधाई देते हुए अरावली का कायाकल्प करना भी जरूरी बताया।

माननीय मंत्री जी ने वायु प्रदूषण को दिल्ली/N.C.R का गंभीर विषय बताते हुआ कहा की पिछले 7 सालों में वायु प्रदूषण से संबंधित काफी कार्य किए गये केन्द्रीय सरकार ने लोक सभा में CAQM एक बॉडी का उद्घाटन किया और इसस बॉडी के द्वारा वायु शेड बनाने का काम किया गया और आज जो

वृक्षारोपण अभियान किया गया है उस ने ग्रीन इंडिया के विषय आगे बढ़ाया है। माननीय मंत्री जी ने इस मौके पर यह भी कहा कि भारत अपने वन क्षेत्रों और उनके संसाधनों का प्रबंधन स्थिरता के सिद्धांत के आधार पर वैज्ञानिक तरीके से करता है।

वृक्षारोपण योजना

पहले चरण में, 4.50 लाख वर्ग मीटर भूमि पर वृक्षारोपण किया जाएगा जिसमें 2 लाख वर्ग मीटर से अधिक भूमि पर बांस का वृक्षारोपण, 70,000 वर्ग मीटर से अधिक नदी घास और 1.80 लाख वर्ग मीटर से अधिक भूमि पर फूलों के पेड़ शामिल हैं।

रेस्टरैशन और कायाकल्प कार्यों के हिस्से के रूप में, गुलमोहर (548 नग), अमलतास (5524 नग), लेगरस्ट्रोमिया (1279), एरिथ्रिना (2469), ताकोमा (640) जैसे 13,371 फूलों / सजावटी पेड़ों की एक किस्म), जकारंदा (877), ढाक (407) और सेमल (1626) लगाए जाएंगे। 15 से 25 मीटर की ऊंचाई तक बढ़ने वाले ये पेड़ हरित आवरण बढ़ाने और बाढ़ के मैदानों के सौंदर्य को बढ़ाने में सहायक होंगे।

इस तरह, बाँस की तीन प्रजातियाँ- बम्बूसा नूतन (32,691), बम्बुस तुल्दा (19,228) और डेंड्रोकैलेमस (18,321) - इस खंड पर लगाए जा रहे हैं। बाँस अन्य पौधों/पेड़ों की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने के अलावा उच्च जल प्रतिधारण और मृदा संरक्षण के लिए जाना जाता है और इस प्रकार वायु की गुणवत्ता में सुधार करता है। जबकि बम्बूसा नूतन अनिवार्य रूप से एक सजावटी प्रजाति है; अन्य दो प्रजातियाँ- बम्बूसा टुल्डा और डेंड्रोकैलेमस का कुटीर उद्योगों में कच्चे माल के रूप में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। बाढ़ के मैदानों की बहाली के लिए नदी की घास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस खंड पर नदी घास की तीन प्रजातियां - कास (1,38,075), मूंज (1,39,604) और वर्टीवर (1,29,796) लगाई जाएंगी। वेटिवर घास भूजल को रिचार्ज करने, जल

निकासी प्रणालियों और जल निकायों की गाद को कम करने और खराब और प्रदूषित मिट्टी के उपचार के लिए बेहद उपयोगी है।

टिवर घास अत्यधिक उच्च स्तर की भारी धातुओं को सहन कर सकती है और इसे मिट्टी और जल संरक्षण के लिए कम लागत वाली तकनीक भी माना जाता है। इसी तरह मूंज घास बारहमासी घास की प्रजाति है और एक बार चढ़ाने के बाद पौधे की जड़ें फैलने के बाद करीब 24-30 साल तक नहीं मरती हैं। मूंज घास मिट्टी के कटाव को रोकने का काम करती है। बाढ़ के मैदानों का कायाकल्प पारिस्थितिक बहाली के सार्वभौमिक सिद्धांतों के माध्यम से प्राकृतिक अवसादों को बहाल करके, जलग्रहण क्षेत्र बनाकर, बाढ़ के मैदानों के जंगलों, घास के मैदानों को पुनर्जीवित करके और विशेष रूप से पानी और स्थलीय पक्षियों के लिए अनुकूल आवास बनाकर किया जा रहा है। दिल्ली में यमुना नदी के किनारे गढ़ी मांडू में वृक्षारोपण की पहल का स्थानीय समुदाय और पर्यावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। वन विभाग का उद्देश्य यमुना बाढ़ के मैदान, वनीकरण और हरित गलियारों के निर्माण के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर करना है।

कुछ प्रमुख जानकारी इस विषय में :

⏭ **बेहतर मिट्टी की उर्वरता :** वृक्षारोपण की पहल ने क्षेत्र में मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने में मदद की है।

⏭ **जैव विविधता संरक्षण :** वृक्षारोपण की पहल ने क्षेत्र में पक्षियों, कीड़ों और अन्य वन्यजीवों को आकर्षित करके स्थानीय पारिस्थितिकी में सुधार करने में मदद की है।

⏭ **बेहतर हवा और पानी की गुणवत्ता :** पेड़ और पौधे हवा और पानी से प्रदूषकों को अवशोषित करने के लिए जाने जाते हैं, जिससे गढ़ी मांडू में हवा और पानी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिली है।

⏭ **हरित पट्टी का विकास :** वन विभाग ने गढ़ी मांडू में यमुना नदी के किनारे एक हरित पट्टी विकसित करने की पहल की है। इसमें हरियाली को बढ़ावा देने और वायु और ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए क्षेत्र में पेड़ और झाड़ियाँ लगाना शामिल है।

यह साइट इलाके में अपनी तरह के एक सार्वजनिक हरित क्षेत्र के रूप में विकसित होगी, जो अनियोजित शहरीकरण और गिरावट के कारण सबसे ज्यादा पीड़ित रहा है। यह क्षेत्र सीलमपुर, शास्त्री पार्क और शाहदरा आदि जैसे इलाकों से जुड़ा हुआ है। □□

राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नर्मदा समग्र की सहभागिता

07.01.2023 को दिल्ली में रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी और गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा आयोजित सिविल20 इंडिया 2023 की तैयारी कार्यशाला में नर्मदा समग्र की सहभागिता।

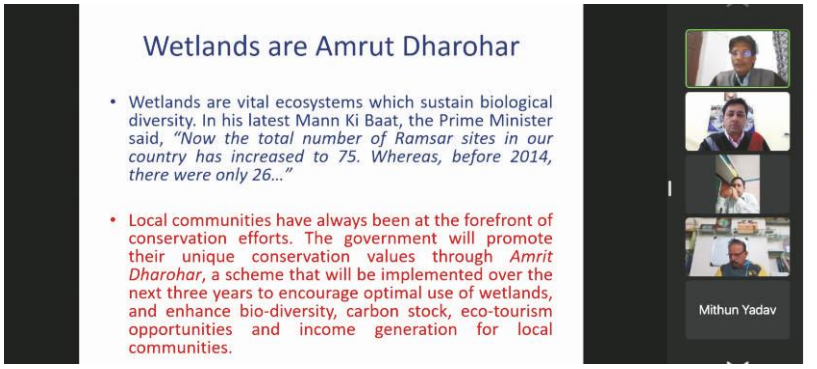

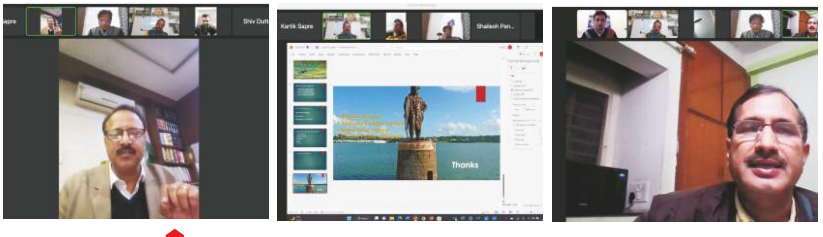

विश्व आद्रभूमि दिवस 2023 के अवसर नर्मदा समग्र और पर्यावरण संरक्षण गतिविधि द्वारा आयोजित वेबिनार की झलकियाँ।

नर्मदा समग्र द्वारा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार के सहयोग से आयोजित

'वनों की अग्नि से सुरक्षा' कार्यशाला की झलकियाँ

दिनांक 24 से 26 फरवरी 2023, स्थान - अमरकंटक, मध्यप्रदेश

नर्मदा समग्र द्वारा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार के सहयोग से आयोजित

'पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं' कार्यशाला की झलकियां

दिनांक 27 से 29 मार्च 2023, स्थान - महेश्वर, मध्यप्रदेश

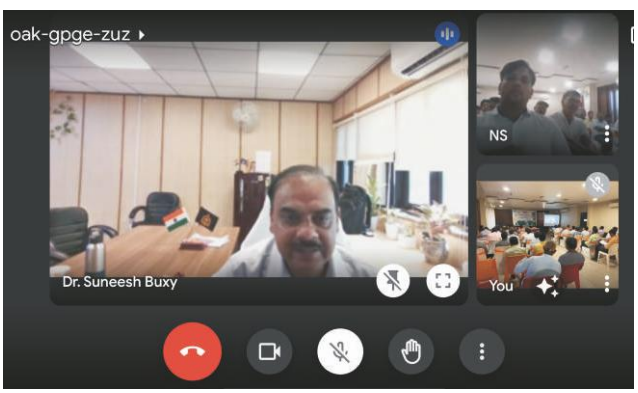

नई नदी एम्बुलेंस के उद्घाटन कार्यक्रम की झलकियां

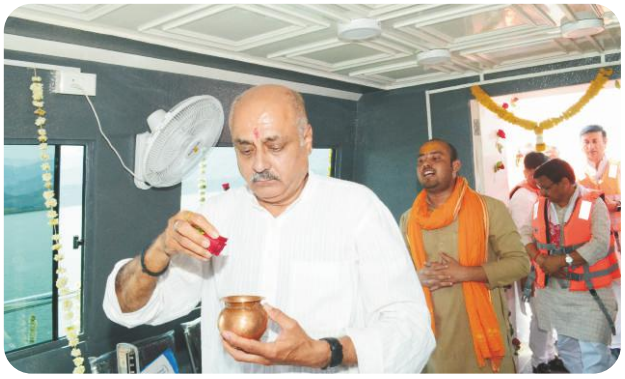

RIVER नदी AMBULANCE एम्बुलेंस

Narmada Samagra

इस कार्यक्रम का उद्देश्य नर्मदा नदी के किनारे रहने वाले लोगों के लिए बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है।

तकनीकी विशेषताएं

- एफ.आर.पी. कटमरैन नाव;
- अत्यधिक स्थिर और आधुनिक उपकरणों से लेस;
- कुल लंबाई - 10.41 मीटर, बीम के बीच की चौड़ाई - 5.0 मीटर;
- सौर ऊर्जा संचालित केबिन में रोशनी;
- निर्बाध संचालन के लिए अलग ऑपरेटर केबिन;
- ट्विन 40 hp पेट्रोल 4 स्ट्रोक इंजन, स्टीयरिंग और रिमोट कंट्रोल सिस्टम के साथ फ्यूल एफिशिएंट साइलेंट आउट बोर्ड मोटर्स;
- स्टोरेज (समान) हेतु पर्याप्त जगह;
- शौचालय से सज्जित;
- लाइफ जैकेट और लाइफबॉय रिंग जैसे जीवन सुरक्षा उपकरणों से लैस;
- अंतर्राष्ट्रीय प्रदूषण मानदंडों को पूरा करता है (बीएस VI उत्सर्जन मानदंडों के बराबर)।

परिचालन विशेषताएं

- नई नदी एम्बुलेंस अधिक स्वास्थ्य देखभाल सामग्री, अधिक कर्मचारियों को समायोजित कर सकती है और गंभीर मुद्दों वाले मामलों को परिवहन कर सकती है;
- इसमें एक परीक्षण शय्या, स्ट्रेचर, भंडारण के लिए (बिस्तर के नीचे) अलमारियां और आपात स्थिति के लिए एक ऑक्सीजन सिलेंडर है;
- इसमें एक बार में करीब 20 लोग सवार हो सकते हैं;
- नदी एम्बुलेंस, नर्मदा नदी के तट पर 40 से अधिक फलियों (बस्तियों/कालोनियों) तक अपनी सेवा प्रदान करती है, जिनमें 10,000 से अधिक लोग निवासरत हैं;
- यह सप्ताह में 5 दिन चलती है और प्रति दिन औसतन 40-50 लाभार्थियों को सेवा प्रदान करती है;
- यात्रा का कार्यक्रम मौसम के अनुसार थोड़ा बहुत बदलता रहता है। विशेषकर वर्षाकाल के दौरान यात्रा की आवृत्ति कम हो जाती है;
- डूब क्षेत्र का लगभग 100 किमी लंबा क्षेत्र इसमें शामिल है। जिसमें किनारे निवास करने वाले विभिन्न वनवासी और वंचित समुदाय शामिल हैं;
- महत्वपूर्ण प्राथमिक टीकाकरण, मौखिक परीक्षण, अन्य परीक्षण और समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने में मददगार है;
- अचानक और गंभीर बीमारी होने पर मरीजों को अस्पताल रेफर किया जाता है। मरीज को आवश्यकता पड़ने पर उसके गाँव से नदी एम्बुलेंस के माध्यम से सड़क किनारे वाले ग्राम तक पहुँचाकर रोड़ पर चलने वाली एम्बुलेंस से अस्पताल ले जाने हेतु सहयोगी है।

आप क्या कर सकते हैं / कैसे जुड़ सकते हैं –

- चिकित्सा शिविरों का आयोजन;
- दवाएं/किट प्रदान करना;
- संचालन के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करना;
- जागरूकता/क्षमता निर्माण/प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन;
- परियोजना के प्रबंधन और संचालन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना;

संपर्क :
"नदी का घर"
सीनियर MIG -2, अंकुर कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016
मध्यप्रदेश, भारत
फोन : +91 755 2460754
Email: narmadasamagra@gmail.com

SCAN TO SEE VIDEO

www.narmadasamagra.org

@NarmadaSamagra @narmada_samagra

हमारी यात्रा

नर्मदा समग्र के संस्थापक और पूर्व केन्द्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री, स्व. अनिल माधव दवे जी द्वारा 2007 में नर्मदा जी की राफ्ट से जल यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान ध्यान में आया कि नर्मदा के तटवर्तीय क्षेत्र में अभी भी ऐसे लोग रहते हैं जो की बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हैं। यह यात्रा अनुभव शीघ्र ही एक कार्यरूप में बदली और एक नवाचार के रूप में देश की प्रथम नदी एम्बुलेंस की शुरुआत हुई।

2011
मंडला जिले के बरगी जलाशय क्षेत्र में लोकार्पण। स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा भेंट की गई

2013
सरदार सरोवर के जलाशय क्षेत्र में परिचालन आरंभ हुआ

वर्ष 2014-2018 तक
इसके संचालन में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी 'मर्क' ने सहयोग प्रदान किया

2016
"ऐक्सेस टु हेल्थ" पहल के अंतर्गत मर्क ने नई नदी एम्बुलेंस सी.एस.आर. सहयोग स्वरूप प्रदान की

2018
रेवा सेवा केंद्र की स्थापना

2023
आई.आर.सी.टी.सी., भारत सरकार की एक मिनी रत्न (श्रेणी -1) सी.पी.एस.ई. ने अपनी सी.एस.आर. पहल के तहत एक नई नदी एम्बुलेंस प्रदान की

नदी एम्बुलेंस द्वारा सामान्य शारीरिक समस्याएं, बुखार, सर्दी-खांसी, त्वचा रोगों इत्यादि के लिए सेवा प्रदान की जाती है। यह गर्भवती महिलाओं को सामान्य दवाइयाँ भी उपलब्ध कराती है। चिकित्सक / स्वास्थ्यकर्मी द्वारा एम्बुलेंस के माध्यम से स्वास्थ्य एवं सफाई को लेकर जागरुकता भी प्रदान की जाती हैं। लाभार्थियों में रोगों के बारे में, उसके निवारण और आरोग्य के संबंध जागरुक किया जाता है।

नदी एम्बुलेंस क्यों?

नर्मदा नदी के किनारों के आसपास बसे गांवों में रह रहे लोगों की स्थिति का आकलन करने के बाद इस कार्यक्रम को चिन्हित किया गया। जंगलों में स्थित, जलाशय क्षेत्र में नर्मदा के तटवर्तीय गांवों में खराब या कोई सड़क पहुँच मार्ग नहीं है, लेकिन नदी मार्ग से पहुंचा जा सकता है। इन दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले वनवासी और अन्य लोग कनेक्टिविटी की कमी के कारण बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं और अन्य चिकित्सा सेवाओं से वंचित हो जाते हैं। उन्हें बुनियादी स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं तक पहुँचाने के लिए 20-30 किलोमीटर के पहाड़ी रास्तों को पार करना होता है, तब जा कर कहीं सरकारी प्राथमिक चिकित्सा केंद्र तक अथवा अस्पताल तक पहुँच पाते हैं, जो की बड़ा कठिन होता है। चूंकि, यहाँ के लोगों के लिए नर्मदा नदी से परिवहन सबसे सुगम है, इसलिए "नदी एम्बुलेंस" की योजना बनाई गई।

नाव पर स्वयंसेवक/कार्यकर्ता

- स्वास्थ्य कर्मी/चिकित्सक
- समन्वयक
- नाविक/ऑपरेटर
- सहायक

अपनी स्थापना के बाद से अब तक नदी एम्बुलेंस द्वारा नर्मदा नदी के तटवर्तीय ग्रामों में 75,000 से अधिक लोगों तक बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुँचाया है।

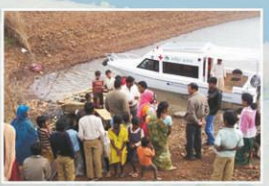

कोरोना काल के दौरान सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया विशेष कर नमक, तेल, मसाले, इत्यादि। स्थानीय प्रशासन तक डूब क्षेत्र में वनवासियों से जुड़ी समस्याएँ एवं जानकारी पहुँचाई जिससे प्रशासन द्वारा उन तक आवश्यक सहयोग प्रदान किया गया। साथ ही २०२१ में कोविड टीकाकरण हेतु प्रशासन को सहयोग प्रदान किया जिसमें रेवा सेवा केंद्र पर निःशुल्क टीकाकरण एवं डूब क्षेत्रों के ग्रामों में जागरूकता लाने का काम किया।

स्वास्थ्य शिविर

स्वास्थ्य सेवाओं के अतिरिक्त, विभिन्न अन्य गतिविधियों में सामान्य जागरूकता, वृक्षारोपण, रसायन मुक्त/प्राकृतिक खेती, जैव विविधता संरक्षण, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण आदि गतिविधियाँ शामिल हैं।

भारत की नदी संरचनाएं

दीपक सिंह बैस
(लेखक - नर्मदा समग्र मीडिया समन्वयक)

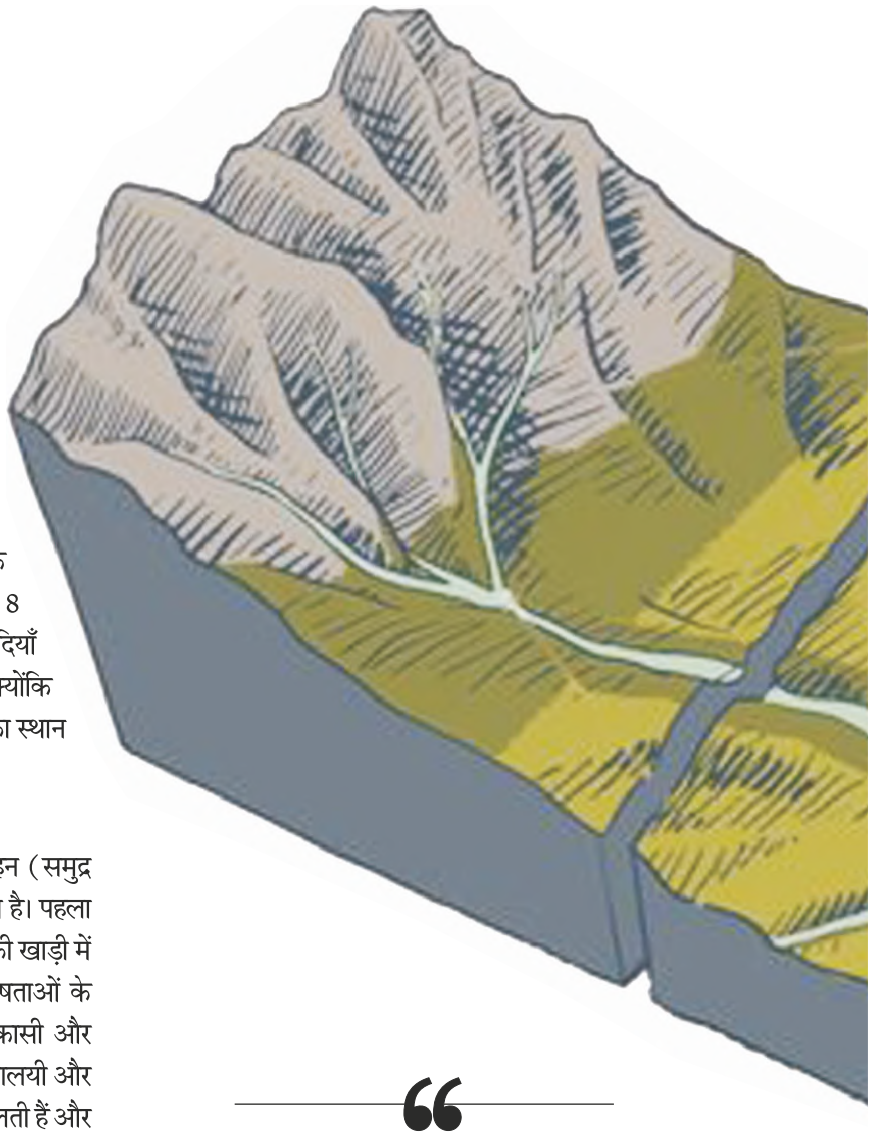

नदियां बहते हुए पानी की एक बड़ी प्राकृतिक धारा है। नदियाँ हर महाद्वीप पर और लगभग हर तरह की भूमि पर पाई जाती हैं। कुछ नदियां साल भर बहती हैं और अन्य मौसमी रूप से वर्षा के दौरान बहती हैं। एक नदी कुछ किलोमीटर लंबी हो सकती है, या यह एक महाद्वीप के अधिकांश भाग में फैली हो सकती है। भारत में 8 प्रमुख नदी प्रणालियाँ हैं, कुल मिलाकर 400 से अधिक नदियाँ भारतीय लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि उनका निर्वाह में महत्वपूर्ण महत्व और भारतीय धर्मों में उनका स्थान है।

भारत की नदी जल-प्रणाली

भारतीय जल निकासी प्रणाली को पानी के निर्वहन (समुद्र की ओर उन्मुखीकरण) के आधार पर दो में बांटा जा सकता है। पहला अरब सागर की तरफ बहने वाली नदियां और दूसरा बंगाल की खाड़ी में मिलने वाली नदियां शामिल हैं। उत्पत्ति, प्रकृति और विशेषताओं के आधार पर, भारतीय नदियों के तंत्र को हिमालयी जल निकासी और प्रायद्वीपीय जल निकासी में वर्गीकृत किया जा सकता है। हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदियाँ भारत के दो प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों से निकलती हैं और कई प्रकार से एक दूसरे से भिन्न हैं।

हिमालय की नदियाँ

हिमालय की अधिकांश नदियां में साल भर पानी रहता है। इन नदियों को वर्षा के साथ-साथ ऊंचे पहाड़ों से पिघली बर्फ से भी पानी मिलता है। ये नदियाँ हिमालय की ऊचांई के साथ-साथ प्रकृतिक गतिविधि द्वारा खुदी हुई विशाल घाटियों से होकर गुजरती हैं। गहरी घाटियों के अलावा, ये नदियाँ अपने पहाड़ी मार्ग में वी-आकार की घाटियों, झरने भी बनाती हैं।

प्रायद्वीपीय नदियाँ-

प्रायद्वीपीय नदी तंत्र हिमालयी नदी तंत्र से भिन्न है। अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियां मौसमी होती हैं, क्योंकि उनका प्रवाह

"भारत में 8 प्रमुख नदी प्रणालियाँ हैं, कुल मिलाकर 400 से अधिक नदियाँ भारतीय लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि उनका निर्वाह में महत्वपूर्ण महत्व और भारतीय धर्मों में उनका स्थान है। हिमालय की अधिकांश नदियां में साल भर पानी रहता है। इन नदियों को वर्षा के साथ-साथ ऊंचे पहाड़ों से पिघली बर्फ से भी पानी मिलता है। ये नदियाँ हिमालय की ऊचांई के साथ-साथ प्रकृतिक गतिविधि द्वारा खुदी हुई विशाल घाटियों से होकर गुजरती हैं।

क्षेत्र की वर्षा पर काफी हद तक निर्भर करता है। हिमालय की नदियों की तुलना में प्रायद्वीपीय नदियों का मार्ग छोटा और छिछला होता है। नर्मदा और तापी को छोड़कर अधिकांश प्रमुख प्रायद्वीपीय नदियाँ बंगाल की खाड़ी (पश्चिम से पूर्व) की ओर बहती हैं। प्रायद्वीप के उत्तरी भाग से निकलने वाली चंबल, सिंध, बेतवा, केन और सोन नदी प्रणाली से संबंधित हैं। प्रायद्वीपीय नदियां की अन्य महत्वपूर्ण नदियां महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी हैं। भारत की कोई भी दो नदियां एक जैसी नहीं हैं। प्रत्येक नदी अपने परिदृश्य के लिए अद्वितीय है, कम तलहटी और घाटियों के माध्यम से घुमावदार, पहाड़ के जंगलों में ठंडी बहती है, या रेगिस्तानी घाटियों में गर्म और मैली बहती है। हमारी नदियाँ कितनी भी भिन्न क्यों न हों, वे कुछ बुनियादी विशेषताएं साझा करती हैं।

आइए जानते हैं नदियों की संरचना को...

नदी स्रोत उद्गम

किसी नदी की शुरुआत, या स्रोत को उसका उदगम कहा जाता है। कुछ उदगम झरने हैं जो जमीन के नीचे से आते हैं। अन्य दलदली क्षेत्र हैं

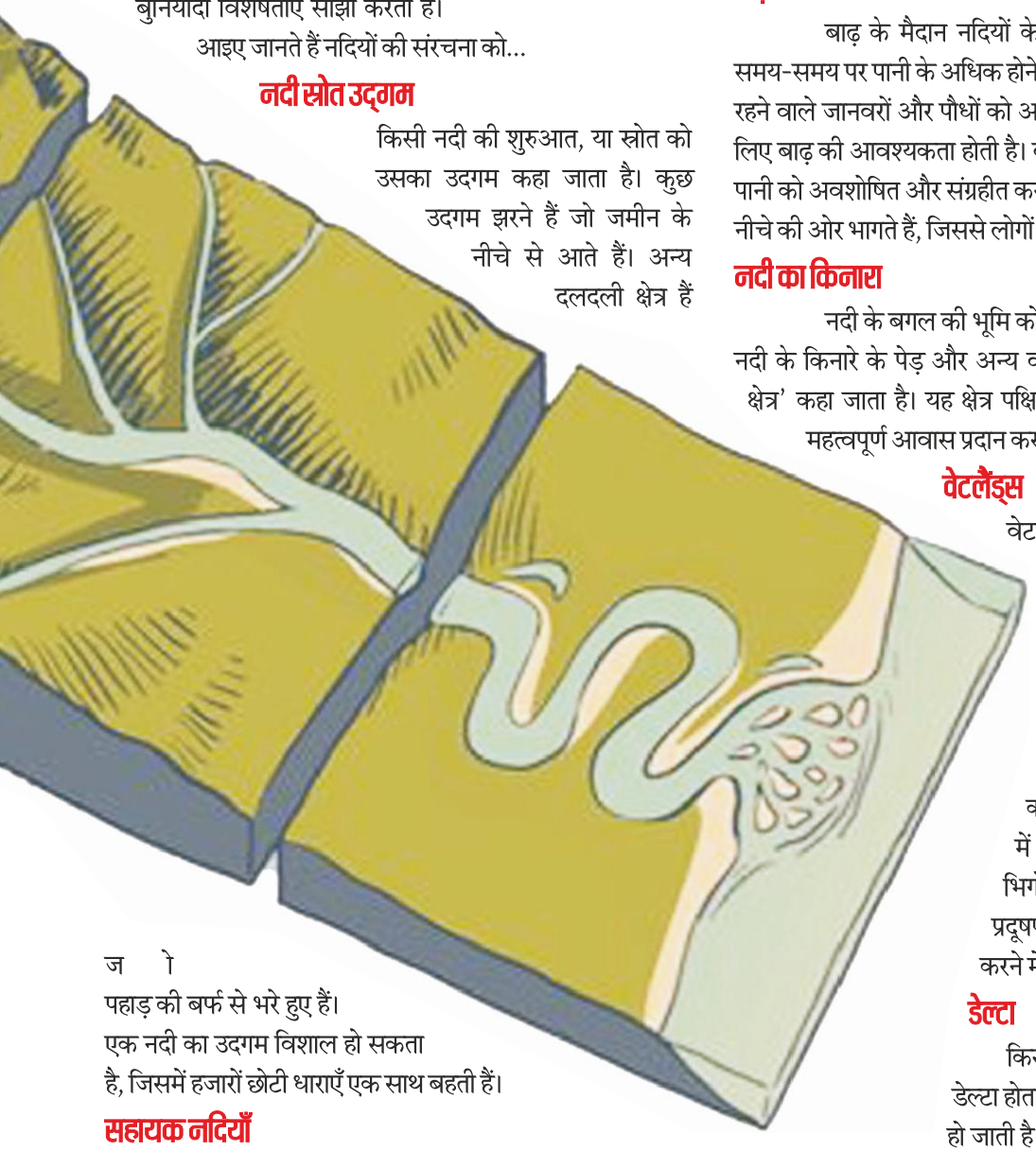

ज ो
पहाड़ की बर्फ से भरे हुए हैं।
एक नदी का उदगम विशाल हो सकता
है, जिसमें हजारों छोटी धाराएँ एक साथ बहती हैं।

सहायक नदियाँ

सहायक नदियाँ एक नदी या धारा है जो किसी झील, तालाब या समुद्र में समाप्त होने के बजाय दूसरी नदी में मिलती है। यदि कोई नदी बड़ी है, तो इस बात की अच्छी संभावना है कि उसका अधिकांश पानी सहायक नदियों से आता है।

नदी चैनल

एक नदी का चैनल उसका अनूठा हस्ताक्षर है, जो पूरे परिदृश्य को उकेरता है। नदी के नाले का आकार इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें कितने समय से कितना पानी बह रहा है, किस प्रकार की मिट्टी, चट्टान और वनस्पति है। कई अलग-अलग प्रकार के नदी चैनल हैं- कुछ चौड़े और लगातार बदलते रहते हैं, कुछ एक चोटी की तरह क्रॉस होते हैं, और अन्य खड़ी किनारों के बीच एक मुख्य चैनल में रहते हैं।

बाढ़ का मैदान

बाढ़ के मैदान नदियों के किनारे के निचले इलाके हैं जो समय-समय पर पानी के अधिक होने पर बाढ़ आते हैं। बाढ़ के मैदानों में रहने वाले जानवरों और पौधों को अक्सर जीवित रहने और प्रजनन के लिए बाढ़ की आवश्यकता होती है। बाढ़ के मैदान समुदायों को बाढ़ के पानी को अवशोषित और संग्रहीत करके लाभान्वित करते हैं जो अन्यथा नीचे की ओर भागते हैं, जिससे लोगों और संपत्ति को खतरा होता है।

नदी का किनारा

नदी के बगल की भूमि को नदी के किनारे कहा जाता है, और नदी के किनारे के पेड़ और अन्य वनस्पति को कभी-कभी 'नदी का क्षेत्र' कहा जाता है। यह क्षेत्र पक्षियों और अन्य वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण आवास प्रदान करता है।

वेटलैंड्स

वेटलैंड्स वे भूमि हैं जो आस-पास की नदियों और झरनों के पानी से लथपथ हैं। कुछ आर्द्रभूमियाँ पूरे वर्ष जल से भरी रहती हैं, जबकि अन्य सूख जाती हैं। आर्द्रभूमि विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों को आवास प्रदान करती है। वे प्राकृतिक स्पंज के रूप में कार्य करते हैं, बाढ़ के पानी को भिगोते हैं, और वे प्राकृतिक रूप से प्रदूषण को छानकर स्वच्छ पानी प्रदान करने में मदद करते हैं।

डेल्टा

किसी नदी का छोर उसका मुहाना या डेल्टा होता है। नदी के डेल्टा में, भूमि समतल हो जाती है और पानी गति खो देता है, पंखे के आकार में फैल जाता है। आमतौर पर ऐसा तब होता है जब नदी किसी महासागर, झील या आर्द्रभूमि से मिलती है। □□

उभयान्वयी नर्मदा

हमारा देश हिन्दुस्तान महादेव जी की मूर्ति है। हिन्दुस्तान के नक्शे को यदि उलटा पकड़ें, तो उसका आकार शिवलिंग के जैसा मालूम होगा। उत्तर का हिमालय उसका पाया है और दक्षिण की ओर का कन्याकुमारी का हिस्सा उसका शिखर है। गुजरात के नक्शे को ज़रा-सा घुमायें और पूर्व के हिस्से को नीचे की ओर तथा सौराष्ट्र के छोर-ओखा मंडल को ऊपर की ओर ले जायें तो यह भी शिवलिंग के जैसा ही मालूम होगा। हमारे यहां पहाड़ों के जितने भी शिखर हैं, सब शिवलिंग ही हैं। कैलास के शिखर का आकार भी शिवलिंग के समान ही है।

इन पहाड़ों के जंगलों से जब कोई नदी निकलती है, तब कवि लोग यह कहे बिना नहीं रहते कि यह तो शिवजी की जटाओं से गंगाजी निकली हैं! चन्द लोग पहाड़ों से आनेवाले पानी के प्रवाह को अप्सरा (अप्सरा) कहते हैं और चन्द लोग पर्वत की इन तमाम लड़कियों को पार्वती कहते हैं। ऐसी ही अप्सरा जैसी एक नदी के चर्चा इस लेख में की गई है। महादेव के पहाड़ के समीप मेकल या मेखल पर्वत की तलहटी में अमरकंटक नामक एक तालाब है। वहां से नर्मदा का उद्गम हुआ है। जो अच्छा घास उगाकर गौओं की संख्या में वृद्धि करती है, उस नदी को गोदा कहते हैं। यश देनेवाली को यशोदा, और जो अपने प्रवाह तथा तट की सुन्दरता के द्वारा 'नर्म' याने आनन्द देती है, वह है नर्मदा। इसके किनारे घूमते-घामते जिसको बहुत ही आनन्द मिला, ऐसे किसी ऋषि ने इस नदी को यह नाम दिया होगा। उसे मेखल-कन्या या मेखला भी कहते हैं।

जिस प्रकार हिमालय का पहाड़ तिब्बत और चीन को हिन्दुस्तान से अलग करता है, उसी प्रकार हमारी यह नर्मदा नदी उत्तर भारत अथवा हिन्दुस्तान और दक्षिण भारत या दक्खन के बीच आठ सौ मील की एक चमकती, नाचती, दौड़ती सजीव रेखा खींचती है और कहीं इसको कोई मिटा न दे, इस ख्याल से भगवान ने इस नदी के उत्तर की ओर विंध्य तथा दक्षिण की ओर सतपुड़ा के लम्बे-लम्बे पहाड़ों को नियुक्त किया है। ऐसे समर्थ भाइयों की रक्षा के बीच नर्मदा दौड़ती-कूदती अनेक प्रान्तों को पार करती हुई भृगुकच्छ यानी भडौंच के समीप समुद्र से जा मिलती है। अमरकंटक के पास नर्मदा का उद्गम समुद्र की सतह से करीब पांच हजार फुट की ऊंचाई पर होता है। अब आठ सौ मील में पांच हजार फुट उतरना कोई आसान काम नहीं है। इसलिए नर्मदा जगह-जगह छोटी-बड़ी छलांगें मारती है। इसी पर से हमारे कवि-पूर्वजों ने नर्मदा को दूसरा नाम दिया रेवा। रेव धातु का अर्थ है कूदना।

जो नदी कदम-कदम पर छलांगें मारती है, वह नौकायन के लिए यानी किश्तियों के द्वारा दूर तक की यात्रा करने के लिए काम की नहीं। समुद्र से जो जहाज आता है वह नर्मदा में मुश्किल से तीस-पैंतीस मील अन्दर आ-जा सकता है। वर्षा ऋतु के अन्त में ज्यादा-से-ज्यादा पचास मील तक पहुंचता है। जिस नदी के उत्तर और दक्षिण की ओर दो पहाड़ खड़े हैं, उसका पानी भला नहर खोदकर दूर तक कैसे लाया जा सकता है? अतः नर्मदा जिस प्रकार नाव खेने के लिए बहुत काम की नहीं है, उसी प्रकार खेतों की सिंचाई के लिए भी विशेष काम की नहीं है। फिर भी इस नदी की सेवा दूसरी दृष्टि से कम नहीं है। उसके पानी में विचरनेवाले मगरों और मछलियों की, उसके तट पर चरनेवाले ढोरों और किसानों की, और तरह-तरह के पशुओं की तथा उसके आकाश में कलरव करनेवाले पक्षियों की वह माता है।

भारतवासियों ने अपनी सारी भक्ति भले गंगा पर उंड़ेल दी हो, पर हमारे लोगों ने नर्मदा के किनारे कदम-कदम पर जितने मंदिर खड़े किये हैं, उतने अन्य किसी नदी के किनारे नहीं किये होंगे। पुराणकारों ने गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी, गोमती, सरस्वती आदि नदियों के स्नान-पान का और उनके किनारे किये हुए दान के माहात्म्य का वर्णन भले चाहे जितना किया हो, किंतु इन नदियों की प्रदक्षिणा करने की बात किसी भक्त ने नहीं सोची, जब कि नर्मदा के भक्तों ने कवियों को ही सूझने वाले नियम बनाकर सारी नर्मदा की परिक्रमा या परिकम्मा करने का प्रकार चलाया है।

नर्मदा के उद्गम से प्रारंभ करके दक्षिण तट पर चलते हुए सागर-संगम तक जाइये, वहां से नाव में बैठकर उत्तर के तट पर जाइये और वहां से फिर पैदल चलते हुए अमरकंटक तक जाइये - एक परिक्रमा पूरी होगी। नियम बस इतना ही है कि 'परिकम्मा' के दरम्यान नदी के प्रवाह को कहीं भी लांघना नहीं चाहिए, न प्रवाह बहुत दूर ही जाना चाहिए। हमेशा नदी के दर्शन होने चाहिए। पानी केवल नर्मदा का ही पीना चाहिए। अपने पास धन-दौलत रखकर ऐश-आराम में यात्रा नहीं करनी चाहिए। नर्मदा के किनारे जंगल में बसने वाले आदिम निवासियों के मन में यात्रियों की धन-दौलत के प्रति विशेष आकर्षण होता है। आपके पास यदि आधिक कपड़े बर्तन या पैसे होंगे, तो वे आपको इस बोझ से अवश्य मुक्त कर देंगे। हमारे लोगों को ऐसे अकिंचन और भूखे भाइयों का पुलिस द्वारा इलाज करने की बात कभी सूझी ही नहीं और (आदिम निवासी भाई ही मानते आये हैं कि यात्रियों पर उनका यह हक है) जंगलों में लूटे गये यात्री जब जंगल से बाहर आते हैं, तब दानी लोग यात्रियों को नये कपड़े और सीधा देते हैं।

श्रद्धालु लोग सब नियमों का पालन करके खास तौर पर ब्रह्मचर्य का आग्रह रखकर नर्मदा की परिं मा धीरे-धीरे तीन साल में पूरी करते हैं। चौमासे में वे दो-तीन माह कहीं रहकर साधु-सन्तों के सत्संग से जीवन का रहस्य समझने का आग्रह रखते हैं। ऐसी परिक्रमा के दो प्रकार होते हैं। उनमें जो कठिन प्रकार है, उसमें सागर के पास भी नर्मदा को लांघा नहीं जा सकता। उद्गम से मुख तक जाने के बाद फिर उसी रास्ते से उद्गम तक - लौटना तथा उत्तर के तट से सागर तक जाना और फिर उसी रास्ते से उद्गम तक लौटना - यह परिक्रमा

इस प्रकार दूनी होती है। इसका नाम है जलेरी ।

मौज और आराम को छोड़कर तपस्यापूर्वक एक ही नदी का ध्यान करना, उसके किनारे के मन्दिरों के दर्शन करना, आसपास रहनेवाले सन्त-महात्माओं के वचनों को श्रवण- भक्ति से सुनना और प्रकृति की सुन्दरता तथा भव्यता का सेवन करते हुए जीवन के साथ तीन साल बिताना कोई मामूली प्रवृत्ति नहीं है। इसमें कठोरता है, तपस्या है, बहादुरी है, अन्तर्मुख होकर आत्मचिंतन करने की और गरीबों के साथ एकरूप होने की भावना है, प्रकृतिमय बनने की दीक्षा है, और प्रकृति के द्वारा प्रकृति में विराजमान भगवान के दर्शन करने की साधना है। और इस नदी के किनारे की समृद्धि मामूली नहीं है। असंख्य युगों से उच्च कोटि के सन्त-महन्त, वेदान्ती, संन्यासी और ईश्वर की लीला देखकर गद्गद् होनेवाले भक्त अपना-अपना इतिहास इस नदी के किनारे बोते आये हैं। अपने खानदान की शान रखनेवाले और प्रजा की रक्षा के लिए जान कुरबान करनेवाले क्षत्रिय वीरों ने अपने पराक्रम इस नदी के किनारे आज़माये हैं। अनेक राजाओं ने अपनी राजधानी की रक्षा करने के हेतु से नर्मदा के किनारे छोटे-बड़े किले बनवाये हैं और भगवान के उपासकों ने धार्मिक कला की समृद्धि का मानो संग्रहालय तैयार करने के लिए जगह-जगह मन्दिर खड़े किये हैं। हरेक मन्दिर अपनी कला द्वारा आपके मन को खींचकर अन्त में अपने शिखर की अंगुली ऊपर दिखाकर अनन्त आकाश में प्रकट होनेवाले मेघश्याम का ध्यान करने के लिए प्रेरित करता है।

जिस प्रकार अज़ान की आवाज सुनकर खुदा-परस्तों को नमाज का स्मरण होता है, उसी प्रकार दूर-दूर से दिखाई देनेवाली मन्दिरों की शिखररूपी चमकती अंगुलियां हमें स्तोत्र गाने के लिए प्रेरित करती है। और नर्मदा के किनारे शिवजी या विष्णु का, रामचन्द्र या कृष्णचन्द्र का, जगत्पति या जगदम्बा का स्तोत्र शुरू करने से पहले नर्मदाष्टक से प्रारम्भ करना होता है- सबिंदुसिंधुसुस्खलत् तरंगभंग-रंजितम् इस प्रकार जब पंचचामर के लघु-गुरु अक्षर नर्मदा के प्रवाह का अनुकरण करते हैं, तब भक्त लोग मस्ती में आकर कहते हैं, हे माता ! तेरे पवित्र जल का दूर से दर्शन करके ही इस संसार की समस्त बाधाएं दूर हो गईं गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा'- और अन्त में भक्ति-लीन होकर वे नमस्कार करते हैं- 'त्वदीय पाद-पंकजं नमामि देवि ! नर्मदे !' हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि जिस प्रकार नर्मदा हमारी और हमारी प्राचीन संस्कृति की माता है, उसी प्रकार वह हमारे भाई आदिम निवासी लोगों की भी माता है। इन लोगों ने नर्मदा के दोनों किनारों पर हजारों साल तक राज्य किया था, कई किले भी बनवाये थे और अपनी एक विशाल आरण्यक संस्कृति भी विकसित की थी।

मुझे हमेशा लगता है कि हिन्दुस्तान का इतिहास प्रान्तों के अनुसार या राज्यों के अनुसार लिखने के बजाय यदि नदियों के अनुसार लिखा गया होता, तो उसमें प्रजा-जीवन प्रकृति के साथ ओत-प्रोत हो गया होता और हरेक प्रदेश का पुरुषार्थी वैभव नदी के उद्गम से लेकर मुख तक फैला हुआ दिखाई देता। जिस प्रकार हम सिन्धु के किनारे के घोड़ों को सैंधव कहते हैं, भीमा के किनारे का पोषण पाकर पुष्ट हुए भीमथड़ी के टट्टुओं की तारीफ करते हैं, कृष्णा की घाटी के गाय-बैलों को विशेष रूप से चाहते हैं, उसी प्रकार पुराने समय में हरेक नदी के किनारे पर विकसित हुई संस्कृति अलग-अलग नामों से पहचानी जाती थी।

इसमें भी नर्मदा नदी भारतीय संस्कृति के दो मुख्य विभागों की सीमा रेखा मानी जाती थी। रेवा के उत्तर की ओर की पंचगौड़ों की विचार प्रधान संस्कृति और रेवा के दक्षिण की ओर की द्रविड़ों की आचार-प्रधान संस्कृति मुख्य मानी जाती थी। विक्रम संवत् का काल-मान और शालिवाहन का काल-मान-दोनों नर्मदा के किनारे सुनाई देते हैं और बदलते हैं। मैंने कहा तो सही कि नर्मदा उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के बीच एक रेखा खींचने का काम करती है, किन्तु उसके साथ मुकाबला करनेवाली दूसरी भी एक नदी है। नर्मदा ने मध्य हिन्दुस्तान से पश्चिमी किनारे तक सीमा-रेखा खींची है। गोदावरी ने यों मानकर कि यह ठीक नहीं हुआ, पश्चिम के पहाड़ सह्याद्रि से लेकर पूर्व-सागर तक अपनी एक तिरछी रेखा खींची है। अतः उत्तर की ओर से ब्राह्मण संकल्प बोलते समय कहेंगे- रेवायाः उत्तरे तीरे, और पैठण के अभिमानी हम दक्षिण के ब्राह्मण कहेंगे-गोदावर्याः दक्षिणे तीरे। जिस नदी के किनारे शालिवाहन या शातवाहन राजाओं ने मिट्टी में से मानव बनाकर उनकी फौज के द्वारा यवनों को परास्त किया, उस गोदावरी को संकल्प में स्थान न मिले, यह भला कैसे हो सकता है?

नर्मदा नदी की परिकम्मा तो मैंने नहीं की है। अमरकंटक तक जाकर उसके उद्गम के दर्शन करने का मेरा संकल्प बहुत पुराना है। पिछले वर्ष विंध्यप्रदेश की राजधानी रीवां तक हम गये। भी थे, किन्तु अमरकंटक नहीं जा सके। नर्मदा के दर्शन तो जगह-जगह किये हैं, लेकिन उसके विशेष काव्य का अनुभव किया जबलपुर के पास भेड़ाघाट में। भेड़ाघाट में नाव में बैठकर संगमरमर की नीली-पीली शिलाओं के बीच से जब हम जल-विहार करते हैं, तब यही मालूम होता है उभयान्वयी नर्मदा मानो योग-विद्या में प्रवेश करके मानव-चित्त के गूढ़ रहस्यों को हम खोल रहे हैं। इसमें भी जब हम बन्दरकूद के पास पहुंचते हैं। और- पुराने सरदार यहां घोड़ों को इशारा करके उस पार तक कूद जाते थे- आदि बातें सुनते हैं, तब मानो मध्यकाल का इतिहास फिर से सजीव हो उठता है।

इस गूढ़ स्थान के इस माहात्म्य को पहचानकर ही किसी योगविद्या के उपासक के समीप की टेकरी पर चौंसठ योगिनियों का मन्दिर बनवाया होगा और उनके चक्र के बीच नंदी पर विराजित शिव-पर्वती की स्थापना की होगी। इन योगिनियों की मूर्तियां देखकर भारतीय स्थापत्य के सामने मस्तक नत हो जाता है और ऐसी मूर्तियों को खंडित करनेवालों की धर्मान्धता के प्रति ग्लानि पैदा होती है। मगर हमें तो खंडित मूर्तियों को देखने की आदत सदियों से पड़ी हुई है !

धुआंधार प्रकृति का एक स्वतन्त्र काव्य है। पानी को यदि जीवन कहें तो अधःपात के कारण खंड-खंड होने के बाद भी

अनायास पूर्वरूप धारण करता है और शान्ति के साथ आगे बहता है, वह सचमुच जीवनतम कहा जायगा। चौमासे में जब सारा प्रदेश जलमग्न हो जाता है, तब वहां न तो होती है धार और न होता है उसमें से निकलनेवाला ठंडी भाप के जैसा 'धुंआ'। चौमासे के बाद ही धुआंधार की मस्ती देख लीजिए। प्रपात की ओर टकटकी लगाकर ध्यान करना मुझे पसन्द नहीं है, क्योंकि प्रपात की एक नशीली वस्तु है। इस प्रपाप में जब धोबीघाट पर के साबुन के पानी के जैसी आकृतियां दिखाई देती हैं और आसपास ठंडी भाप के बादल खेल खेलते हैं, तब जितना देखते हैं उतनी चित्तवृत्ति अस्वस्थ होती जाती है। यह दृश्य मन भरकर देखने के बाद वापस लौटते समय लगता है, मानो जीवन के किसी कठिन प्रसंग में से हम बाहर आये हैं और इतने अनुभव के बाद पहले के जैसे नहीं रहे हैं। इटारसी-होशंगाबाद के समीप की नर्मदा बिलकुल अलग ही प्रकार की है। वहां के पत्थर जमीन में तिरछे गड़े हुए हैं। किस भूकम्प के कारण इन पत्थरों के स्तर ऐसे विषम हो गये हैं, कोई नहीं बता सकता। नर्मदा के किनारे भगवान की आकृति धारण करके बैठे हुए पाषाण भी इस विषय में कुछ नहीं बता सकते।

और वही नर्मदा जब शिरोवेष्टन साफे के समान लम्बे किन्तु कम चौड़े भड़ौंस के किनारे को धो डालती है और अंकलेश्वर के खलासियों को खिलाती है, तब वह बिलकुल निराली ही होती है। कबीरबड़ के पास अपनी गोद में एक टापू की परिवरिश करने का आनन्द एक बार मिला, वह सागर संगम के समय भी इसी तरह के एक या अनेक टापू-बच्चों की परिवरिश करे, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? कबीरबड़ हिन्दुस्तान के अनेक आश्चर्यों में से एक है। लाखों लोग जिसकी छाया में बैठ सकते हैं और बड़ी-बड़ी फौजें जिसकी छाया में पड़ाव डाल सकती हैं, ऐसा एक वटवृक्ष नर्मदा के प्रवाह के बीचोंबीच एक टापू में पुराण-पुरुष की तरह अनन्त काल की प्रतीक्षा कर रहा है। जब बाढ़ आती है, तब उसमें टापू का एकाध हिस्सा बह जाता है, और उसके साथ इस वट-वृक्ष की अनेक शाखाएं तथा उनपर से लटकने वाली जड़ें भी बह जाती हैं। अब तक कबीरबड़ के ऐसे बंटवारे कितनी बार हुए, इतिहास के पास इसकी सूची नहीं है। नदी बहती जाती है, और बड़ की नई-नई पत्तियां फूटती जाती हैं।

सनातन काल वृद्ध भी है और बालक भी है। वह त्रिकालज्ञानी भी है और विस्मरणशील भी है। इस काल- भगवान का और कालातीत परमात्मा का अखंड ध्यान करनेवाले ऋषि-मुनि और सन्त महात्मा जिसके किनारे युग-युग से बसते आये हैं, वह आर्य-अनार्य सबकी माता नर्मदा भूत, भविष्य, वर्तमान के मानवों का कल्याण करे। जय नर्मदा, तेरी जय हो! □□

(साभार - काका सा. कालेलकर द्वारा लिखित सप्त सरिता पुस्तक से)

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय □ कृषि □ नौकरी □ विद्यार्थी □ संगठन □

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)

Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

सामुदायिक रेडियो स्टेशन
(Community Radio Station)

नर्मदा सहित समस्त नदियों पर एकाग्र कार्य करने हेतु ''नर्मदा समग्र'' एक सुप्रतिष्ठित एवं समादृत संस्था है जिसे स्व. अनिल माधव दवे एवं स्व. अमृतलाल वेगड़ का मणि कांचन नेतृत्व प्राप्त रहा है। नर्मदा समग्र को मध्यप्रदेश शासन का वर्ष 2022 का पर्यावरण एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में शीर्ष पुरस्कार ''मध्यप्रदेश गौरव सम्मान'' प्राप्त है।

नर्मदा जी में जल बढ़े और प्रदूषण घटे, इन दो आयामों पर केन्द्रित गतिविधियां संचालित होती है। नर्मदा समग्र जमीनी स्तर पर विभिन्न मंचों, गतिविधियों के माध्यम से नर्मदा जी के जलग्रहण क्षेत्र व पर्यावरण के सम्बन्ध में जागरूकता निर्माण का काम करता है।

इन्हीं गतिवितिधयों को आगे बढ़ाने विशेषकर पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली, प्राकृतिक कृषि, नदी पारिस्थितिकी तंत्र, नर्मदा किनारे का समाज और संस्कृति इत्यादि विषयों को जन-जन तक ले जाने, जागरूकता बढ़ाने और नदी संरक्षण एवं स्वस्थ जलग्रहण के लिए सहभागिता बढ़ाने हेतु नर्मदा समग्र का सामुदायिक रेडियो स्टेशन (Community Radio Station) ''रेडियो रेवा'' का जबलपुर में प्रसारण प्रारंभ हो चुका है।विगत 15 वर्षों से नर्मदा समग्र द्वारा नर्मदा जी के स्वस्थ जलग्रहण हेतु किए जा रहे प्रयासों को और नदी के विभिन्न पहलुओं को नये स्वरूप में 'रेवा रेडियो' के माध्यम से समाज के बीच लाने की यह एक पहल है।

रेवा रेडियो के माध्यम से नर्मदा किनारे का समाज और संस्कृति को केंद्र में रख कर और स्वस्थ नदी पारिस्थितिकी तंत्र हेतु जान जागरूकता एवं जन सहभागिता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रम आयोजित एवं प्रसारित किए जाएँगे।विभिन्न चरणों में नर्मदा किनारे बसे समुदायों को चिन्हित कर व्यक्तिगत व सामूहिक चर्चाओं के माध्यम से स्थानीय लोक परम्पराओं, जैव विविधता, गीत-संगीत, कृषि देशज, खाद्यान्न व जल संरक्षण की परम्पराओं को संकलित करना। विशिष्ट स्थलों के इतिहास व उनसे जुड़ी विभिन्न कथा/कहानियों व तथ्यों को एकत्रित करना एवं संगोष्ठियों, सम्मेलनों, यात्राओं के माध्यम से नर्मदा संरक्षण व देशज ज्ञान के प्रति वातावरण निर्माण करना। इन कार्यक्रमों में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति की सेवा में जुटें व्यक्तियों/संस्थाओं से संवाद, नर्मदा नदी के किनारों पर होने वाली गतिविधियों के समाचार और बच्चों, युवाओं, महिलाओं को ध्यान में रखते हुए भी कार्यक्रम प्रसारित किये जायेंगे।

सामुदायिक रेडियो केंद्र, "रेवा रेडियो" के मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्य रहेंगे -

- नदी-पानी, स्वच्छता, स्वास्थ्य, जीवनशैली, पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर जागरूकता एवं जन-भागीदारी बढ़ाना;
- नर्मदा किनारे की लोक कलाओं का दस्तावेजीकरण और उन्हें आमजन से अवगत करवाना;
- बच्चों एवं किशोर-किशोरियों के लिए story telling के माध्यम से लोक कलाओं को उजागर करना;
- युवाओं को नर्मदा संरक्षण हेतु प्रेरित करना व विविध नवाचारों से जोड़ते हुए नर्मदा के प्रति समग्र दृष्टिकोण विकसित करना;
- नर्मदा के संबंध में वैज्ञानिक दृष्टि का विकास एवं लोक कलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक पक्ष पर विशेषज्ञों से चर्चा;
- समय-समय पर विभिन्न विधाओं के कलाकारों को कार्यक्रमों के माध्यम से मंच प्रदान करना;
- शासकीय लाभप्रद योजनाओं की जानकारी सामान्य जनता तक पहुंचाना।

सामुदायिक रेडियो स्टेशन की विशेषताएँ -

- स्थानीय सूचना का माध्यम एवं कई स्थान पर विशेष कर ग्रामीण अंचलों में प्रिंट मीडिया के मुकाबले रेडियो ज़्यादा सुना जाता है;
- लोगों को संवाद करने और अपनी आवाज़ में बात रखने का मौका मिलता है, संवाद कार्यक्रमों से अथवा किन्हीं विशेष मुद्दों पर विषय विशेषज्ञों की राय अधिकतम लोगों तक, कम समय में पहुँचायी जा सकती है;
- सरकार की सूचनाओं और योजनाओं को जन-सामान्य तक पहुँचाने के सुलभ माध्यम।

रेडियो रेवा
'उद्योग भवन', पाँचवी मंजिल
एम.सी.आई. कॉलोनी, कटंगा, जबलपुर, म.प्र. - 482001
दूरभाष : + 91 761 2998544
ईमेल - radiorewa90.8@gmail.com

90.8 FM
रेडियो रेवा

RADIO REWA
(COMMUNITY RADIO STATION)
@ JABALPUR

WE ARE LOOKING FOR

- VOICE OVER ARTIST
- STORYTELLERS
- SINGERS
- MUSICIAN & BANDS
- SCRIPT WRITERS
- SOUND RECORDER AND EDITOR

नर्मदा समग्र

0755-2460754, 9899023967 NARMADA.MEDIA@GMAIL.COM

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित। संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754